01

بسم الله الرحيم الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على اله و ازواجه و اصحابه اجمعين الى يوم الدين

Research Paper 5b

10 محرم الحرام 1441ھ

10 September 2019

फ़िर्क़ा वारियत की लाअनत और मस्लक परस्ती की नहूस्त से बच कर क़ुरआन -ए- हक़ीम, सहीह इस्नाद अहादीस और इज्माअ-ए-उम्मत को हुज्जत व दलील बनाता हुआ तारीख़ की झूठी, बे-सनद और ज़ईफ़ुल इस्नाद रिवायात से महफ़ूज़ और 72 शुहदाए करबला से इज़्हार अक़ीदत पर मुश्तमिल तहक़ीक़ी मक़ाला |

वाक़िया कर्बला का हक़ीक़ी पसमंज़र 72- सहीहुल अस्नाद अहादीस की रौशनी में

कुल 200 अहादीस अह्ले सुन्नत की मुस्तनद किताबों से हैं। और उनके नम्बर्ज़ उलमा-ए-हरमैन, बैरूत और दारुस्सलाम की इंटरनेश्नल नंबरिंग के ऐन मुताबिक़ हैं।

मेरे मुसलमान भाईयों! शैतानी वसवसों के बावजूद अपनी मौत से पहले पहले सिर्फ़ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आख़िर लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!

अल्लाह ﷻ का फ़रमान

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ [سُورةُ البقرة: 159 اور 160

तर्जुमा: "बेशक जो लोग हमारी नाज़िल की हुई वाज़ेह आयात और रहनुमाई की बातों को छुपाते हैं जबकी हमने तो किताब में उसे लोगों के लिए ख़ूब ब्यान कर दिया, तो उन्ही लोगों पर अल्लाह तआला की लाअनत और तमाम लाअनत करने वालों की लाअनत है। सिवाए उन लोगों के जिन्होंने तौबा कर ली और अपनी इस्लाह भी कर ली और उस (छुपाए हुए इल्म) को बयाँ भी कर दिया, तो मैं भी उन पर महरबान हो जाऊंगा और मैं बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला और बहुत महरबान हूं।" [सूरहतुल बक़रह : 159 और 160]

रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ سُئِلَ عَنْ عِلْمٍ عَلِمَهُ ثُمَّ كَتَمَهُ أُلْجِمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِلِجَامٍ مِنْ نَارٍ

तर्जुमा: सय्यिदना अबुहुरैरा ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "जिस शख़्स से कोई इल्म की बात पूछी गई जो उस शख़्स को मालूम थी फिर भी उसने उस (इल्म की बात) को छुपा लिया तो ऐसे शख़्स को क़यामत के दिन (अल्लाह तआला की तरफ़ से सज़ा के तौर पे) आग की लगाम डाली जाएगी। **(नाऊज़ु बिल्लाही मिन ज़ालिक)**"

{जामिया त्रिमिज़ी 2649, सुनन अबु दाऊद 3658, सुनन इब्ने माजा 261, मिश्कात-उल-मसाबिह 223 इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है}

सलफ़ का फ़हम इमाम मुस्लिम बिन हुज्जाज رحمه الله (अलमुतवफ़्फ़ा 261 हिजरी) अपनी शोहरा आफ़ाक़ किताब "सहीह मुस्लिम शरीफ़" को तालीफ़ फ़रमाने की हिकमत लिखते हैं: "(ऐ मेरे शागिर्द !) जब तुमने मुझसे इस अज़ीम काम की फ़रमाइश की (यानी सहीह मुस्लिम की तालीफ़) तो मैंने सोचा कि अगर मैं इसका इरादा कर लूँ और ये काम पाया ए तक्मील को पहुंच जाए (यानी पूर्ण हो जाये) तो इस का फ़ायदा सबसे पहले बतौरे ख़ास मुझे ही हासिल होगा, इसके असबाब बहुत हैं मगर उनके ज़िक्र से (ये तम्हीदी) गुफ़्तगू लम्बी हो जाएगी। मुख़्तसर ये कि इस पुख़्ता तरीक़े से थोड़ी मिक़्दार में रिवायात को तहक़ीक़ के साथ मुरततब करना ज़्यादा आसान और मुफ़ीद है बजाए बहुत ज़्यादा रिवायात जमा करने के, बतौरे ख़ास आम इंसानों के लिए कि जिन्हें अहादीस (के सहीह या ज़ईफ़ होने) की पहचान नहीं होती जब तक उनकी रहनुमाई कोई दूसरा ना कर दे। जब ऐसी सूरत ए हाल हो जो हमने बयान की, थोड़ी तादाद में सहीह अहादीस का जमा कर देना, ज़्यादा मिक़्दार में ग़ैर-मुस्तनद रिवायात को जमा करने से ज़्यादा नफ़ा बख़्श होगा।"

सहीह मुस्लिम : अल मुक़द्दमा

A मन्हज नबवी ﷺ पर क़ाइम ख़िलाफ़त राशिदा की सहीह मुद्दत कितनी थी ? और ख़िलाफ़त राशिदा के अह्ल हक़ीक़ी ख़ुल्फ़ाए राशिदीन ؓ कौन थे ?

01 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबुमूसा अशअरी ؓ बयान करते हैं कि एक दिन हमने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मग़रिब की नमाज़ अदा की, फिर हम ने सोचा कि यहीं बैठे रहें कि इशा की नमाज़ भी रसूलुल्लाह ﷺ के साथ पढ़ ले (तो बेहतर होगा) चुनाचे हम वही बैठे रहे, इस दौरान रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाये, आप ﷺ ने पूछा, तुम उस वक़्त से यही (बैठे) हो? हम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! हमने आप ﷺ के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, फिर सोचा यही

बैठे रहते हैं ताकि आपﷺ के साथ इशा की नमाज़ भी पढ़ लें। आपﷺ ने फ़रमाया "तुमने अच्छा काम किया " फिर आपﷺ ने सिर मुबारक आसमान की तरफ़ उठाया और अक्सर आपﷺ अपना सिर मुबारक आसमान की तरफ़ उठाया करते थे, फिर आपﷺ ने फ़रमाया: "सितारे आसमान के लिए अमन के बाईस हैं, जब सितारे चले जाएंगे तो आसमान पर वो वक़्त आ जाएगा जिसका वादा है (यानी फ़ना), और मैं अपने सहाबा رضی اللہ عنہم के लिए अमन का बाईस हूँ, जब मैं रुख़सत हो गया तो मेरे सहाबा رضی اللہ عنہم पर वो चीज़ आएगी जिसका उन से वादा किया गया है (यानी फितन व मसाइब), और मेरे सहाबा رضی اللہ عنہم मेरी उम्मत के लिए बाईस ए अमन हैं, जब मेरे सहाबा رضی اللہ عنہم रुख़्सत हो जाएंगे तो मेरी उम्मत पर वो चीज़ आ जाएगी जिस (फितन व मसाइब) का उनसे वादा किया गया है।" सहीह मुस्लिम 6466

02 **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना नोमान बिन बशीर رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ के राज़दार सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: मुझे उमरा (हुक्मरानों) के बारे में आपﷺ का ख़ुतबा (भाषण) याद है कि रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "तुम में नबुवत बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर जब चाहेगा, उसे उठा लेगा, फिर नबुवत की तर्ज़ पर ख़िलाफ़त होगी, जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर जब चाहेगा उसे भी उठा लेगा, फिर काट खाने वाली बादशाहत होगी, जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर जब चाहेगा उसे भी उठा लेगा, फिर जाबराना बादशाहत होगी, जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर जब अल्लाह तआला चाहेगा उसे भी उठा लेगा, फिर नबुवत की तर्ज़ पर ख़िलाफ़त होगी (यानी कुर्ब क़यामत से पहले इमाम मेहदी علیہ السلام की ख़िलाफ़त ए राशिदा)। फिर इसके बाद आपﷺ ख़ामोश हो गए।" **मुसनद अहमद ही की एक हदीस में है:** सय्यिदना सईद बिन जहमान ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि मुझ से सय्यिदना सफीना رضی اللہ عنہ ने हदीस बयान की, कि रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "खिलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर उसके बाद मलूकियत (बादशाहत) हो जाएगी।" **सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना सईद ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि रसूलुल्लाहﷺ के आज़ाद किये हुए गुलाम सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मेरी उम्मत में ख़िलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर उसके बाद मलूकियत (बादशाहत) हो जाएगी"। फिर सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने मुझ से फ़रमाया: "जब हमने शुमार किया तो सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ , सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ , सयिद्दना उस्मान رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ को पाया (यानी हमने इन ख़ुलफ़ा राशिदीन की कुल मुद्दत ए ख़िलाफ़त को 30 साल ही पाया)। **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है कि** सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने फ़रमाया :"नबुवत की तर्ज़ पर ख़िलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर अल्लाह तआला जिसे चाहेगा हकूमत देगा।" सईद ताबई رحمہ اللہ कहते हैं कि फिर सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने मुझ से फ़रमाया: सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ के 2 साल, सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ के 10 साल, सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ के 12 साल और इसी तरह सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ के 6 साल भी शुमार कर लो (ये कुल तीस साल पूरे हुए)। सईद ताबई رحمہ اللہ कहते हैं कि मैंने सय्यिदना सफ़ीना से अर्ज़ किया कि ये लोग (यानी बनू उमय्या) तो समझते हैं कि सय्यिदना अली علیہ السلام ख़लीफ़ा (बरहक़) नहीं थे! (नोट: सय्यिदना अली के साथ علیہ السلام ख़ुद इमाम अबुदाऊद رحمہ اللہ ने लिखा है) सय्यिदना सफ़ीना ने (गुस्से की हालत में) फ़रमाया: "बनू ज़ुर्का (नीली आंखों वाले) बनू मरवान की पीठ ने झूठ बोला है।" **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने बयान किया कि रसूलुल्लाहﷺ ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में ख़िलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर इसके बाद बादशाहत होगी।" फिर सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त और सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त और सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त और फिर फ़रमाया सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त भी शुमार करो, हमने ये तमाम मुद्दत कुल 30 साल ही पाई है।" सईद ताबई رحمہ اللہ फ़रमाते हैं कि मैंने सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ से अर्ज़ किया कि बनू उमय्या के लोग तो समझते हैं कि ख़िलाफ़त तो उनमें है, तो सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने (इन्तिहाई गुस्से में) फ़रमाया: "ये बनू ज़ुर्का (नीली आंखों वाले यानी बनू उमया और बनू मरवान के लोग) बिल्कुल झूठ बोलते हैं बल्कि (हक़ तो यह है कि) वो तो शरीर तरीन हकूमत करने वाली एक मलूकियत (बादशाहत) हैं।" **मुसनद अबुदाऊद अत तयालसी की हदीस में है:** सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने हमें ख़ुत्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया: "मेरी उम्मत में ख़िलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर उसके बाद मलूकियत (बादशाहत) हो जाएगी।" फिर सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने सईद ताबई رحمہ اللہ से फ़रमाया: "तुम शुमार कर लो सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ और सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त 12 साल और 6 माह थी और सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त 12 साल थी और फिर सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त ने (सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ के 6 माह भी शामिल करने से) 30 साल पुरे कर दिए।" सईद رحمہ اللہ का बयान है कि मैंने सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ से अर्ज़ किया: फिर हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ की हुकूमत क्या हुई ? सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "वह (यानी हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ख़लीफ़ा राशिद नहीं बल्कि मुसलमानों के) बादशाहों में से पहले (बादशाह) थे।" **मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा की हदीस में है:** सय्यिद्ना सईद तबई رحمہ اللہ बयान करते है कि मैंने सय्यिद्ना सफीना رضی اللہ عنہ से अर्ज़ किया कि बनु उमय्या के लोग तो दावा करते है कि खिलाफत उन में है | सय्यिद्ना सफीना رضی اللہ عنہ ने मुझसे फ़रमाया: बनू ज़ुर्का (नीली आँखों वालों) ने झूट बोला है, बल्कि वह तो ग़ैर बादशाहों में से है और उनके पहले बादशाह हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ है" |

{मुसनद अहमद 18596 (जिल्द 8, पेज 116) इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है |
मिश्कात-उल-मसाबिह 5378, सुनन नसाई-अल-कुबरा 8155, सुनन अबु दाऊद 4646, जामिया त्रिमिज़ी 2226, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है |
सिलसिला-तुस-सहीह 459, मुसनद अबु दाऊद-अत-त्यालसी 1203, (जिल्द 2, पेज 102) इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने सहीह कहा और अपने रिसाला अल-सुन्नह पेज 16 में दर्ज़ किया |
मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा 37157, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई और शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है }

03 **सहीह मुस्लिम की हदीस है:** सय्यिदना मअदान बिन अबि-तलहा ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ ने जुमा का ख़ुत्बा दिया और उसमें रसूलुल्लाह ﷺ और सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ का ज़िक्र ए खैर फ़रमाया। फिर सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ ने इरशाद फ़रमाया: "बेशक़ मैंने ख़्वाब में देखा कि एक मुर्ग़े ने मुझे तीन ठोंके मारीं हैं और मैं (उसकी ताबीर) ये समझता हूँ कि मेरी मौत का वक़्त क़रीब आ चुका है। बाज़ लोग मुझे ये मशवरा दे रहे हैं कि मैं अपना जाँनशीन (उत्तराधिकारी) मुक़र्रर कर दूं लेकिन (मैं ऐसा कोई इरादा नहीं रखता क्योंकि) अल्लाह तआला अपने दीन को बर्बाद नहीं होने देगा न ही अपनी ख़िलाफ़त को और न ही उस (हिदायत) को जिसे उसने अपने रसूल ﷺ को देकर भेजा है। अगर मेरी मौत जल्दी हो जाए तो (मेरा ये हुक्म है कि) ख़िलाफ़त का फ़ैसला उन 6 अफ़राद में ही तय पाए जिनसे रसूलुल्लाह ﷺ अपनी वफ़ात तक राज़ी थे। (नोट: उन छह अफ़राद के नाम सहीह बुख़ारी की अगली हदीस में आ रहे हैं) और मुझे ख़ूब मालूम है कि बाज़ लोग इस अम्री ख़िलाफ़त में तान करेंगे और ये वही लोग हैं जिन्हें मैंने इस्लाम की ख़ातिर (उनके इस्लाम कुबूल करने से पहले) अपने इन हाथों से मारा भी है। (नोट: फ़तह मक्का पर माफ़ी मांग के इस्लाम में दाख़िल होने वाले इन्हीं लोगों से मुतालिक हक़ाइक़ इस तहक़ीक़ी मक़ाला की अगली अहादीस में आ रहे हैं) पस अगर वह लोग वाक़ई ऐसा करें (यानी ख़िलाफ़त में तान करें) तो जान लेना कि वो अल्लाह तआला के दुश्मन और काफ़िर गुमराह हैं___" **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अम्रो बिन मौमून ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि जिस ज़ख्म में सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ की शहादत हुई, आप رضی اللہ عنہ को दूध पेश किया गया, आप رضی اللہ عنہ ने पिया मगर वो आप رضی اللہ عنہ के ज़ख्म से बह निकला तो लोगों को यक़ीन हो गया कि आप رضی اللہ عنہ इस ज़ख्म से ज़िंदा नहीं बच पाएंगे, तो लोग आप رضی اللہ عنہ के गिर्द जमा हो गए ..... चुनांचे लोगों ने दर्ख़वास्त की कि अमीरुल मोमिनीन! अपने बाद अपने जाँनशीन (उत्तराधिकारी) की वसीयत फ़रमा दीजिए, आप رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया, "मैं अपने बाद इन 6 अफ़राद से बढ़कर इस मामले (ख़िलाफ़त) का किसी और को हक़दार नहीं समझता, जिन से नबी ﷺ अपनी वफ़ात तक राज़ी थे।" फिर आप رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ ,सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ ,सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ ,सय्यिदना तलहा رضی اللہ عنہ ,सय्यिदना साद رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضی اللہ عنہ के नाम लिए और फिर (अपने बेटे की दिलजोई के लिए) फ़रमाया कि इन 6 अफ़राद के साथ सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ भी (मशावरत में) मौजूद होगा, लेकिन ख़िलाफ़त (के उम्मीदवारों) में उसका कोई हिस्सा नहीं होगा।".....फिर मज़ीद फ़रमाया: "मैं अपने बाद वाले ख़लीफ़ा को वसीयत करता हूँ कि वो मुहाजरीन ए अव्वल का ख़्याल रखे, उन के हुक़ूक़ और एहतराम को मलहूज़ ए ख़ातिर रखे और मैं उसे अन्सार के बारे में भी हिदायत करता हूँ कि वो उन से हुस्ने सुलूक करे क्योंकि ये वो लोग हैं जिन्होंने बहुत पहले अहले ईमान को पनाह दी थी। उनकी अच्छाइयों की पज़ीराई की जाए और कोताहियों से सरफ ए नज़र की जाए और मैं तमाम ख़िलाफ़ते इस्लामिया के मुताल्लिक़ भी हुस्ने सुलूक की वसीयत करता हूँ कि नौ मुस्लिम रिआया (प्रजा) इस्लाम के मददगार और बैतुल माल की आमदन और दुश्मन पर रौब का वसीला हैं लिहाज़ा उन से उनकी रज़ामंदी के साथ ही उनका फ़ालतू माल (बैतुल माल के लिए) लिया जाए, और मैं उस (नए ख़लीफ़ा) को बद्दू लोगों से मुताल्लिक़ भी अच्छे बर्ताव की वसीयत करता हूँ क्योंकि ये लोग अरब की जड़ हैं और इस्लाम उन्ही से फैला है, मैं हिदायत करता हूं कि उनसे (ज़कात की वसूली में) घटिया माल लिया जाए और उन्ही के मुस्तहक़ीन में तकसीम किया जाए, मैं उस (नए ख़लीफ़ा) को वसीयत करता हूँ कि वो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ के आइद करदा ज़िम्मा का पास रखे और अवाम के हक़ूक़ की पूरी अदाइगी करे और अवाम की ताक़त से बढ़कर उन पर बोझ ना डाले।"

सहीह बुखारी 3700, सहीह मुस्लिम 1258

नोट उन 6 अफ़राद में 4 अफ़राद: सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ, सय्यिदना तलहा رضی اللہ عنہ, सय्यिदना साद رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضی اللہ عنہ ख़ुद ही दस्तबर्दार हो गए फिर उन्होंने ही ने बाक़ी बच जाने वाले सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ और सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ में से सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ को ख़लीफ़ा मुन्तख़िब कर लिया और सबसे पहले सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ ने ही सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ की बैअत की। लिहाज़ा सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ की शहादत के बाद सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ से बढ़कर कोई भी शख़्स ख़िलाफ़त का हक़दार नहीं था इसीलिए सहाबा رضی اللہ عنہم ने सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ को सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ के बाद ख़लीफ़ा चुन लिया था : सहीह बुखारी 3700 और 7207

04 **सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि मैं लोगों के हमराह सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷺ की मय्यत के पास खड़ा था कि पीछे से एक आदमी ने मेरे कंधे पर अपनी कोहनी रखी और कहा अल्लाह तआला आप (सय्यिदना उमर ﷺ) पर रहमत फ़रमाए, मुझे शुरू ही से ये उम्मीद वासिक़ थी कि अल्लाह तआला आप ﷺ को अपने दोनों साथियों (रसूलुल्लाह ﷺ और सय्यिदना अबुबकर ﷺ) के साथ इकठ्ठा फ़रमा देगा, क्योंकि मैं अकसर रसूलुल्लाह ﷺ से ये सुना करता था कि आप ﷺ फ़रमाया करते थे: "मैं और अबुबकर और उमर थे, मैं और अबुबकर और उमर ने ये किया, मैं और अबुबकर और उमर गए।" तो मैं तवक़्क़ो (आशा) रखता था कि अल्लाह तआला उमर ﷺ को उन दोनों साथियों के साथ (मौत के बाद भी) इकठ्ठा फ़रमा देगा, सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ का बयान है: "जब मैंने (सय्यिदना उमर ﷺ के लिए तारीफ़ी कलमात कहने वाले) उस शख़्स की तरफ़ मुड़कर देखा तो वो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷺ थे।" सहीह बुखारी 3677, सहीह मुस्लिम 6187

05 **सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ बयान करते हैं कि एक मरतबा हम सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷺ की सोहबत में बैठे थे कि आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया: फ़ितने से मुतालिक़ कोई हदीस तुम में से किसी को याद है?" सय्यिदना हुज़ैफ़ा ﷺ ने अर्ज़ किया (जी हां) आदमी को बाज़ दफ़ा अपने अहल व अयाल, माल, औलाद और पड़ोसी से फ़ितना (आज़माइश) लाहक़ होता है और नमाज़, ख़ैरात और अम्रबिलमारूफ़ व नहीअनलमुंकर (अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना) से ऐसे फ़ितने का सद्देबाब (समाधान) और इज़ाला हो जाता है। सय्यिदना उमर ﷺ ने फ़रमाया: (नहीं) मैं इस क़िस्म के फ़ितनों के बारे में नहीं पूछ रहा हूँ, बल्कि मेरा सवाल तो उस फ़ितने से मुत्तालिक़ है जो समन्दर की मौजों की तरह शदीद ठाठें मारता हुआ होगा। सय्यिदना हुज़ैफ़ा ﷺ ने अर्ज़ की: ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप ﷺ को तो उस फ़ितना से कोई ख़तरा नहीं होगा, आप ﷺ और उस (अज़ीम) फ़ितने के दर्मियान एक बंद दरवाज़ा (हाइल) है। सय्यिदना उमर ﷺ ने पूछा: वो दरवाज़ा तोड़ दिया जाएगा या खोला जाएगा? सय्यिदना हुज़ैफ़ा ﷺ ने अर्ज़ की: बल्कि उसे तोड़ दिया जाएगा। सय्यिदना उमर ﷺ ने फ़रमाया: फिर तो वो कभी भी बंद ना हो पाएगा। सय्यिदना हुज़ैफ़ा ﷺ ने अर्ज़ की: जी हां बिल्कुल! (ऐसा होगा) ताबईन कहते हैं कि हमने फिर सय्यिदना हुज़ैफ़ा ﷺ से पूछा: क्या सय्यिदना उमर ﷺ को मालूम था कि दरवाज़े से मुराद क्या चीज़ है? सय्यिदना हुज़ैफ़ा ﷺ ने फ़रमाया: हाँ! बिल्कुल उन को ऐसे ही मालूम था जैसे आज के बाद आने वाले कल का इल्म यक़ीनी होता है, क्योंकि मेनें कोई ग़लत हदीस तो उन्हें बयान नहीं की थी! ताबईन कहते हैं कि हमें जुरअत ना हुई कि हम सय्यिदना हुज़ैफ़ा ﷺ से पूछ सकें कि उस दरवाज़े से मुराद क्या चीज़ थी ? चुनाँचे हमने मसरूक़ ताबई ﷺ से कहा कि तुम पूछो तो उनके पूछने पर सय्यिदना हुज़ैफ़ा ﷺ ने फ़रमाया: "उस दरवाज़े से मुराद सय्यिदना उमर ﷺ ही तो थे। सहीह बुखारी 7096, सहीह मुस्लिम 7268

06 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि मैं (अपनी बहन) उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा हफ़्सा ﷺ के पास गया, इस हाल में कि उनके बालों से पानी टपक रहा था, मैंने उनसे अर्ज़ किया, लोगों का मामला जो सूरत इख़्तियार कर गया है, आप बाख़ूबी उससे वाकिफ़ हैं, मेरा तो कोई दख़ल इस अम्र (ख़िलाफ़त और इक़तिदार) में नहीं रह गया। उम्मुल मोमिनीन ﷺ ने फ़रमाया तुम अभी जाओ क्योंकि लोग तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं और मुझे डर है कि तुम्हारे न जाने से इन्तिशार व इफ़राक़ पैदा होगा। उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा हफ़्सा ﷺ ने बा-इस्रार उन्हें भेज कर ही छोड़ा। चुनांचे सब लोग मुतफ़र्रिक टुकड़ियों में बैठ गए तो हज़रत मुआविया बिन अबुसुफ़ियान ﷺ ने (मसअला ए तहकीम के बाद पहली दफा) वहां (मदीना शरीफ़ में) ख़ुत्बा दिया और कहा: जो कोई इस अम्र (ख़िलाफ़त व इक़तिदार) में बोलना चाहता है, तो वह ज़रा सा सिर उठा के तो दिखाए, यकीनन हम उसके और उसके बाप से भी ज़्यादा इस (ख़िलाफ़त व इक़तिदार) के मुसतहिक़ हैं (نعوذ بالله من ذلك) । हदीस के रावी हबीब बिन मुस्लिमा ताबई ﷺ ने बाद में सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से पूछा: ऐ सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ! फिर आपने उन (हज़रत मुआविया ﷺ) को कोई जवाब क्यों नहीं दिया ? सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ने फ़रमाया: मैंने इरादा किया था कि उसी वक़्त अपनी गोठ खोलूं और हज़रत मुआविया ﷺ को जवाब दूं कि इस अम्र (ख़िलाफ़त) का तुमसे बड़ा हक़दार तो वो है जिसने तुमसे और तुम्हारे बाप से इस्लाम की खातिर जंग की थी (यानी सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ या फिर ख़ुद सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ) मगर फिर मैं डर गया कि कहीं ऐसी कोई बात न कह बैठूं जिससे इन्तिशार फ़ैले और ख़ून रेज़ी हो और मेरी बात का ग़लत मतलब ही समझ लिया जाए चुनांचे मैंने अल्लाह तआला की तैयार करदा जन्नती नेमतों को अपने तसव्वुर में याद किया (और सब्र करके ख़ामोश ही रहा)। रावी हदीस हबीब मुसल्लमा ताबई ﷺ ने इस पर कहा: "सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ने (यूं ख़ामोशी इख़्तियार फरमाकर) अपनी जान भी बचा ली और अपनी इज़्ज़त को भी (फ़ितना व फ़साद से) बचा लिया।" सहीह बुखारी 4108,

07 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना मुहम्मद बिन हन्फ़िया ताबई (जो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब की दूसरी बीवी सय्यिदा हन्फ़िया के बेटे थे) बयान फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद गिरामी (अली) से पूछा कि रसूलुल्लाह के बाद (इस उम्मत के लोगों में) सबसे अफ़ज़ल शख़्सियत कौन सी हैं? तो सय्यिदना अली ने फ़रमाया सय्यिदना अबुबकर , मैंने कहा फिर उनके बाद कौन हैं ? फ़रमाया सय्यिदना उमर , फिर मुझे ख़दशा (भय) हुआ कि अब की बार पूछा तो आप सय्यिदना उस्मान का नाम लेंगे, चुनांचे मैंने कहा कि उन (सय्यिदना अबुबकर और सय्यिदना उमर) के बाद तो आप (सय्यिदना अली) ही (अफ़ज़ल) हैं? तो आप ने (इन्तहाई इंक्सारी करते हुए) फ़रमाया: "मैं तो आम मुसलमानों में से एक मुसलमान हूँ।"

सहीह बुखारी 3671

B ख़लीफ़ह राशिद के ख़िलाफ़ बग़ावत करना बिदअत है! जंग-ए-जमल, जंग-ए-सिफ़्फ़ीन और जंग-ए-नहरवान में सय्यिदना अली की हक्क़ानियत और शहादते सय्यिदना उस्मान

08 **सुनन अबुदाऊद, जामिया त्रिमिज़ी और सुनन इब्ने माजा की हदीस में है:** सय्यिदना अरबाज़ बिन सारया का बयान है कि एक रोज़ (अपनी वफ़ात से कुछ ही अर्सा क़ब्ल) रसूलुल्लाह ने हमें नमाज़ पढ़ाई और फिर हमारी तरफ़ रुख़ अनवर (चेहरा) करके बहुत ही असर अंगेज़ ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया जिस को सुनकर सहाबा की आंखें बह पड़ीं और दिल दहल गए। एक शख़्स ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल हमें यूं लगता है गोया कि ये आप का आख़िरी वाज़ व नसीहत है! लिहाज़ा आप हमें कोई वसीयत फ़रमाइए! तो आप ने इरशाद फ़रमाया: "मैं तुम्हें अल्लाह तआला से डरते रहने और (अपने बाद के हुक्मरानों की) बात सुनने और इताअत करने की वसीयत करता हूँ ख़्वाह वो कोई हब्शी ग़ुलाम ही क्यों ना हो। तुम में जो भी मेरे बाद ज़िंदा रहा तो वो बहुत ही इख़्तिलाफ़ देखेगा, देखना उस (इख़्तिलाफ़ के वक़्त) तुम मेरी सुन्नत और रास्तबाज़ और हिदायत याफ़्ता ख़ुलफ़ा की सुन्नत पर कारबंद रहना, और उन को ख़ूब मज़बूती से थाम लेना कि छूटने ना पाएं और (दीन में) किसी नए काम को जारी करने से बाज़ रहना क्योंकि ये बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।" **सुनन नसाई की हदीस में ये अल्फ़ाज़ मौजूद हैं:** "और हर गुमराही (उसी बिदअती को) दोज़ख़ में ले कर जाने वाली है।"

सुनन अबु दाऊद 4607, जामिया त्रिमिज़ी 2676, सुनन इब्ने माजा 42, सुनन नसाई 1579 इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , और शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है ।

09 **मुसनद अहमद, अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम और सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी बयान फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह के इन्तिज़ार में बैठे हुए थे कि आप अपनी किसी अहलिया मुहतरमा के घर से तशरीफ़ ले आए, फिर हम भी आप के हमराह हो लिए, इसी दौरान आप का जूता मुबारक टूट गया, तो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब उस मुबारक जूते को मरम्मत करने की वजह से पीछे रह गए और हम रसूलुल्लाह के हमराह चलते रहे यहां तक कि आप सय्यिदना अली के इंतज़ार में रुक गए और हम भी ठहर गए। वहां आप ने इरशाद फ़रमाया: "तुम में एक ऐसा (ख़ुशनसीब) शख़्स भी है कि जो कुरआन हकीम की तफ़्सीर की ख़ातिर (मुसलमानों से) क़िताल करेगा जैसा कि मुझे कुरआन हकीम की तंज़ील (यानी हक़क़ानियत) की ख़ातिर (कुफ़्फ़ार से) क़िताल करना पड़ा।" ये सुनकर हम सब शौक़ से आप की तरफ़ मुतवज्ज हुए (इस उम्मीद से शायद मैं ही वो ख़ुशनसीब शख़्स हूँ) और उस वक़्त हमारे दरमियान सय्यिदना अबुबकर और सय्यिदना उमर भी मौजूद थे, सय्यिदना अबुबकर ने अर्ज़ किया क्या मैं हूँ वो ? आप ने फ़रमाया: "नहीं"। सय्यिदना उमर ने अर्ज़ कि क्या मैं हूँ वो? आप ने फ़रमाया, "नहीं (तुम में से कोई भी ऐसा शख़्स नहीं) बल्कि वो (ख़ुशनसीब) तो मेरे जूते गांठने वाला शख़्स है (यानी सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब)। चुनांचे हम सब सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब के पास आए ताकि उन्हें ये बशारत दें। सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी फ़रमाते हैं: "(ये बशारत सुनने के बाद) सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब का रद्दे अमल (प्रतिक्रिया) ऐसा था गोया कि वो पहले ही से इस बशारत को जानते थे।"

मुसनद अहमद 11309 (जिल्द 5, पेज 103) और 11795 (जिल्द 5, पेज 247) इस हदीस को शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है
अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4621, इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने सहीह कहा है
सुनन नसाई-अल-कुबरा 8457 इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने किताब खासाइस-ए-अली में सहीह कहा है

10 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अल्क़मा ताबई का बयान है वो मुल्क शाम गए तो वहां मस्जिद में दाख़िल हो कर दुआ की कि ऐ अल्लाह मुझे यहां कोई नेक हम नशीन अता फ़रमा। चुनांचे (दुआ की क़बूलियत हुई और) उनको सय्यिदना अबुदर्दा की सोहबत नसीब हुई। उन्होंने अल्क़मा ताबई से पूछा कि तुम किस इलाक़े से हो? मैंने अर्ज़ की कि शहर कूफ़ा से आया हूँ, उन्होंने फ़रमाया :क्या तुममें सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद मौजूद नहीं हैं, जो सफ़र व हज़र में रसूलुल्लाह की जूतियाँ और सामान

उठाया करते थे? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ! फिर फ़रमाया: क्या तुम में सय्यिदना हुज़ैफा ﷺ मौजूद नहीं हैं कि जिन्हें रसूलुल्लाह ﷺ के ख़ास राज़ मालूम हैं जिन्हें उनके सिवा कोई और नहीं जानता? मैंने अर्ज़ किया हां ! फिर फ़रमाया: क्या तुम (अहले कूफ़ा) में सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ जैसी शख़्सियत मौजूद नहीं जिन्हें अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ की मुबारक ज़ुबान के ज़रिये शैतान से पनाह अता फ़रमाई है? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ!(यानी सय्यिदना अबुदर्दा ﷺ ने अलक़मा ताबई को नसीहत फरमाई कि कूफ़ा में इतने बड़े असहाब ए रसूल ﷺ के होते हुए शाम का सफ़र इख़्तियार करने की ज़रुरत नहीं।) सहीह बुखारी 3743

11 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु मरयम असदी ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि जब सय्यिदना तलहा ﷺ, सय्यिदना ज़ुबैर ﷺ और उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ बसरा की तरफ़ (जंगे जमल के लिए) रवाना हुए तो सय्यिदना अली ﷺ ने सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ और अपने बेटे सय्यिदना हसन ﷺ को हमारे पास कूफ़ा रवाना फ़रमाया (ताकि वहां से फ़ौजी मदद हासिल कर सकें) । तो वो दोनों मिम्बर पर चढ़े, सय्यिदना हसन ﷺ मिम्बर के ऊपर वाले हिस्से पे तशरीफ़ फ़रमा हुए और सय्यिदना अम्मार ﷺ नीचे वाले हिस्से पर खड़े हुए। हम सब उनकी बात सुनने के लिए इकठ्ठे हुए। सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ ने फ़रमाया: उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ (लश्कर लेकर मक्का मुकर्रमा से) बसरा रवाना हो चुकी हैं, अल्लाह तआला की क़सम! वो दुनिया और आख़िरत में रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ौजा मोहतरमा हैं, मगर (इस वक़्त) अल्लाह तआला तुम्हारा इम्तिहान फ़रमाना चाहता है कि तुम (ख़लीफ़ा राशिद की इताअत करने के सबब से) अल्लाह तआला की इताअत करते हो या फिर सय्यिदा आयशा ﷺ की पैरवी करते हो ? **सहीह बुखारी की हदीस है:** सय्यिदना अबुबकरा ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि जमल की जंग के दिनों में अल्लाह तआला ने मुझे रसूलुल्लाह ﷺ के एक फ़रमान मुबारक ने बहुत फ़ायदा पहुंचाया जबकि मैं (सय्यिदना अली ﷺ के ख़िलाफ़) जमल वालों के साथ (सय्यिदा आयशा ﷺ के लश्कर में) शरीक होने ही वाला था कि उनकी हिमायत में क़िताल करूँ (मगर मुझे फ़रमान ए नबवी याद आ गया कि) रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया था "वो क़ौम कभी भी फ़लाह (कामयाबी) हासिल नहीं कर सकती जो अपना सरबराह (नेता) किसी औरत को बना ले।" सहीह बुखारी 7100 और 4425

12 **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना क़ैस ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि जब उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ अपने लश्कर के साथ बनूआमिर के घाट पर पहुंचीं तो वहां कुत्ते भौंकने लगे, तो आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया: ये कौन सा चश्मा (जिस जगह से ज़मीन से पानी निकलता है) है? जवाब मिला कि ये चश्मा हौअब्ब है ! ये सुनकर आप ﷺ ने फ़रमाया: फिर तो मैं ज़रूर वापस ही जाऊंगी। इस फ़ैसले पर सय्यिदना ज़ुबैर ﷺ ने मशवरा दिया कि नहीं बल्कि हमें आगे बढ़ना चाहिए ताकि आप ﷺ को देखकर मुसलमानों में इत्तिहाद की कोई राह निकल सके (और वो फ़ित्ना व इंतिशार ख़त्म हो जाए जो सय्यिदना उस्मान ﷺ की शहादत के बाद से जन्म ले चुका था) । उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ ने फ़रमाया कि एक दिन मुझसे रसूलुल्लाह ﷺ ने (ये ग़ैबी ख़बर देते हुए बड़े अफ़सोस की हालत में) इरशाद फ़रमाया था: "तुम (अज़वाजे मुतहरात यानी पवित्र पत्निया رضی اللہ عنہن) में से किसी एक (ज़ौजा मुतहरा अर्थात पवित्र पत्नी ﷺ) की हालत उस वक़्त कैसी होगी, जबकि उस पर (मक़ामे) हौअब्ब के कुत्ते भौंकेंगे।" **मुसनद अहमद और मजमउज़्ज़वाइद की हदीस में है:** सय्यिदना अबुराफेअ ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ से फ़रमाया: "याद रखना ऐ अली ﷺ ! अनक़रीब तुम्हारे और आएशा ﷺ के दरमियान एक (रंजिश वाला) मामला होगा।" सय्यिदना अली ﷺ ने पूछा: क्या मेरे साथ? आप ﷺ ने फ़रमाया: "हाँ" , सय्यिदना अली ﷺ ने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह ﷺ फिर तो मैं बड़ा बदबख्त होऊंगा। आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "नहीं! बल्कि जब ऐसा होगा तो तुम उस (आएशा ﷺ) को उसकी पनाहगाह तक पहुंचा देना।" **मजमउज़्ज़वाइद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी अज़वाजे मुतहरात رضی اللہ عنہن (पवित्र पत्नियों) से इरशाद फ़रमाया: "काश मुझे मालूम हो जाता कि तुम में से मेरी कौन सी बीवी एक ऐसे ऊँट पर सवार होगी जिस (ऊँट) के चेहरे पर बहुत ज़्यादा बाल होंगे। हौअब्ब के कुत्ते निकलेंगे और उसके दाएं बाएँ बहुत ज़्यादा क़त्ल व ग़ारत होगी। और फिर वह बाल बाल बच जाएगी!" **मुहद्दिस-ए-आज़म सऊदी अरब शेख़ मुहम्मद नासिरुद्दीन अलबानी رحمہ اللہ (अल मुतवफ़्फ़ा 1420 हिजरी) इसी हदीस के तहत लिखते हैं:** इस मामले में ज़्यादा से ज़्यादा ऐतराज़ ये किया जा सकता है कि उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आएशा ﷺ को जब हौअब्ब मक़ाम के बारे में मालूम हो गया था तो उन्हें तो वापस चले जाना चाहिए था, लेकिन अहादीस में आया है कि वो वापस नहीं गईं, ये बात तो उम्मुल मोमिनीन ﷺ की शान को ज़ेबा नहीं थी। इस (इल्मी सवाल पर) हमारा जवाब ये है कि ज़रूरी नहीं कि सहाबा किराम رضی اللہ عنہم में कमाल वाली हर सिफत ही पाई जाती हो, याद रखें! लगज़िश और ग़लती से पाक सिर्फ अल्लाह तआला की ज़ात है। किसी सुन्नी मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं कि वह अपनी क़ाबिले एहतिराम हस्तियों के बारे में इतना गुलू कर ले कि इन्हें शियों की तरह मासूम इमामों की सफ़ में ला खड़ा करे (यानी अस्मते सहाबा का अक़ीदा वैसा ही बातिल अक़ीदा है जैसा शिया का अस्मते आइम्मा का अक़ीदा बातिल है।)हमें इसमें शक नहीं है कि उम्मुल मोमिनीन ﷺ का ये ख़ुरूज असल में ख़ता पर ही मबनी था, इसीलिए जब

उनको मक़ामे हौअब्ब के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ की पेशगोई के पूरे होने का मालूम हुआ तो उन्होंने वापसी का इरादा भी कर लिया था लेकिन सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ ने उन्हें ये कहकर वापसी का इरादा तर्क करने पर क़ाइल कर लिया कि शायद आप رضی اللہ عنہا की वजह से अल्लाह तआला मुसलमानों में सुलह की कोई सूरत निकाल देगा। इसमें भी शक नहीं है कि सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ भी अपने इस इज्तिहाद में ख़ता पर थे। अक़ल भी इस बात का तक़ाज़ा करती है कि उन दोनों गिरोहों में से किसी एक को ज़रूर ख़ता पर क़रार दिया जाए कि जिस वजह से मुसलमानों के दरमियान सैकड़ों हज़ारों लोगों का खून हुआ। और बेशक़ उम्मुल मोमिनीन رضی اللہ عنہا का इज्तिहाद ही इस (जंगे जमल वाले) मामले में ख़ता पर मबनी था। इसके बहुत से असबाब और वाज़ेह दलाइल मौजूद हैं। (और इसकी) एक दलील तो उन का अपने इस ख़ुरूज पर नादिम होना ही है और यही नदामत उनके फ़ज़लो कमाल को ज़ेबा भी है। उनकी ये ख़ता इज्तिहादी ख़ताओं में से एक खता थी जो कि न सिर्फ़ माफ कर दी जाती है बल्कि उस पर एक अज्र भी मिलता है।" **सहीह बुखारी की एक हदीस में है:** सय्यिदना उरवा बिन ज़ुबैर ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि सय्यिदा आएशा رضی اللہ عنہا ने (अपने भांजे) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رضی اللہ عنہ को वसीयत फ़रमाई कि मुझे उन हस्तियों (रसूलुल्लाह ﷺ और सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ और सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ के साथ दफन न करना बल्कि मुझे मेरी सौतनों (अज़वाजे मुतहरात رضی اللہ عنہن) के साथ बक़ीअ गरक़द में दफनाना, मैं इन (तीनों अज़ीम हस्तियों) के ज़रिए अपनी शान नहीं बढ़ाना चाहती ! **मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा की हदीस में है:** सय्यिदना क़ैस ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि जब उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आएशा رضی اللہ عنہا का आख़िरी वक़्त क़रीब आया तो आप رضی اللہ عنہا ने फ़रमाया: "मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की अज़वाजे मुतहरात رضی اللہ عنہن के साथ दफ़न करना क्योंकि मुझसे रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात के बाद एक नया काम सरज़द हो गया।" **मुहद्दिस ए आज़म सऊदी अरब शेख़ अलबानी رحمہ اللہ इसी हदीस के तहत लिखते हैं:** "इस नए काम से आप رضی اللہ عنہا की मुराद जमल की जंग में शिरकत करना था, क्योंकि बाद में आप رضی اللہ عنہا इस सफ़र पर बहुत शर्मिंदा थीं और अपने अमल पर तौबा भी की थी। लेकिन उन्होंने ये काम भी नेक इरादे से ही किया था, बिलकुल इसी तरह सय्यिदना तलहा رضی اللہ عنہ, सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ, और दीगर सहाबा رضی اللہ عنہم ने भी नेक इरादे के साथ भलाई की उम्मीद पर इस्लाह की गर्ज़ से इस सफ़र में शिरकत की थी।"

मुसनद अहमद 24758 (जिल्द 11, पेज 67) और 25161 (जिल्द 11, पेज 184), सिलसिला-तुस-सहीह 474 इस हदीस को शेख़ शोएब अल-अर्नौत और शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी ने सहीह कहा है
मुसनद अहमद 27440 (जिल्द 12, पेज 269) और 25161 (जिल्द 11, पेज 184), मज्म-उज्ज-ज़वाइद 12024 (जिल्द 7, पेज 163), इस हदीस के बारे में इमाम हैशमी ने कहा हैं कि ये हदीस जो मुसनद अहमद और अल बज्जार और तबरानी ने नक़ल कि है उसके रावी सिका है|
मज्म-उज्ज-ज़वाइद 12026 (जिल्द 7, पेज 163) इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने सहीह कहा है और इमाम हैशमी ने रावी को सिका कहा है|
सहीह बुखारी 1391, मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा 38927 इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी ने सहीह कहा है सिलसिला-तुस-सहीह 474 इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल- अल्बानी ने सहीह कहा है

13 **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना क़ैस बिन हाज़म ताबई رحمہ اللہ का बयान है: "मैंनें मरवान बिन हकम (जो जंगे जमल में बनू उमय्या की तरफ़ से लोगों को सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ के ख़िलाफ़ भड़काने वालों का सरग़ना था) को (जंगे जमल के) उस दिन सय्यिदना तलहा رضی اللہ عنہ पर ही तीर चलाते हुए देखा था, जो उनके घुटने में लगा और वो उसी ज़ख़्मी हालत में मुसलसल तस्बीह कहते रहे यहां तक के शहीद हो गए।" **मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा और फ़ज़ाइलुस्सहाबा की हदीस में है:** सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ फ़रमाया करते थे: "मुझे अल्लाह तआला से क़वी उम्मीद है कि मैं, सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ, सय्यिदना तलहा رضی اللہ عنہ और सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ उन लोगों में से होंगे जिनके मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने कुरआन-ए-हकीम में फ़रमाया है: "और हम उन (ईमान वालो) के सीनों में से हर क़िस्म का कीना ख़ींच निकालेंगे (और वो) भाईयों की तरह (जन्नत के) तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे। सुरह-तुल-हिज्र: आयत 47

अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 5591, इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने सहीह कहा है
मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा 38976, फ़ज़ाइले सहाबा लिल अहमद बिन हंबल 1057 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है

नोट चौथे खलीफ़ा राशिद सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ ने मंदरजा बाला हदीस नम्बर-13 में तीसरे खलीफ़ा राशिद अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ का ज़िक्र क्यों किया? इस अहम् बात की हक़ीक़त व हिकमत और अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ की मज़लूमाना शहादत की हक़ीक़ी वुजूहात को जानने के लिए सहीह अहादीस (नम्बर 14 से नम्बर 16) मुलाहज़ा फ़रमाएं:

14 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना मुहम्मद बिन हन्फिया ताबई رحمہ اللہ (जो सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ की दूसरी बीवी सय्यिदा हंफिया رضی اللہ عنہا के बेटे थे) बयान फ़रमाते हैं: अगर सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ का ज़िक्र बुराई से करना होता तो उस दिन करते जब कुछ लोगों ने आकर उन (सय्यिदना अली) से सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ के गवर्नरों (की नाइन्साफियों व मज़ालिम) की शिकायत की तो उन्होंने मुझे हुक्म दिया: "रसूलुल्लाह ﷺ की लिखवाई हुई तहरीर (जो बैतुल माल से मुताल्लिक़ शरई अहकाम पर मुश्तमिल थी) साथ लेकर सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ के पास जाओ और उन्हें समझाओ कि अपने गवर्नरों को

बैतुल माल में रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत तरीक़े पर तसर्रुफ़ करने का हुक्म दें।" चुनांचे मैं सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ (और सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ का पैगाम पहुंचा दिया) तो उन्होंने (सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ) ने मुझसे फ़रमाया: "हमें इस (रसूलल्लाह ﷺ की लिखवाई तहरीर) की कोई ज़रुरत नहीं है।" चुनांचे मैं उसको लेकर सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ के पास वापस आया और सारा वाक़िया बयान कर दिया तो सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "इस (रसूलुल्लाह ﷺ की लिखवाई हुई तहरीर) को उसी जगह रख दो जहाँ से उठाया था।" **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अली बिन हुसैन ताबई رحمہ اللہ (अलमारूफ़ इमाम सज्जाद ज़ैनुल आबिदीन) मरवान बिन हकम का बयान नक़ल करते हैं: "मैं (मरवान) सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ के पास उस वक़्त मौजूद था जबकि सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ हज-ए-तमत्तो (एक ही सफ़र में हज और उमरा दोनों अदा करने) से मना कर रहे थे। जब सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ ने ये सूरते हाल देखी तो कहा: لبیک بعمرۃ وحجۃ (यानी उमरह और हज इकटठा अदा करने का ऐलान किया) और फ़रमाया: "मैं किसी शख्स के कहने पर रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत तर्क नहीं करूँगा।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सईद बिन मुसय्यब ताबई رحمہ اللہ बयान फ़रमाते हैं: सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ दोनों मक़ाम उस्फान पर इकटठा हुए और सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ हज-ए-तमत्तो से रोक रहे थे तो सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ ने (सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ से) फ़रमाया: "आप رضی اللہ عنہ एक ऐसे अमल से क्यों मना कर रहे हैं जिसे ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ ने अदा फ़रमाया है ? "जवाब में सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ ने (सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ) फ़रमाया: "आप हमारे मामले में दख़ल न दें।" सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: मैं इसे (बगैर दख़ल दिए) छोड़ नहीं सकता।" फिर जब सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ ने ये सूरते हाल देखी (कि ख़लीफा-ए-सालसा अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ उसी फ़ैसले पर क़ायम हैं) तो दोनों (हज और उमरा) को इकटठा अदा करने का ऐलान किया। **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** अबु सासान ताबई رحمہ اللہ बयान फ़रमाते हैं: मैं सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ के पास मौजूद था कि वलीद बिन उक़बा को लाया गया। (नोट:सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ के इस गवर्नर का तफ्सीली तारुफ़ आगे आ रहा है) उस (वलीद बिन उक़बा) ने नमाज़े फ़ज्र की दो रकअत पढ़ाईं और फिर (नमाज़ियों से) पूछा: "और पढ़ा दूं?" चुनांचे दो अश्खास (व्यक्तियों) ने गवाही दी जिन में से एक हमरान था, कि उस (वलीद) ने शराब पी हुई है। एक और आदमी ने गवाही दी कि मैंने उस (वलीद) को क़य (उलटी) करते हुए देखा है। तो सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "इसने शराब पी है इसीलिए तो क़य (उल्टी) की है।" फिर फ़रमाया: "ऐ अली رضی اللہ عنہ ! उठें और इसे (शराब नोशी की हद) कोड़े लगाएं।" सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ ने (अपने बेटे से) फ़रमाया: "ऐ हसन رضی اللہ عنہ ! उठो और इसको कोड़े लगाओ।" इस पर सय्यिदना हसन इब्ने अली رضی اللہ عنہ ने अर्ज़ किया: "जिन्होंने इस शख्स (के इक़तिदार) का मज़ा लिया है वही (यानी सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ) इस की तल्ख़ी भी बर्दाश्त करें।" (नोट: दरअसल सय्यिदना हसन इब्ने अली رضی اللہ عنہ को वलीद बिन उक़बा जैसे बदकिरदार शख्स को गवर्नरी के ओहदे पर फाईज़ करने पर शदीद गुस्सा भी था और वो बनू उमय्या और बनू हाशिम के दरमियान होने वाले मुमकिना क़बाइली तअस्सुब (इर्ष्या व द्वेष) से भी इज्तिनाब करना चाहते थे।) फिर सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "ऐ अब्दुल्लाह बिन जाफ़र رضی اللہ عنہ ! तुम उठो और इसे कोड़े लगाओ।" चुनांचे उन्होंने कोड़े लगाने शुरू किये और जब चालीस पर पहुंचे तो (सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ) ने फ़रमाया: "बस करो! क्योंकि रस्लूलुल्लाह ﷺ चालीस कोड़े लगवाया करते थे, सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ भी चालीस लगवाते थे, (जबकि) सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ ने अस्सी कोड़े भी लगवाए थे। और ये सब अमल सुन्नत ही हैं मगर ये (चालीस वाला अदद) मुझे (रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत होने के बाईस) ज़्यादा पसंद है।" सहीह बुख़ारी 3111, 3112 और 1563, सहीह मुस्लिम 2964 और 4457

नोट वलीद बिन उक़बा, सय्यिदना उसमान رضی اللہ عنہ का सौतेला भाई और उन की तरफ़ से कूफ़ा का गवर्नर था। इसकी ग़ैर अखलाक़ी हरकतों और इसी तरह सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ की जानिब से (तालीफ़ ए क़ल्ब के लिए) लगाए गए बनू उमय्या ही के चंद रिश्तेदार गवर्नरों के अफ़आल की वजह से बाज़ सहाबा किराम رضی اللہ عنہم तीसरे ख़लीफा अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ से नाराज़ थे और आख़िर यही मामलात सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ की मज़लूमाना शहादत का सबब भी बने। शहादत ए उस्मान رضی اللہ عنہ को अब्दुल्लाह इब्ने सबा यहूदी मलऊन के एक बिलकुल अलग थलग फितने से जोड़ देना दरअसल सहीहुल असनाद अहादीस और मुस्तनद तारीख़ से ना वाक़फियत और फ़िरकावाराना कित्माने हक़ (सच बात को छिपाना) का नतीजा है। चुनांचे इस ज़िमन में **मुहद्दिसे आज़म हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई رحمہ اللہ अलमुतवफ्फ़ा-1435 हिजरी) ने सुन्नी और शिया** दोनों की मुस्तनद किताबों से साबित किया है कि अब्दुल्लाह इब्ने सबा यहूदी मलऊन दोनों ही मकातबी फ़िक्र के यहाँ न सिर्फ़ एक मुनाफ़िक़ शख्सियत के तौर पर जाना जाता है बल्कि यहाँ तक मज़कूर है कि उसे चौथे ख़लीफ़ा राशिद अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ ने (अपने दौरे ख़िलाफ़त में इसके ख़िलाफ़ ए तौहीद गुमराह कुन अक़ाएद और सय्यिदना मौला अली इब्ने अबुतालिब رضی اللہ عنہ की शान में गुलू पर मबनी नज़रियात फैलाने के संगीन जुर्म की पादाश में) क़त्ल करवा के आग में डाल कर जलवा भी दिया था।

फतावा इल्मिया अलमारुफ़ तौजिहुल अहकाम लिल-हाफिज़ जुबैर अली ज़ई : जिल्द 1, पेज 153-159

15 **सुनन नसाई की हदीस में है:** सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ बयान करते हैं कि फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने सब लोगों को अमान दे दी (यानी जान बख्शी का ऐलान फरमा दिया) मगर चार मर्दों और औरतों के मुताल्लिक़ हुक्म फ़रमाया: "उन्हें क़त्ल कर दो ख्वाह काबा के पर्दों से क्यों नही चिमटे हुए हों (यानी जान बचाने के लिए काबा की हुरमत का सहारा लें तब भी क़त्ल कर दो क्योंकि उन चारों के जराएम न काबिले माफ़ी थे) इन चारों में अकरमा बिन अबुजहल, अब्दुल्लाह बिन ख़तल, मक़ीस बिन सबाबा और अब्दुल्लाह बिन साद बिन अबुसरह शामिल थे। चुनांचे अब्दुल्लाह बिन ख़तल काबा के पर्दों से चिमटी हुई हालत में पकड़ा गया तो उस की तरफ़ सय्यिदना सईद बिन हारिस ﷺ और सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ दोनों लपके मगर सय्यिदना अम्मार ﷺ जवान आदमी थे इसलिए पहले जा पहुंचे और उसे मार डाला। इसी तरह मक़ीस बिन सबाबा बाज़ार में लोगों के हत्थे चढ़ गया और वहीं मारा गया, अलबत्ता अकरमा बिन अबुजहल फरार हो गया और समुन्द्री जहाज़ में सवार हो गया। समुन्द्री सफ़र के दौरान तूफान आ गया तो सब कहने लगे अब तो सिर्फ़ अल्लाह तआला से मदद मांगो, यहाँ तुम्हारे (झूठे) माबूद कुछ काम न आएँगे। चुनांचे अकरमा ने (दिल में) दुआ करते हुए अर्ज़ किया: " अल्लाह तआला की क़सम! अगर सिर्फ़ अल्लाह तआला ही मुझे समुन्द्री आफत से निजात दिला सकता है तो ख़ुशकी (ज़मीन) में भी वही निजात देने वाला है। ऐ अल्लाह तआला! मेरा तुझ से पक्का अहद है कि अगर तूने मुझे इस (तूफ़ान) से बचा लिया तो सीधा जाकर (तेरे नबी) मुहम्मद ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होऊँगा और उनके हाथो में हाथ दे दूंगा (यानी इस्लाम क़बूल कर लूँगा) यक़ीनन वो बड़े माफ़ करने वाले और वसीअ उल ज़र्फ़ शख्सियत के मालिक हैं। चुनांचे फिर (जब उसे निजात मिली तो) वह आया और (आप ﷺ के हाथ पर) इस्लाम क़बूल कर लिया। अब (चौथा ना क़ाबिले माफ़ी शख्स) अब्दुल्लाह बिन अबुसरह (कुछ अरसे के लिए) सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान के पास छिपा रहा **नोट** सय्यिदना उस्मान ﷺ ने क़रीबी रिश्तेदारी की बिना पर उसे पनाह दे दी थी), फिर जब आप ﷺ ने सब लोगों को इस्लाम की बैअत के लिए बुलाया तो वह (सय्यिदना उस्मान ﷺ) उस (अब्दुल्लाह बिन अबुसरह) को लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि इस की बैअत भी क़ुबूल फरमा लें। रसूल्लुल्लाह ﷺ ने नज़र मुबारक उठा कर उसको तीन मरतबा देखा मगर सिर मुबारक का इशारा फ़रमाकर (तीनो बार बैअत लेने से) मना फ़रमाया। फिर आख़िरकार बैअत ले ली। मगर फिर (उन दोनों के जाने के थोड़ी देर बाद) रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा किराम ﷺ से इरशाद फ़रमाया: "तुम में कोई एक समझदार आदमी ऐसा नही था जो (सूरते हाल की संगीनी को देखते हुए) उस (अब्दुल्लाह बिन अबुसरह) को क़त्ल कर देता जबकि मैं उसकी बैअत से गुरेज़ कर रहा था।" सहाबा-ए-किराम ﷺ ने अर्ज़ किया:"ऐ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ ! हमें आप ﷺ की ख्वाहिश का इल्म कैसे हो सकता था (बस एक दफा हमें) आप ﷺ आँख से इशारा फरमा देते!" आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "किसी भी नबी की शायानेशान नही है कि वो आँख से इशारा करे।" **नोट** आँख से इशारा करने का ये अमल हर मुआशरे में एक क़िस्म की ख़यानत समझा जाता है)। **सुनन नसाई की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ ने अल्लाह तआला के फरमान: "जो कोई कुफ़्र करे अल्लाह तआला के साथ, सिवाए उसके कि जिसे मजबूर किया जाए, तो उसके लिए बड़ा अज़ाब है।"[अल नहल: 106] की तफसीर में फ़रमाया कि इस हुक्म को मंसूख कर दिया गया और फिर अल्लाह तआला ने हुक्म नाज़िल फरमाया: "फिर बेशक़ आप ﷺ का रब बहुत बख्शने वाला मेहरबान है, उन लोगों को जो फितने में डाले गए थे, फिर उन्होंने हिजरत की, फिर जिहाद किया और सब्र किया।"[अल-नहल: 110] सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ ने फ़रमाया: "सूरह नहल की ये आयत जिसमें शरह सदर होने के बावजूद कुफ़्र करने का ज़िक्र है, ये आयत अब्दुल्लाह बिन अबुसरह के बारे में है जो (सय्यिदना उस्मान ﷺ की तरफ़ से) मिस्र का गवर्नर बनाया गया था। (हालाँकि) ये रसूलुल्लाह ﷺ का कातिब था फिर शैतान ने उसे फुसलाया और ये कुफ्फार से जा मिला तो आप ﷺ ने फ़तह मक्का के दिन इसे क़त्ल करने का हुक्म दिया मगर सय्यिदना उस्मान ﷺ ने (अपनी रिश्तेदारी के सबब सिफ़ारिश करके) इसे पनाह दिलवा दी थी।" **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷺ के मोअज़्ज़िन सय्यिदना इक़रा ताबई ﷺ बयांन करते हैं कि सय्यिदना उमर ﷺ ने मुझे एक पादरी के पास भेजा और फिर उसे सय्यिदना उमर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर किया गया। सय्यिदना उमर ﷺ ने उससे पूछा: "क्या मेरा ज़िक्र तुम्हारी किताब में मौजूद है?" उसने अर्ज़ किया: "जी हाँ!" फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरे बारे में क्या लिखा है?" उसने अर्ज़ किया: "एक क़रन!" (ये सुनकर) आप ﷺ ने उस पर (मारने के लिए) दुर्रा तान लिया फिर पूछा: "किस क़िस्म का क़रन?" उसने अर्ज़ किया: "शदीद मज़बूत और सख्त अमानतदार" आप ﷺ ने पूछा: "मेरे बाद आने वाले (ख़लीफा) का ज़िक्र किन अल्फ़ाज़ में है?" उसने अर्ज़ किया: "उसका ज़िक्र ये है कि वह ख़लीफा तो नेक होगा, मगर वह अपने रिश्तेदारों को तरजीह देगा।" सय्यिदना उमर ﷺ ने (ये सुनकर) तीन बार दुआ की: "अल्लाह उस्मान पर रहम करे।" (नोट: सय्यिदना उमर ﷺ उस पेशगोई को समझ गए क्योंकि उन्हे मुन्दर्जा बाला (उपरोक्त) सहीहुल असनाद अहादीस में आए वाक़ियात की रौशनी में सय्यिदना उस्मान ﷺ की ये बशरी कमज़ोरी ख़ूब मालूम थी) सय्यिदना उमर ﷺ ने फिर सवाल किया: "उस (सय्यिदना उस्मान ﷺ) के बाद आने वाले का क्या ज़िक्र है?" उसने अर्ज़ किया: " वह तो लोहे में लिपटा रहेगा। (यानी जंगों में मसरूफ रहेगा)" (ये सुनकर) सय्यिदना उमर ने अपना हाथ उस के सिर पर रखा और फ़रमाया: "ऐ नालायक़! ऐ नालायक़! (ये क्या कह रहा है?)" उसने

अर्ज़ किया: "ऐ अमीरुल मोमिनीन! बेशक़ वह (यानी सय्यिदना अली ﷺ) एक नेकसीरत ख़लीफा होगा, लेकिन उसके ख़लीफा बनाए जाने के वक़्त तलवार मियान से निकाली जा चुकी होगी और खून बहाया जा रहा होगा (यानी मुसलमानों में आपस में ख़ानाजंगी(ग्रहयुद्ध) शुरू हो चुकी होगी)। **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुबकर ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक दिन (सहाबा किराम ﷺ से) पूछा: "क्या तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है ?" एक शख्स ने अर्ज़ किया: "जी हाँ! मैंने ये देखा है कि आसमान से एक तराज़ू उतरा है, जिसमें आप ﷺ और सय्यिदना अबुबकर ﷺ को तोला गया तो आप ﷺ भारी निकले, फिर सय्यिदना उमर ﷺ और सय्यिदना अबुबकर ﷺ को आपस में तोला गया तो सय्यिदना अबुबकर ﷺ भारी साबित हुए, फिर सय्यिदना उमर ﷺ और सय्यिदना उस्मान ﷺ का वज़न किया गया तो सय्यिदना उमर ﷺ का वज़न ज्यादा निकला, फिर वह तराज़ू (आसमान की तरफ़) उठा लिया गया।" (ये सुन कर) हमने देखा कि आप ﷺ के चेहरा अनवर पर नागवारी के असरात ज़ाहिर हो गए। (यानी शहादते उमर ﷺ के बाद मामलात में तगय्युर आने लगेगा)।

सुनन नसाई 4072, 4074 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई और शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी ने सहीह कहा है
सुनन अबु दाऊद 4656 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है
जामिया त्रिमिज़ी 2287 इस हदीस को इमाम त्रिमिज़ी और शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी ने सहीह कहा है

16 **सहीह बुखारी और मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ का बयान है कि एक शख्स रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया: मैने आज रात ख़्वाब में देखा कि एक छतरीनुमा बादल से घी और शहद टपक रहा है और लोग उसे अपनी हथेलियों में समेट रहे हैं, कोई ज़्यादा और कोई कम ले रहा है, फिर अचानक एक रस्सी देखी जो ज़मीन से आसमान तक तनी हुई थी। फिर मैंने आप ﷺ को देखा कि उस रस्सी को पकड़ कर ऊपर चढ़ गए। फिर आप ﷺ के बाद एक और आदमी उसी रस्सी को पकड़ कर ऊपर चढ़ गया, फिर उस के बाद एक दूसरे शख्स ने उसी रस्सी को पकड़ा और ऊपर चढ़ गया, फिर एक तीसरे शख्स ने उसी रस्सी को पकड़ा तो वह रस्सी टूट गई फिर उस रस्सी को उस शख्स के लिए जोड़ दिया गया। (ये ख़्वाब सुनकर) सय्यिदना अबुबकर ﷺ ने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह ताआला के रसूल ﷺ ! मेरे मां बाप आप ﷺ पर क़ुर्बान, मुझे इस (ख़्वाब) की ताबीर बयान करने की इजाज़त दीजिए।" आप ﷺ ने फ़रमाया: "ठीक है ताबीर करो।" सय्यिदना अबुबकर ﷺ ने अर्ज़ किया: "बादल से मुराद इस्लाम है और उस से टपकने वाला घी और शहद, कुरआन और उसकी शीरीनी है जिसे कोई ज़्यादा और कोई थोड़ा हासिल कर रहा है। और आसमान से ज़मीन तक लटकने वाली रस्सी, वह दीन हक है जिस पर आप ﷺ क़ायम हैं। आप ﷺ उसे थामे रखेंगे हत्ता कि अल्लाह ताआला आप ﷺ को उठा लेगा। फिर आप ﷺ के बाद एक और शख्स (यानी सय्यिदना अबुबकर ﷺ) उसे थाम लेगा और फिर उसे भी ऊपर उठा लिया जाएगा। फिर एक दूसरा शख्स (यानी सय्यिदना उमर ﷺ) उसे थाम लेगा और फिर उसे भी ऊपर उठा लिया जाएगा। फिर एक तीसरा शख्स (यानी सय्यिदना उस्मान ﷺ) उसे थमेगा तो वह रस्सी टूट जाएगी। मगर फिर उस रस्सी को उस (यानी सय्यिदना उस्मान ﷺ) के लिए जोड़ दिया जाएगा। (यानी सय्यिदना उस्मान ﷺ की शहादत उनके लिए कफ्फ़ारा बन जाएगी) फिर वह भी उसे थाम कर ऊपर चढ़ जाएगा।" सय्यिदना अबुबकर ﷺ ने ताबीर बयान करने के बाद अर्ज़ किया: " ऐ अल्लाह ताआला के रसूल ﷺ ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान (बताइए कि) मैंने दुरुस्त ताबीर की या ग़लत?" आप ﷺ ने फ़रमाया: "कुछ दुरुस्त ताबीर कि और कुछ गलत" सय्यिद्ना अबु बकर ﷺ ने अर्ज़ किया : अल्लाह तआला की कसम! आप ﷺ मुझे ज़रूर बताइये कि मैंने कौन सी गलती की? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे कसम मत दो" (आप ﷺ ने इसकी ताबीर को हिकमत की वजह से बयान नहीं फ़रमाया लेकिन बाद में होने वाले हालात ने उस हकीक़त को वाज़ेह कर दिया।)

सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:

सय्यिदना अबु मूसा अशअरी ﷺ का बयान है कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के हमराह मदीना मुनव्वरा के किसी बाग़ में था और रसूलुल्लाह ﷺ के दस्ते मुबारक में एक छड़ी थी जिसे आप ﷺ पानी और मिटटी में मार रहे थे। (इसी दौरान) एक शख्श ने दरवाज़े पर आकर बाग़ में दाख़िल होने की इजाज़त मांगी। आप ﷺ ने फ़रमाया: "दरवाज़ा खोल दो और उस (आने वाले) को जन्नत की बशारत दे दो।" चुनांचे मैं गया तो वह (आने वाले) सय्यिदना अबुबकर ﷺ थे। मैंने दरवाज़ा खोल दिया और उन्हें बशारत दे दी। फिर एक और शख्स ने दरवाज़े पर आकर बाग़ में दाख़िले की इजाज़त मांगी। तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "दरवाज़ा खोल दो और उस (आने वाले) को भी जन्नत की बशारत दे दो। मैंने जाकर दरवाज़ा खोला तो वह सय्यिदना उमर ﷺ थे। चुनांचे दरवाज़ा खोल दिया और उन्हें भी जन्नत की बशारत की ख़ुशख़बरी दे दी। फिर एक शख्स ने दरवाज़े पर आकर बाग़ में दाखिले की इजाज़त मांगी। आप ﷺ टेक लगाकर तशरीफ़ फरमा थे, (इस बार) उठ कर बैठ गए और फ़रमाया: "दरवाज़ा खोल दो और उसे (भी) जन्नत की बशारत दे दो मगर उसे एक बड़ी मुसीबत पहुँच कर रहेगी।" चुनांचे मैंने जाकर दरवाज़ा खोल दिया तो वह सय्यिदना उस्मान ﷺ थे मैंने जन्नत की बशारत भी दी और (आप ﷺ की बयान करदा) बात भी सुना दी। (वह बात सुनकर) सय्यिदना उस्मान ﷺ ने कहा: "मैं अल्लाह ताआला ही से मदद चाहता हूँ।" **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अदी बिन ख़यार ﷺ का बयान है कि मैं मुहासरे (जो बागियों ने हज़रत उस्मान ﷺ का

किया था) के दौरान सय्यिदना उस्मान ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि (ऐ अमीरुल मोमिनीन!) बेशक हमारे इमाम तो आप ﷺ हैं (लेकिन) आप ﷺ पर जो मुसीबत आई है वह आप ﷺ के सामने ही है। आजकल हमें (मस्जिदे नबवी ﷺ में) फ़ितनों का सरगना नमाज़ पढ़ा रहा है जिस की वजह से हमें तंगी महसूस होती है (कि उस बिदअती इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ कर हम भी कहीं गुनाहगार न हो जाएं !) सय्यिदना उस्मान ﷺ ने फ़रमाया: "नमाज़ लोगों के आमाल में से सबसे बेहतरीन अमल है, इसलिए जब लोग कोई अच्छा अमल करें तो तुम भी उन (बिदअतियों और बाग़ियों) के साथ शरीक हो जाओ। और जब वह बुराई करने लगें तो उस से अलग हो जाओ।" **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना मुरतह बिन काअब ﷺ का बयान है की एक मरतबा रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़ितनों का ज़िक्र किया और उन (फ़ितनों) के बहुत जल्द ज़ाहिर होने की तवक्को (उम्मीद) भी ज़ाहिर की। (इसी दौरान) एक शख्स कपड़े में लिपटा हुआ वहां से गुज़रा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये शख्स उस (फ़ितनों वाले) दिन राहे हिदायत पर होगा।" सय्यिदना मुरतह बिन काअब ﷺ का बयान है कि मैं उठ कर उस (कपड़े में लिपटे हुए शख्स) के पास गया तो देखा कि वह उस्मान बिन अफ्फान ﷺ थे। फिर मैं ने आप ﷺ के क़रीब आकर पूछा कि क्या यही वह शख्स है? (जिस के राहे हिदायत पर होने की खबर आप ﷺ ने दी है) तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "हाँ!" **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुसहल ताबई ﷺ का बयान है कि सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान ﷺ ने मुहासरे (जो बागियों ने हज़रत उस्मान ﷺ का किया था) वाले दिन फ़रमाया: "रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ से (मुसीबत के वक़्त सब्र करने पर) एक अहद लिया था जिस पर मैं सब्र के साथ कारबंद हूँ।" **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ और सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "एक मुसलमान को जो भी तकलीफ, दर्द, रंज व गम लाहक़ होता है हत्ता कि उसे जो काँटा भी चुभता है तो अल्लाह ताआला उस (तकलीफ को बर्दाश्त करने) के एवज़ उस के गुनाहों को माफ़ फरमा देता है।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु हुरैरा ﷺ का बयान है कि जब ये आयत नाज़िल हुई: مَن يَعْمَلْ سُوٓءًا يُجْزَ بِهِۦ "जो शख्स कोई भी बुराई करेगा, तो वह उस का बदला भी पाएगा।" **[अननिसा :123]** [123 : النساء] तो मुसलमानों को शदीद परेशानी लाहक़ हुई। (इस पर) रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "एक दूसरे को हक की तलक़ीन और इस्लाह करते रहो, क्योंकि मुसलमान को पहुँचने वाली हर मुसीबत में गुनाहों का कफ्फारह है, हत्ता कि मामूली सा दुःख और काँटा चुभ जाने पर भी (उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।)"

सहीह बुखारी 7046 , सहीह मुस्लिम 5928 , सहीह बुखारी 6216, सहीह मुस्लिम 6212, सहीह बुखारी 695
जामिया त्रिमिज़ी 3704, 3711 इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है
सहीह बुखारी 5641 , सहीह मुस्लिम 6569

17 **सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** अकरमा ताबई ﷺ का बयान है कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ ने मुझे और (अपने बेटे) सय्यिदना अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ताबई ﷺ को हुक्म दिया कि तुम दोनों सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ के पास जाओ और उनसे उनकी (रिवायत की गई एक ख़ास) हदीस सुनो, चुनांचे जब हम उनके पास गए तो वो और उनका भाई अपने बाग़ को सैराब कर रहे थे। हमें देख कर वो (हमारे क़रीब) आ गए और गोठ लगाकर (दिल जमई के साथ) बैठ गए और फिर सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ ने हमसे बयान फ़रमाया: "हम लोग मस्जिद (नबवी की तामीर के लिए) ईंटें एक एक करके उठा रहे थे जबकि सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ (अपने शौक़ और जज़्बे के बाइस एक की बजाए) दो दो ईंटें उठाकर ला रहे थे। (इसी दौरान) रसूलुल्लाह ﷺ जब सय्यिदना अम्मार ﷺ के पास से गुज़रे तो (अपने मुबारक हाथों से) उनके सिर मुबारक से गर्द और मिट्टी झाड़ते हुए इरशाद फ़रमाया: "(अफ़सोस!) अम्मार की कमबख़्ती! (नोट: ये अरब का मुहावरा था) इसे एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा, अम्मार तो उन्हें जन्नत की तरफ़ बुला रहा होगा जबकि वो लोग अम्मार को आग की तरफ़ बुला रहे होंगे।" सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ का बयान है कि सय्यिदना अम्मार ने दुआ की: "ऐ अल्लाह तआला मैं उस फ़ितने से तेरी पनाह मांगता हूँ।"

सहीह बुखारी 2812, 447, सहीह मुस्लिम 7320

18 **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना कुल्सूम ताबई ﷺ का बयान है कि हम वासित (जो इराक़ का एक शहर है) में सय्यिदना अबुल आला ताबई ﷺ के पास बैठे थे कि अचानक वहां एक शख़्स को देखा जिनका नाम था: "सय्यिदना अबुल ग़ादिया ﷺ " उन्होंने पानी मांगा तो एक चांदी के नक़्श व निगार वाले बर्तन में उनके लिए पानी लाया गया मगर उन्होंने पानी पीने से इंकार कर दिया और फिर रसूलुल्लाह ﷺ का ज़िक्र करते हुए (बड़ी हसरत के साथ) बयान फ़रमाया कि आपने हम से ये इरशाद फ़रमाया था: देखना मेरे बाद दोबारा काफ़िर ना बन जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लग जाओ।" फिर सय्यिदना अबुल ग़ादिया ﷺ मज़ीद फ़रमाने लगे की एक मौक़े पर मैंने एक शख़्स को देखा कि वो फ़लां (मेरी एक महबूब शख़्सियत) का तज़्किरा (वर्णन) बुराई के साथ कर रहा था, तो मैंने कहा अल्लाह तआला की क़सम ! अगर लश्कर में तू मेरे हत्थे चढ़ गया (तो तुझ से निमट लूंगा)। फिर जब जंगे सिफ़्फ़ीन का दिन बरपा हुआ तो अचानक वही शख़्स मुझे (मैदाने जंग में) मिल गया। उसने ज़िरह पहन रखी थी, मुझे ज़िरह में एक शगाफ़ (छिद्र) नज़र आ

गया तो मैंनें ताक लगाकर नेज़ा मारा और उसे मार डाला। लेकिन फिर मुझे पता चला कि वो (मक़्तूल शख़्स तो) सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ थे (यानी उस वक़्त तक सय्यिदना अबुलग़ादिया ﷺ ख़ुद भी सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ के अहम मरतबे से नावाक़िफ़ थे)। फिर सय्यिदना अबुलग़ादिया ﷺ ख़ुद से मुख़ातिब हुए और कहा (ताज्जुब है कि) एक तरफ़ तो इन हाथों ने चाँदी के बर्तन में पानी पीने को तो पसंद नही किया और दूसरी तरफ़ सय्यिदना अम्मार बिन यासिर को क़त्ल कर डाला। (نعوذ باالله من ذلك) **मुस्नद अहमद की ही एक और हदीस में है कि** सय्यिदना मुहम्मद बिन अम्र ताबई رحمه الله का बयान है कि जब सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ क़त्ल हुए तो सय्यिदना अम्र बिन हज़म ﷺ , हज़रत अम्र बिन आस के पास आए और कहा कि सय्यिदना अम्मार क़त्ल हो गए हैं और (याद करो कि) रसूलुल्लाह ﷺ ने ये पेशगोई फ़र्माई थी: "उन (सय्यिदना अम्मार ﷺ) को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा। " ये सुनकर हज़रत अम्र बिन आस फ़ौरन घबराकर खड़े हो गए और मुसलसल "إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ" पढ़ते हुए हज़रत मुआविया बिन अबुसुफ़्यान ﷺ के पास आए। हज़रत मुआविया ﷺ ने (उन्हें घबराया हुआ देखकर) पूछा "क्या हुआ ?" हज़रत अम्र बिन आस ﷺ ने उन्हें जवाब दिया: "सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ क़त्ल हो गए हैं।" हज़रत मुआविया ﷺ ने पूछा "हज़रत अम्मार बिन यासिर ﷺ क़त्ल हो गए हैं तो फिर क्या हो गया ?" ये सुनकर हज़रत अम्र बिन आस ﷺ ने कहा कि मैंनें ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था: "उन (सय्यिदना अम्मार ﷺ) को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा।" इस पर हज़रत मुआविया ने (ग़ुस्से में आकर) कहा: "तुम अपने ही पेशाब में फिसल जाओ" उन (सय्यिदना अम्मार ﷺ) को हमने क़त्ल किया ? (फिर हज़रत मुआविया ने इस वाज़ेह ग़लती की तावील करते हुए कहा) उन्हें तो सय्यिदना अली बिन अबितालिब और उनके साथियों ने क़त्ल किया है कि उनको अपने साथ लाए और लाकर हमारे नेज़ों के आगे डाल दिया। (نعوذ باالله من ذلك)। **मुस्नद अहमद और अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** इन्ही हज़रत अम्र बिन आस को जब सय्यिदना अम्मार बिन यासिर के क़त्ल की ख़बर दी गई तो उन्होंने फ़रमाया कि मैंनें ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था: "उन (सय्यिदना अम्मार ﷺ) का क़ातिल और उन का सामान (माले ग़नीमत के तौर पर) लूटने वाला जहन्नम में जाएगा।" (نعوذ باالله من ذلك) किसी ने पूछा कि ख़ुद आप भी तो उन (सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ) से लड़ने वाले गिरोह में शामिल हैं ? (तो हज़रत अम्र बिन आस ﷺ ने भी इस वाजेह ग़लती की तावील करते हुए) कहा: "रसूलुल्लाह ﷺ ने तो सिर्फ़ क़ातिल और सामान लूटने वाले (के लिए ही जहन्नम रसीद होने) का ज़िक्र किया था।" (نعوذ باالله من ذلك)

मुसनद अहमद 16818 { जिल्द 6 पेज 880 } इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई, शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है
मुसनद अहमद 17931 { जिल्द 7 पेज 340 } और 17929 { जिल्द 7 पेज 337 } इस हदीस को शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है
अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 5661 इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने सहीह कहा है सिलसिला-तुस-सहीह 2008 इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी ने सहीह कहा है

19 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना इब्ने शमासा ताबई رحمه الله का बयान है कि हम हज़रत अम्र बिन आस ﷺ के पास आए जबकि वो नज़अ के आलम में थे, वो काफ़ी देर तक रोते रहे और अपना चेहरा दीवार की तरफ़ फ़ेर लिया। (ये देखकर) उनके बेटे ने कहा: अब्बा जान! आपको तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़लां बशारत दी थी, फ़लां ख़ुशख़बरी दी थी। हज़रत अम्र बिन आस ﷺ ने हमारे तरफ़ रुख़ फ़ेर कर कहा "हम सहाबा ﷺ (बशारतों से भी बढ़कर) ज़्यादा अफ़ज़ल अमल لا اله الا الله محمد رسول الله की गवाही देने को ख़्याल करते थे। (ऐ मेरे बेटे !) मेरी ज़िन्दगी में 3-अद्वार गुज़रे हैं। पहले (दौर-ए-जहालत में) मेरा यह हाल था कि मुझ से बढ़कर कोई और शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा नफ़रत रखने वाला नहीं था और मेरी ये शदीद ख़्वाहिश थी कि मेरा बस चले तो मैं आपको क़त्ल कर डालूं। (نعوذ باالله من ذلك) अगर मैं उसी दौर में मर जाता तो यक़ीनन जहन्नमी होता। फिर (मेरी ज़िन्दगी का दूसरा दौर उस वक़्त आया) जब अल्लाह तआला ने मेरे दिल में इस्लाम (की मुहब्बत को) डाल दिया, तो मैं रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया "आप ﷺ अपना हाथ मुबारक बढ़ाइए, मैं बैअत करना चाहता हूँ। आपने अपना दायां हाथ मुबारक आगे दराज़ फ़रमाया तो मैंनें अपना हाथ (पीछे) खींच लिया। आप ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ अम्र! ये क्या हरकत है ? मैंने अर्ज़ किया कि मैं (क़बूले इस्लाम से पहले) शर्त आइद करना चाहता हूँ। आपने ﷺ ने फ़रमाया क्या शर्त है ? मैंने अर्ज़ किया: मुझे (अपने गुलिश्ता गुनाहों की) माफ़ी चाहिए, आप ﷺ फ़रमाया: "क्या तुझे इल्म नहीं कि इस्लाम लाने से पिछले तमाम गुनाह मिट जाते हैं और हज करने से भी पिछले तमाम गुनाह मिट जाते हैं। (फिर मैंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो) उसके बाद आप ﷺ से बढ़कर मुझे कोई और महबूब नही रहा और ना ही मेरी निगाहों में कोई और आप ﷺ से ज़्यादा मुआज़्ज़िज़ (आदरणीय) नही रहा। मैं आप ﷺ की ताज़ीम (आदर) के बाईस (कारण) कभी भी आपको आँख भर के नही देख सका। और (मेरी हालत यहां तक हुई कि) अगर मुझसे आप ﷺ का हुलिया मुबारक बयान करने को कहे तो मैं बयान नही कर सकूंगा क्योंकि मैंने आप ﷺ को कभी नज़र भर के देखा ही नहीं था। इस (दूसरे) दौर में अगर मुझे मौत आ जाती तो उम्मीद थी कि मैं अहले जन्नत में से होता। फिर (मेरी ज़िंदगी का तीसरा दौर उस वक़्त आया) जब आपके बाद हमें कई ऐसे मामलात (हुक्मरानी से मुताल्लिक़) दरपेश हुए कि अब मुझे इल्म नहीं कि मैं उनमें कैसा रहा हूँ (यानी बरहक़ या नाहक़)। अब जबकि मैं मर

जाऊं तो (रस्म के तौर पे) मेरे (जनाज़े के) साथ कोई नौहा करने वाली या आग उठाने वाली ना जाए। फिर जब तुम मुझे दफ़न कर चुको तो मेरी क़ब्र पे (सुन्नत के मुताबिक़ पानी) छिड़काव करना और मेरी क़ब्र पर इतनी देर ठहर जाना कि जितना वक़्त एक ऊँट ज़िबह करके उस का गोश्त बांटने में लगता है ताकि अपनी क़ब्र पर तुम्हारी मौजूदगी के बाईस घबराहट से महफ़ूज़ रहूँ और अपने रब्बे करीम के भेजे हुए (फ़रिश्तों) से हम कलाम हो सकूं (यानी क़ब्र के सवालात के जवाबात में मुझे इस्तिक़ामत नसीब हो सके)।" **मुस्नद अहमद की हदीस में है:** जब हज़रत अम्र बिन आस ﷺ की मौत का वक़्त क़रीब आया तो रोने लगे। उनके बेटे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ ने पूछा: "क्या आप मौत के ख़ौफ़ से रो रहे हैं ?" तो उन्होंने फ़रमाया: "नहीं अल्लाह तआला की क़सम! बल्कि मैं तो (मौत के) बाद (आने वाले मराहिल) से डरता हूँ। **नोट** अगले अल्फाज़ इस हदीस के वही है जो ऊपर सहीह मुस्लिम के तरीक में गुज़र चुके है।..... फिर मैं इसके बाद (अपने तीसरे दौर में हज़रत मुआविया ﷺ की) बादशाहत में जा मिला और कुछ ऐसे काम हुए (यानी ख़लीफ़ा बरहक़ सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ के ख़िलाफ़ ख़रूज) कि मैं नहीं जानता कि वो ग़लत हैं या सहीह ? **नोट** अगले अल्फाज़ इस हदीस में भी वही है जो ऊपर सहीह मुस्लिम के तरीक में गुज़र चुके है.....।

मुस्नद अहमद की ही एक हदीस में है: सय्यिदना अबु नौफ़ल ताबई ﷺ का बयान है कि हज़रत अम्र बिन आस ﷺ पर मौत के वक़्त सख़्त घबराहट हुई, तो उनके बेटे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ ने पूछा: "ऐ अबुअब्दुल्लाह ﷺ ! ये घबराहट क्यों है हालांकि आप तो रसूलुल्लाह ﷺ के मुक़र्रिब (नज़दीकी) थे और आप ﷺ आपको ख़ुसूसी ज़िम्मेदारियां भी सौंपा करते थे ?" हज़रत अम्र बिन आस ﷺ ने फ़रमाया: हां बेटा! ये सब कुछ तो था लेकिन मैं तुम्हें (अपने दिल की) अस्ल बात बताता हूँ: "अल्लाह तआला की क़सम! मुझे ये मालूम नहीं कि (आप ﷺ की) ये नवाज़िश मुहब्बत की बिना पर थी या मेरी तालीफ़ क़ल्ब (दिलजोई) के लिए थी। अल्बत्ता मैं तुम्हें गवाही देकर उन दो (ख़ुशक़िस्मत) अफ़राद के बारे में बताता हूँ कि जिनसे रसूलुल्लाह ﷺ ताहयात (पूरी ज़िन्दगी) राज़ी रहे। पहले सय्यिदा सुमय्या ﷺ का बेटा (सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ और दूसरा सय्यिदा उम्मे अब्द ﷺ का बेटा (सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ)। फिर जब हज़रत अम्र बिन आस ﷺ अपनी बात मुकम्मल कर चुके तो उन्होंने अपना हाथ अपनी ठोडी (chin) के नीचे रखा और अर्ज़ किया "ऐ अल्लाह तआला! तूने हमें हुक्म दिया लेकिन हमने उस (तेरे हुक्म) को छोड़ दिया, और तूने हमें (कुछ कामों से) मना किया लेकिन हम वही काम कर गुज़रे, तेरी मग़फ़िरत के बग़ैर कोई चारा नहीं।" सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ का बयान है: "हज़रत अम्र बिन आस ﷺ बस इसी दुआ की तकरार करते रहे यहां तक कि कुछ देर बाद आप का इंतक़ाल हो गया।" **मुस्नद अहमद की एक हदीस में है:** सय्यिदना हंज़ला बिन ख़वीलद ताबई ﷺ का बयान है कि मैं हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ के पास था कि अचानक वहां दो आदमी सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ के कटे हुए सिर को लिये झगड़ते हुए आए। उनमें से हर एक का यही दावा था कि उसने उन्हें क़त्ल किया है। (نعوذ بالله من ذلك)। (ये मंज़र देखकर) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ ने फ़रमाया: "तुम दोनों (बजाए इस क़त्ल पर फ़ख़्र करने के) इस (दावा-ए-क़त्ल को) अपने साथी के हक़ में ही छोड़ दो क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने तो इरशाद फ़रमाया था: "उन (सय्यिदना अम्मार ﷺ) को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा।" ये सुनकर हज़रत मुआविया ने (ग़ुस्से में आकर सय्यिदना अब्दुल्लाह अम्र बिन आस ﷺ के वालिद हज़रत अम्र बिन आस ﷺ से) कहा: "ऐ अम्र अपने मज्नून (बेटे) से तो हमारी जान छुड़ाओ! और (ऐ अब्दुल्लाह! अगर ऐसा ही है तो) तेरा हमारे साथ क्या काम है ? (यानी हमारे गिरोह से निकल जाओ)। सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ ने हज़रत मुआविया ﷺ को जवाब देते हुए फ़रमाया: "मेरे बाप ने (एक बार) रसूलुल्लाह ﷺ से मेरी शिकायत की थी तो आप ﷺ ने मुझे हुक्म दिया था कि ज़िंदगी भर अपने बाप की इताअत करते रहना और उसकी नाफ़रमानी नही करना, लिहाज़ा मैं (आप ﷺ की उस नसीहत का पास रखते हुए) तुम्हारे साथ तो रहूँगा मगर (ख़लीफ़ा बरहक़ सय्यिदना अली ﷺ के ख़िलाफ़) लड़ाई में हिस्सा नहीं लूंगा।"

सहीह मुस्लिम 321, मुसनद अहमद 17933 और 17934 {जिल्द 7, पेज 341},6538 {जिल्द 3, पेज 516}इस हदीस को शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है

नोट इमाम बदरुद्दीन ऐनी हनफी (अल मुत्व्वफा 855 हिजरी) लिखते हैं इमाम किरमानी ﷺ ने कहा है सय्यिदना अली ﷺ और हजरत मुआविया ﷺ दोनों ही मुज्तहिद थे । ज्यादा से ज्यादा यह है कि हजरत मुआविया ﷺ को इज्तिहाद में ख़ता लाहक हो गई। इनको एक अज्र मिलेगा , जबकि सैय्यदिना अली ﷺ को दो अज्र मिलेंगे । इस दावे पर इमाम बदरुद्दीन ऐनी कहते हैं मैं कहता हूं हज़रत मुआविया ﷺ की ख़ता को इज्तिहादी कैसे कह दिया जाए ? उनके इज्तिहाद पर क्या दलील है। हालांकि उनको यह हदीस (जो बुखारी मुस्लिम के हवाले से ऊपर गुजर चुकी है) पहुंच चुकी थी। जिसमें अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया अफसोस! इब्ने सुम्मिया को एक बाग़ी जमआत क़त्ल करेगी और इब्ने सुम्मिया अम्मार बिन यासिर ﷺ हैं।और उनको हज़रत मुआविया ﷺ के गवर्नरों ने जंग ए सिफ़्फ़ीन में कत्ल किया। क्या हज़रत मुआविया ﷺ इस पर राज़ी नहीं, कि सहाबी होने की बरकत से अल्लाह तआला की बारगाह से उनको बराबर छोड़ दिया जाएगा ।चेहजाय (बल्कि ये कि) उनको खलीफा बरहक सैय्यदिना अली ﷺ के खिलाफ बगावत पर एक अज्र मिलेगा। उम्दतुल कारी शरह सहीह बुखारी लिन इमाम बदिरुद्दीन ऐनी हनफ़ी , सहीह बुखारी 7083 हदीस के तहत ।

20 **मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा की एक हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुर्रहमान ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैंने सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ के साथ नमाज़े फ़ज्र अदा की तो उन्होंने कुनूत नाज़िला पढ़ी जिसमें ये दुआ फ़रमाई: "ऐ अल्लाह तआला तू ख़ुद मुआविया और उसके शिया (साथियों) से निमट ले, और अम्र बिन आस और उसके शिया (साथियों) से निमट ले, और अबुसल्मा और उसके शिया (साथियों) से निमट ले।" **मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा की हदीस में है:** सय्यिदना यज़ीद बिन आसिम ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि जब सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ से जंगे सिफ़्फ़ीन के मक़्तूलीन के (उख़रवी अन्जाम के) मुताल्लिक़ पूछा गया तो उन्होंने इरशाद फ़रमाया: "(मुझे अल्लाह तआला से उम्मीद है कि) हमारे और उन (हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ) के मक़्तूलीन (अवामुन्नास) जन्नत में होंगे और (क़यामत के दिन) बिल आख़िर मामला (फ़ैसला होने के लिए अल्लाह तआला की बारगाह में) मेरे और मुआविया رضی اللہ عنہ के दरमियान पहुंचेगा।"

मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा 7123 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने अपनी किताब मकालात जुज़्ज़ 6 में सहीह कहा है
मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा 39035 इस हदीस को शेख़ इर्शादुल हक्क अल अशरी ने सहीह कहा है

21 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "(मेरे बाद ही मेरी उम्मत के) लोग 2 गिरोहों में तक़्सीम हो जाएंगे (यानी सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ और हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ) फिर इन दोनों (मुसलमानों) गिरोहों के अन्दर ही से एक (तीसरा) फ़िर्क़ा (यानी ख़वारिज का) अलग हो जाएगा और उस अलग हो जाने वाले फ़िर्क़े (ख़वारिज) से वो गिरोह क़िताल करेगा जो उन दोनों गिरोहों (सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ और हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ) में से अकरब-इलल-हक्क (हक़ के क़रीबतर) होगा। (यानी सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ का गिरोह)" सहीह मुस्लिम 2459

नोट "अकरब-इलल-हक्क से मुराद है: "हक़ वाला गिरोह" और दलील इसकी यह है कि क़ुरआन हकीम में ख़ुद अल्लाह तआला ने ग़जवह-ए-ओहद के मौक़े पर मुनाफ़िक़ीन के वाजेह कुफ़्र के लिए भी "अक़रब" का लफ़्ज इस्तेमाल फ़रमाया है:

चुनांचे इसी ज़िमन में **सुनन निसाई लिल बैहिक़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अम्मार बिन यासिर رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "मत कहो कि अहले शाम (यानी हज़रात मुआविया رضی اللہ عنہ के गरोह) ने कुफ़्र किया बल्कि कहो कि उन्होंने फ़िस्क़ (गुहाने कबीरा) किया, या फिर कहो कि (अपनी जानों पर) ज़ुल्म किया।" **[सुनन कुबरा लिल बैहक़ी: 16721 इस्नाद सहीह]**

22 **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे कि अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुल ख़ुवैसरा तमीमी आया और कहने लगा "ऐ मुहम्मद ﷺ! इंसाफ़ करो" आप ﷺ ने जलाल में आकर फ़रमाया: "तू बर्बाद हो ! जब मैं ही इंसाफ़ ना करूंगा तो और कौन करेगा? "सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ ने अर्ज़ किया मुझे इजाज़त दीजिए कि इस (गुस्ताख़) को क़त्ल कर दूँ।आपने फ़रमाया: रहने दो! इसके कुछ साथी (मुस्तक़्बिल में) ऐसे भी होंगे कि तुम अपनी नमाज़ को उनकी नमाज़ और अपने रोज़े को उनके रोज़े के मुक़ाबले में हक़ीर समझोगे (यानी वो ख़वारिज बहुत ज़्यादा इबादत गुज़ार होंगे) ये लोग दीन में से यूं ख़ारिज हो जाएंगे जैसे तीर अपने हदफ़ से आर पार निकल जाता है और उस तीर के अगले पिछले और दर्मियान किसी भी हिस्से पर कोई निशान नहीं लगा होता और वो गोबर और ख़ून में से साफ़ निकल जाता है। उन ख़वारिज की एक निशानी ये होगी कि उनमें से एक शख़्स का कटा हुआ बाज़ू औरत के पिस्तान जैसा होगा और ये लोग इख़्तिलाफ़ (जो सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ और हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ के दर्मियान हुआ) के वक़्त ज़ाहिर होंगे। सय्यिदना अबुसईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को (ये सब बातें) फ़रमाते हुए सुना था और मैं (ये भी) गवाही देता हूँ कि सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब رضی اللہ عنہ ने ही उन ख़वारिज को (जंगे नहरवान में) क़त्ल किया और मैं भी आप رضی اللہ عنہ के साथ था और फिर (ख़वारिज के मक़्तूलीन में) एक शख़्स की लाश लाई गई जिसमें वो तमाम अलामात मौजूद थीं जो रसूलुल्लाह ﷺ ने (पेशगोई) ज़िक्र फ़रमाई थीं। और इसी से मुताल्लिक़ ये आयत भी नाज़िल हुई: وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ "और उनमे से बाज़ आप ﷺ पर सदक़ात (की तक़्सीम) में ताअन करते हैं। सुरहतुल तौबा : 58 सहीह बुख़ारी 6933, सहीह मुस्लिम 2456

23 **सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि जब हरुरया (ख़वारिज) का ज़हूर हुआ तो उन्होंने एक अलग जगह को अपना मसकन बना लिया और उनकी तादाद 6000 थी। मैंने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब رضی اللہ عنہ से अर्ज़ किया कि आप नमाज़ (ज़ुहर) थोड़ी ठंडी (यानी मौअख़्ख़िर यानी देर से) कर दें ताकि मैं उन लोगों (ख़वारिज) से गुफ़्तो शनीद (बात चीत) कर सकूं। सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: मुझे ख़ौफ़ है कि वो तुम्हें कोई नुक़्सान ना पहुंचाएं। मैंने अर्ज़ किया कि क़त्अन ऐसा कोई इम्कान नहीं है। चुनांचे मैंने अच्छा लिबास ज़ेबतन किया और बाल संवारें और उनके पास पहुंच गया। ऐन दोपहर का वक़्त था और वो खाना खा रहे थे। उन्होंने (मुझे देखकर) कहा: मरहबा ऐ इब्ने अब्बास! कहो कैसे आना हुआ ? मैं तुम्हारे पास मुहाजिर व अंसार सहाबा رضی اللہ عنہم रसूलुल्लाह ﷺ के चचाज़ाद और दामाद (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब رضی اللہ عنہ) की तरफ़ से आया हूँ। उन (के हालात) पर कुरआन हकीम उतरा, लिहाज़ा कुरआन की तफ़्सीर तुम से कहीं बेहतर जानते हैं और तुम में उन जैसा

(फ़ज़ीलत वाला) कोई भी मौजूद नहीं। (मेरे आने की ग़र्ज़ ये है कि) मैं तुम्हें उन का मौअक़्क़िफ़ पहुंचा दूँ और तुम्हारा मौअक़्क़िफ़ उन तक पहुंचा दूँ। चुनांचे (ये बात सुनकर) उनमें से बहुत से लोग मेरे पास आ बैठे। मैं (सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ) ने उन (ख़वारिज से) सवाल किया मुझे इस बात की दलील दो कि किस दलील की रौशनी में तुम लोगों ने सहाबा और रसूलल्लाह के चचाज़ाद और दामाद (सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ) से दुश्मनी मोल ली है ? उन्होंने कहा: इस इख़्तिलाफ़ की 3 वजूहात हैं। मैंने कहा: वो 3 वजूहात कौन सी हैं ? उनमें से एक ने कहा : पहली बात तो ये है कि उन्होंने (सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ) ने अल्लाह तआला के मामले में इंसानों को क़ाज़ी ठहरा लिया है, हालांकि अल्लाह तआला का फ़रमान है: إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ "फ़ैसले का इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह तआला को हासिल है।" [अल अनआम :57] लिहाज़ा इस मामले में इंसानों के फ़ैसले से क्या सरोकार ? मैंने कहा : ये एक ऐतराज़ हुआ (यानी अगला ऐतराज़ बताओ ?) उन्होंने दूसरा सबब ये बताया कि उन्होंने (सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ) ने (सय्यिदा आयशा ﷺ के गिरोह के साथ जंगे जमल और हज़रत मुआविया ﷺ के गिरोह के साथ जंगे-ए-सिफ़्फ़ीन में) जंग की मगर ना तो उनके क़ैदियों को लौंडी और ग़ुलाम बनाया और ना ही माले ग़नीमत जमा किया ! अगर वो काफ़िर थे तो उन्हें क़ैदी बनाना भी दुरुस्त था और वो मोमिनीन थे तो सिरे से उनके साथ क़िताल करना भी ग़लत हुआ ! मैंने कहा "ये दो बातें तो हो गईं अब तीसरा ऐतराज़ बताओ ? उन्होंने कहा: उन्होंने (सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ ने हज़रत मुआविया ﷺ के साथ मुआहिदे की तहरीर में) अपने नाम से लफ़्ज़ "अमीरुल मोमिनीन" मिटवा दिया है, लिहाज़ा अगर वो अमीरुल मोमिनीन नहीं हैं तो क्या अमीरुल काफ़िरीन हैं ? मैंने कहा: इन तीन इशक़लात के अलावा कोई और ऐतराज़ भी है ? उनहोंने कहा: नहीं यही तीन काफी है मैंने कहा अगर तुम्हें अल्लाह तआला की क़िताब और रसूलल्लाह की सुन्नत से कुछ पेश करूँ जिस से तुम्हारें इशक़लात हल हो जाएं तो मान लोगे ? उन्होंने कहा: जी हां बिल्कुल! मैं (सय्यिदना अब्दुल्लह बिन अब्बास ﷺ) ने कहा: तुम्हारा ये ऐतराज़ कि सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ ने अल्लाह तआला के मामले में इंसानों को क़ाज़ी ठहरा लिया है (और यूं कुफ़्र का इरतक़ाब किया), तो मैं तुम्हें अल्लाह तआला की किताब ही में से दिखा देता हूँ कि अल्लाह तआला ने एक चौथाई दिरहम की मालयित (हक़ीर रक़म) पर फ़ैसला इंसानों के सुपुर्द फ़रमाया है कि वो इसका फ़ैसला कर दें, देखो अल्लाह तआला फ़रमाता है: يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۚ وَمَن قَتَلَهُ مِنكُم مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ

"ऐ ईमान वालो! अहराम की हालत में शिकार मत करो और तुम में से जो जानबूझ कर ऐसा कर बैठे तो (उस शिकार) के बराबर किसी जानवर को बतौर क़फ्फारा पेश करे, जिसका फ़ैसला तुम में से 2 मोतबर (विश्वसनीय) अफ़राद करेंगे। [अलमाइदा : 95]

अब देख लो कि ये मामूली और छोटा सा फ़ैसला अल्लाह तआला ने बंदों के सुपुर्द फ़रमाया जबकि वो ख़ुद ही फ़ैसला फ़रमा सकता था मगर फिर भी उसने इंसानी फ़ैसले को जाइज़ रखा। मैं तुम्हें अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि (इंसानी फ़ैसले से) उम्रे मुस्लिमीन की इस्लाह करना और अमन की ख़ातिर बाहमी ख़ूनरेज़ी रोकना ज़्यादा अहम और अफ़ज़ल है या (हालते अहराम में शिकार किये गए) ख़रगोश का मामला ज़्यादा ज़रूरी है? उन (ख़वारिज) ने जवाब दिया: क्यों नहीं! यही (मुसलमानो के दर्मियान सुलह करवाना ही) ज़्यादा अफ़ज़ल है। (फिर मैंने दूसरी दलील देते हुए कहा) अल्लाह तआला ने औरत और उसके शौहर के बारे में फ़रमाया: "अगर तुम्हें उनके दरमियान नाचाकी का ख़ौफ़ हो तो उस (मर्द) की तरफ़ से एक सालिस और उस (औरत) की तरफ़ से एक सालिस मुक़र्रर कर लो। [अननिसा : 35]" मैं तुम्हें अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि (इंसानी फ़ैसले से) उम्रे मुस्लिमीन की इस्लाह करना और अमन की ख़ातिर बाहमी ख़ून रेज़ी रोकना ज़्यादा अहम और अफ़ज़ल है या महज़ एक औरत के इज़्दवाजी मामले को संवारना ज़्यादा अफ़ज़ल है ? उन्होंने कहा: बिल्कुल ठीक ! फिर मैंने कहा : तुम्हारा ये ऐतराज़ कि सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ ने क़िताल तो किया मगर (फ़रीक़े मुख़ालिफ़ को) जंगी क़ैदी नहीं बनाया और ना (उनके माल से) ग़नीमत हासिल की। मुझे ये बताओ कि क्या तुम अपनी मां उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ को जंगी क़ैदी बनाना चाहते हो ? और दीगर जंगी क़ैदी ख़्वातीन की तरह उन्हें भी अपने लिए हलाल करना चाहते हो जबकि वो तुम्हारी मां हैं ! अगर तुम्हारा जवाब ये हो कि हम उन्हें दीगर क़ैदी औरतों की तरह हलाल जानते हैं तो तुम काफ़िर हो जाओगे और अगर ये कहो कि वो तुम्हारी मां ही नहीं तो फिर भी ये कुफ़्र होगा क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया है: "नबी मोमिनीन पर उन की जानों से बढ़कर हक़ रखते हैं और उनकी बीवियां उन (मोमिनीन) की माएँ हैं। [अलअह्ज़ाब : 6] इस तरह तुम दो बड़ी गुमराहियों में फंस गए और मुझे इनसे निकल के दिखाओ ? दूसरे ऐतराज़ का जवाब मिल गया ? उन्होंने कहा: जी हां! फिर मैंने कहा कि तुम्हारा ये ऐतराज़ कि (चूंकि हज़रत मुआविया ﷺ के ऐतराज़ करने पर, क्योंकि हज़रत मुआविया ﷺ सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ को ख़लीफ़ा नहीं तस्लीम करते थे इसलिए) सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ ने ख़ुद अपने मर्ज़ी से लफ़्ज़ अमीरुल मोमिनीन मिटवा दिया है तो इसका जवाब वो दूँगा जो तुम्हें पसंद होगा। देखो! रसूलुल्लाह ﷺ ने सुलह हुदैबिया में तहरीर कराते वक़्त अपना नाम "मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ " लिखवाया था, जिस पर कुफ़्फ़ार ने ऐतराज़ किया कि सारा झगड़ा ही इसी बात का है कि हम आपको अल्लाह तआला का रसूल नहीं मानते, चुनांचे आपने सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ (जो तहरीर लिख रहे थे) से इरशाद फ़रमाया कि ऐ अली ﷺ ! ये (अल्फ़ाज़) मिटा दो, ऐ अल्लाह तआला तुझे मालूम है कि मैं तेरा

रसूल हूँ, ऐ अली ﷺ ! ये लिख दो: "मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह"। (बाक़ी तफ़सील आगे हदीस नम्बर: 45 के तहत आ रही है)। अल्लाह तआला की क़सम! रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अली ﷺ से कहीं ज़्यादा बेहतर हैं फिर भी उन्होंने लफ़्ज़ "रसूलुल्लाह" को ख़ुद कहकर मिटवा दिया जिससे आप ﷺ की शाने नबुवत में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। तीसरे ऐतराज़ का जवाब भी मिल गया ? उन्होंने कहा: जी हां! चुनांचे (इस इल्मी मुबाहसे की बरकत) उनमें से 2000 अफ़राद उसी मौक़े पर ताइब होकर वापस लौट आए जबकि बाक़ी 4000 ख़वारिज मुजाहिर व अंसार सहाबा के हाथों गुमराही की हालत में मारे गए।

सुनन नसाई-अल-कुबरा 8575 इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने सहीह कहा है

24 मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा की एक हदीस में है: सय्यिदना तारिक़ बिन शहाब ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैं सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ के पास था तो उन से सवाल किया गया कि अहले नहरवान (यानी ख़वारिज) मुशरिकीन हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया कि (नहीं) शिर्क से तो वो भागे हैं (यानी मस्अला तहकीम पर उन्होंने तौहीद का ही तो बहाना बनाया था तो वो मुशरिक कैसे हो सकते हैं)। फिर पूछा गया तो क्या वो मुनाफ़िक़ हैं ? फ़रमाया नहीं! मुनाफ़िक़ीन तो अल्लाह तआला को बहुत ही कम याद करने वाले होते हैं (यानी ख़वारिज तो हद से ज़्यादा इबादत गुज़ार हैं तो वो मुनाफ़िक़ क्यों हो सकते हैं)" फिर पूछा गया कि आखिर वो (ख़वारिज) क्या है सय्यिदना अली ﷺ ने फ़रमाया: "ये (हमारे) ऐसे लोग है जिन्होंने हमारे ख़िलाफ़ बग़ावत की है (सिर्फ़ बाग़ी हैं मुशरिक या मुनाफ़िक़ नहीं) **सुनन अलकुबरा (बैहक़ी) की हदीस में है:** सय्यिदना नाफ़िअ ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ खशबया (خشبیہ मुख्तार सक़फ़ी के गिरोह के लोगों) और ख़वारिज को सलाम कहा करते थे हालांकि वो (मुसलमानों से) बरसरि क़िताल (हमेशा तैयार) रहते थे। सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाया करते: "जो حي علی الصلاۃ कहकर नमाज़ के लिए बुलाएगा मैं उसकी दावत क़बूल करूंगा (यानी उसके पीछे नमाज़ पढ़ूंगा) और حي علی الفلاح कहकर बुलाएगा मैं उसकी पुकार पर भी لَبَّيْكَ कहूँगा (यानी उसके पीछे नमाज़ पढ़ता रहूँगा)। मगर जो ये कहेगा की आओ मुसलमान भाईयों से जंग करें और उनका माल लूटें तो फिर मैं इनकार ही करूंगा।"

मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा 39097, सुनन अल कुबरा लिल बय्हकी 5305 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने अपनी किताब मकालात जुज़्ज़ 1 में सहीह कहा है

25 अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम और सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है: सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि ग़ज़वा ज़िलअशीरा के दौरान मैं और सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ सफ़र में साथ थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने वहां पड़ाव डाला और (कुछ देर) मुक़ीम रहे। इसी दौरान हमने बनी मदलज के कुछ लोगों को खज़ूर के बाग़ात में काम करते देखा तो सय्यिदना अली ﷺ और मैं उनके पास आए और कुछ देर तक उनका काम देखते रहे, फिर हम पर नींद ग़ालिब आ गई तो हम दोनों जाकर खज़ूर के छोटे पौधों में मिट्टी पर लेट कर सो गए। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ही ने आकर अपने पाव मुबारक से हमें हिलाकर बेदार फ़रमाया और हमारी हालत ये थी कि हम गर्द से ख़ूब आलूदा हो चुके थे। (इस मौक़े पर) रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना अली ﷺ से फ़रमाया: "ऐ अबुतुराब (यानी मिट्टी वाले) उठो! फिर फ़रमाया: "मैं तुम दोनों को सब इंसानों से बढ़कर दो बदबख़्त अफ़राद के बारे में ना बताऊं? "हमने अर्ज़ किया ज़रूर बताइए। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "(पहला बदबख़्त तो वो) क़ौमे समूद का अहीमर नामी शख़्स था जिसने ऊंटनी की कोंचें काट डाली थी और दूसरा (बदबख़्त) वो शख़्स है जो ऐ अली ﷺ ! तुम्हारे सिर पर तलवार से ज़रब लगाएगा और तुम्हारी ढाढ़ी को उस (निकलने वाले) ख़ून से रंग देगा।"

अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4679 इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने इमाम मुस्लिम कि तर्ज पर सहीह कहा है |
सिलसिला-तुस-सहीह 1743 इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी ने सहीह कहा है
सुनन नसाई-अल-कुबरा 8538 इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने किताब खासाइस-ए-अली में हदीस 8538 के तहत सहीह कहा है

नोट चौथे खलीफा राशिद सय्यिदना अली ﷺ की ख़िलाफ़त एक आख़िरी कोशिश थी कि सय्यिदना अबुबकर ﷺ और सय्यिदना उमर ﷺ कि उसी ख़िलाफ़त रशिदा महफ़ूज़ा को दोबारा बहाल कर दिया जाता कि जिस को तीसरे ख़लीफ़ा राशिद सय्यिदना उस्मान ﷺ के दौरे ख़िलाफ़त में (सय्यिदना उस्मान ﷺ ने खुद तो नहीं बल्कि उनके चंद रिश्तेदार) बनू उमय्या के शरीर गवर्नरों ने अमली तौर पर ख़िलाफ़त-ए-राशिदा मफतून बना दिया था और सहीहुलअसनाद अहादीस में इन फ़ितनो की पेशगोई भी पहले से मौजूद थी। लेकिन सय्यिदना अली ﷺ की शहादत के बाद कौमे समूद की तरह इस उम्मत पर भी मलूकियत का अजाब मुसल्लत हो गया जो आज तक किसी न किसी शक्ल में बाक़ी है। चुनाँचे इसी ज़िमन में **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम और मज्म-उज्ज-ज़वाइद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाया करते: "मुझे पूरी ज़िन्दगी किसी भी चीज़ का इतना अफ़सोस नहीं है जितना इस बात पर कि मैं ने सय्यिदना अली ﷺ के साथ मिलकर (कुरआनी हुक्म: अन निसा:59 और अल हुजरात:9 के मुताबिक़) बाग़ी गरोहों के ख़िलाफ़ जंग (जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान) नहीं की।"

अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4679 इस हदीस को इमाम हाकिम ने सहीह कहा है
मज्म-उज्ज-ज़वाइद 12054 इस हदीस को इमाम हैशमी ने सहीह कहा है

C रसूल्लाह ﷺ ने अपनी वफ़ात से एक महीना क़ब्ल मुस्तक़्बिल में होने वाले हकूमती बिगाड़ से मुताल्लिक़ ग़ैय्बी ख़बरें दे दीं थीं !

26 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना उक्बा बिन आमिर رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने 8 साल बाद (यानी अपनी वफ़ात वाले साल 11 हिजरी में) उहद के शहीदों का जनाज़ा (उहद के मैदान के कब्रिस्तान में) पढ़ा (और आप ﷺ का अंदाज़ यूं था कि) गोया आप ज़िंदों और मुर्दों हर एक से रुख़्सत होने वाले हैं। फिर आप ﷺ मिम्बर पर चढ़े और फ़रमाया: "मैं तुम्हारा पेशरो हूँ और मैं तुम पर गवाह भी हूँ और (आइंदा) तुम्हारी और मेरी मुलाक़ात हौज़ (कौसर) पर होगी, जिसे मैं यहीं से इस वक़्त देख रहा हूँ। और बेशक मुझे ज़मीन के खजानों की चाबियाँ अता फरमाई है (यानि मेरी उम्मत को सल्तनत रोम और सल्तनत फारिस के खज़ानो का मालिक बनाया जायेगा) मुझे (अपने बाद) तुम्हारे मुताल्लिक़ ये ख़ौफ़ नहीं कि तुम मुशरिक हो जाओगे लेकिन इस बात से डरता हूँ कि दुनिया में मगन हो जाओगे।"
सय्यिदना उक्बा رضی اللہ عنہ का बयान है कि उस मौक़े पर मैंने आप ﷺ को आख़री बार देखा। **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना उक्बा बिन आमिर رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मक़्तूलीन ए उहद का जनाज़ा पढ़ा और फिर मिम्बर पर चढ़े इस अंदाज़ से कि गोया ज़िंदों और मुर्दों को अलविदा कहने वाले हों फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं हौज़ (कौसर) पर तुम्हारा पेशरो हूँ और उस (हौज़े कौसर) की चौड़ाई ऐला और जअफ़ा (की दर्मियानी मसाफ़त) के बराबर है, मुझे ये ख़ौफ़ बिल्कुल नहीं कि तुम (यानी सहाबा किराम رضی اللہ عنہم) मेरे बाद शिर्क करने लग जाओगे मगर डर इस बात का है कि तुम दुनिया के मुश्ताक़ बन जाओगे और (दुनिया की ख़ातिर) आपस में क़िताल करोगे और बिल आख़िर हलाक हो जाओगे जिस तरह तुम से पहले के लोग हलाक हो चुके हैं।" सय्यिदना उक्बा رضی اللہ عنہ का बयान है: "उसी मौक़े पर मैंने आख़री बार मिम्बर पे आपका दीदार किया था।" सहीह बुखारी 4042, सहीह मुस्लिम 5977

27 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि (फ़तह मक्का पर जब अबुसूफ़ियान رضی اللہ عنہ ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो) मुसलमान ना तो हज़रत अबुसूफ़ियान رضی اللہ عنہ की तरफ़ देखते थे ना ही उनके साथ बैठते थे (क्योंकि हज़रत अबुसूफ़ियान رضی اللہ عنہ ने इस्लाम लाने से पहले पूरी ज़िंदगी मुसलमानों से जंगें कीं और मुसलमानों को तकालीफ़ दी थीं)। चुनांचे हज़रत अबुसूफ़ियान رضی اللہ عنہ ने रसूलुल्लाह ﷺ से दख़्वास्त की कि आप ﷺ मेरी 3 बातें पूरी फ़रमा दें। आप ﷺ ने फ़रमाया : ठीक है । चुनांचे हज़रत अबुसूफ़ियान رضی اللہ عنہ ने अर्ज़ किया मेरी बेटी सय्यिदा उम्मे हबीबा رضی اللہ عنہا से निकाह फ़रमा लें। आप ﷺ ने फ़रमाया ठीक है, फिर उन्होंने अर्ज़ किया कि आप ﷺ मुझे हुक्म दे कि मैं अब कुफ्फार के साथ भी लड़ूं जैसा कि पहले मुसलमानों के साथ लड़ता रहा | आप ﷺ ने फ़रमाया ठीक है फिर अर्ज़ किया कि आप ﷺ मेरे बेटे मुआविया को अपना क़ातिब (लिखाई करने वाला) मुक़र्रर फ़रमा लें। आप ﷺ ने फ़रमाया ठीक है। इस हदीस के रावी सय्यिदना अबुज़मील ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि अगर हज़रत अबुसूफ़ियान رضی اللہ عنہ ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से दख़्वास्त ना करते तो आप ﷺ कभी भी हज़रत अबुसूफ़ियान رضی اللہ عنہ को ये (सम्मान) अता नही फ़रमाते। क्योंकि आपकी आदत मुबारका थी कि जब भी कोई आप से किसी शै(वस्तु) से मुताल्लिक़ सवाल करता तो आप कभी इन्कार नहीं फ़रमाते थे। **सहीह मुस्लिम की ही एक और हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि मैं बच्चों के साथ खेल रहा था कि रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए तो मैं दरवाज़े के पीछे छुप गया। आपने आकर (प्यार से) मुझे गुद्दी पर हल्की सी ज़रब लगाई और फ़रमाया: "जाओ और मुआविया رضی اللہ عنہ को मेरे पास बुलाकर लाओ।" सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ बयान फरमाते है कि मैं गया और (वापस आकर) बताया कि वो खाना खा रहे हैं आप ﷺ (कुछ देर बाद) फिर फ़रमाया: "जाओ और मुआविया رضی اللہ عنہ को मेरे पास बुलाकर लाओ।" मैं फिर से गया और आकर बताया कि वो खाना खा रहे हैं तो आप ﷺ फ़रमाया: "अल्लाह तआला उस (मुआविया رضی اللہ عنہ) का पेट कभी ना भरे ।" **दलाइल-लुन-नबुवा लिल बय्हकी की एक हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि मैं बच्चों के साथ खेल रहा था कि रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए तो मुझे ये ख़्याल गुज़रा कि आप ﷺ मेरी तरफ़ ही आए हैं, चुनांचे मैं छुप गया, मगर (आप ﷺ ने मुझे ढूंड निकाला) आप ﷺ ने मुझे हल्की से चपत लगाई और फ़रमाया: "जाओ और मुआविया رضی اللہ عنہ को मेरे पास बुलाकर लाओ।" और वो (हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ) वहिह लिखा करते थे। मैं गया और उन्हें पैग़ाम दिया तो जवाब में कहा कि वो खाना खा रहे हैं। मैंने आकर आप ﷺ को बता दिया। आप ﷺ ने (कुछ देर बाद) फिर फ़रमाया: "जाओ और मुआविया رضی اللہ عنہ को मेरे पास बुलाकर लाओ।" मैं फिर गया तो वही जवाब मिला कि वो खाना खा रहे हैं, मैंने फिर आप ﷺ को सारी बात बता दी। फिर आप ﷺ ने तीसरी मरतबा फ़रमाया: "अल्लाह तआला उसका पेट कभी ना भरे इस हदीस के रावी सय्यिदना अबु हमज़ा رحمہ اللہ फ़रमाते हैं: उन (हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ) का पेट कभी भी भर ना सका।" फिर इमाम बैय्हक़ी رحمہ اللہ लिखते हैं: "रावी (सय्यिदना अबुहमज़ा رحمہ اللہ) के ये अल्फ़ाज़ इस बात की दलील हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ की (हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ से मुताल्लिक़ की हुई) दुआ क़बूल हो गई।"

सहीह मुस्लिम 6409 , 6628 , दलाइल-लुन-नबुवा लिल बय्हकी 2506 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने तौज़ीहल अहकाम जुज़ 2 और शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने क़िताब अल सुन्नह पेज 49 सहीह कहा है ।

नोट इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी ﷺ (अलमुतवफ्फा 852 हिजरी लिखते हैं : "इमाम बुखारी ﷺ ने यहां (सहीह बुखारी में हज़रत मुआविया ﷺ से मुताल्लिक़ बाब के उन्वान में) सिर्फ़ लफ़्ज़ "ज़िक्र ए मुआविया" बयान किया और फ़ज़ीलत या मंक़बत जैसे अल्फ़ाज़ ज़िक्र नहीं किए क्योंकि उस हदीस से कोई फ़ज़ीलत मालूम नहीं होती। अल्बत्ता सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ का हज़रत मुआविया ﷺ के लिए फ़की और सहाबियत का बयान ही बतौरे फ़ज़ीलत काफ़ी है। ताहम इमाम इब्ने अबीआसिम ﷺ ने हज़रत मुआविया ﷺ के मनाक़िब में एक रिसाला लिखा है। इसी तरह का काम अबुउमर ग़ुलाम सअलब और अबुबकर नक़्क़ाश ने भी किया है और इमाम इब्ने जौज़ी ﷺ ने भी (मनघड़त अहादीस की निशानदही करने वाली उनकी मशहूर किताब) "अलमौज़ूआत" में भी कुछ रिवायात ज़िक्र करके इमाम इस्हाक़ बिन राहविया ﷺ का ये क़ौल भी नक़्ल किया है: "हज़रत मुआविया ﷺ की फ़ज़ीलत में (सहाबियत के सिवा) कोई चीज़ साबित नहीं है। (इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी ﷺ मज़ीद लिखते हैं ।) यही वजह है कि इमाम बुखारी ﷺ ने अपने उस्ताद (इमाम इस्हाक़ बिन राहविया ﷺ पर एतमाद करते हुए (हज़रत मुआविया ﷺ के ज़िक्र में) लफ़्ज़ फ़ज़ीलत या मंक़बत इस्तेमाल करने से गुरेज़ किया है, ताहम अपनी गहरी नज़र से ऐसा इस्तन्बात फ़रमाया (यानी हज़रत मुआविया ﷺ को सहाबी साबित किया है) कि जिससे रवाफ़िज़ की सरकोबी हो गई है। और इमाम नसाई ﷺ का वाक़्या इस बारे में मशहूर है कि उन्होंने भी अपने उस्ताद (इमाम इस्हाक़ बिन राहविया ﷺ) के क़ौल पर एतमाद किया (और अपनी मशहूर किताब "फ़ज़ाइल ए सहाबा ﷺ" में कोई हदीस हज़रत मुआविया ﷺ की फ़ज़ीलत से मुताल्लिक़ नहीं जमा फ़रमाई) और फिर इमाम हाकिम ﷺ का क़िस्सा भी इसी तरह है। इमाम इब्ने जौज़ी ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन अहमद ﷺ से उनके वालिद इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ का मकालमा भी ज़िक्र किया है कि उन्होंने अपने वालिद इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ से पूछा कि सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ और हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ के (इख़्तिलाफ़ात से) मुताल्लिक़ आपकी क्या राय है ? इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ ने थोड़ी देर तक सिर झुकाए रखा फिर फ़रमाया: "(मेरे बेटे! ख़ूब) समझ लो कि सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ के दुश्मन बहुत ज़्यादा थे, जिन्होंने उनके उयूब (कमियों) तलाश करना चाहे मगर नाकाम रहे। चुनांचे उन दुश्मनों ने (एक मुताबादिल चाल के तौर पर) एक दूसरे शख़्स (हज़रत मुआविया ﷺ) को मक़्सद बर्दारी के लिए मौज़ूं पाया जो उनसे जंग कर चुका था । चुनांचे उन दुश्मनों ने सय्यिदना अली ﷺ के मुक़ाबले पर उन (हज़रत मुआविया ﷺ को) बढ़ा चढ़ा कर पेश किया। (इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी ﷺ मज़ीद लिखते हैं) "इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ के इस जवाब में इशारा है कि कुछ लोगों ने हज़रत मुआविया ﷺ के लिए बेबुनियाद फ़ज़ाइल गढ़ लिए जिनकी कोई अस्लियत नहीं है। ये हक़ीक़त है कि हज़रत मुआविया ﷺ के लिए फ़ज़ीलत की रिवायत तो बहुत सी हैं मगर उन अहादीस में से कोई भी (उसूले मुहद्दिसीन पे) इस्नादी हैसियत से सहीह नहीं है। (इसीलिए) इमाम इस्हाक़ बिन राहविया ﷺ और इमाम नसाई ﷺ ने इस मौक़िफ़ को बड़े यक़ीन के साथ इख़्तियार किया है।" ("यानि सहाबियत के सिवा हज़रत मुआविया ﷺ के फ़ज़ाइल से मुताल्लिक़ कोई भी सहीह हदीस नक़ल नहीं हुई है") फ़तहुल बारी (शरह सहीह बुखारी) इब्ने हजर अस्कलानी के तहत "बाब ज़िक्र-ए-मुआविया", सहीह बुखारी 3766

28 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन अब्दुर्रबुलकाबा ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैं मस्जिद में आया तो देखा कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ क़ाबा के साए में तशरीफ़ फ़रमा हैं और उनके गिर्द लोगों का हुजूम है तो मैं भी उनके पास आ बैठा। उन्होंने फ़रमाया "एक मरतबा हम रसूलुल्लाह ﷺ के हमराह सफ़र में थे। एक जगह पड़ाव किया तो कुछ लोग वहां अपने खैमें दुरुस्त करने लग गए तो कुछ तीर अन्दाज़ी (की प्रैक्टिस) में मश्ग़ूल हो गए जब कि कुछ लोग मवेशी चराने लगे। (इसी दौरान) अचानक रसूलुल्लाह ﷺ के मुनादी ने सदा लगाई "नमाज़ इकठ्ठा करने वाली है" (दरअस्ल इन अल्फ़ाज़ से उस वक़्त लोगों को जमा किया जाता था) ये सुनकर हम सब रसूलुल्लाह ﷺ के पास जमा हो गए तो आप ﷺ ने ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया "मुझ से पहले भी हर नबी ﷺ का ये फ़र्ज़ था कि वो अपनी उम्मत को उनकी भलाई (के रास्ते) की ख़बर दे और उनको शर (के रास्ते) से ख़बरदार करे। और तुम्हारी इस उम्मत (उम्मते मुहम्मदिया ﷺ) की आफ़ियत (ख़ैरियत और भलाई) का वक़्त इसका इब्तदाई दौर है। बहुत जल्द इसके बाद वाले दौर में ऐसी मुसीबतें और(फ़ितने वाली) चीज़ें आ गईं कि तुम उनसे नाआश्ना (बेख़बर) हो गए। ऐसे फ़ितने उठेंगे कि हर नया आने वाला फ़ित्ना पिछले से बदतर होगा। यहां तक कि ऐसा फ़ितना भी आएगा कि मोमिन कह उठेगा कि इसी (फ़ितने) में मेरी मौत होगी मगर वो फ़ितना छट जाएगा। फिर ऐसा फ़ितना आएगा कि मोमिन पुकार उठेगा कि ये सब बढ़कर है लिहाज़ा जो चाहे कि उसे जहन्नम से दूर हटाया जाए और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए तो उसे चाहिए कि उस की मौत इस हाल में आए कि वो अल्लाह तआला और आख़िरत पर (कामिल और हक़ीक़ी) ईमान रखता हो और लोगों के साथ वही बर्ताव करे जो वो लोगों से अपने हक़ में करवाना चाहता है। और जो इमाम (यानी वक़्त के हुक्मरां) की बैअत कर ले और दिल व जान से इताअत क़बूल कर ले, उससे जहां तक हो सके इताअत करनी चाहिए फिर अगर कोई और आकर उस (पहले हाकिम) से (इक्तदार के लिए) झगड़ा करे तो दूसरे (मुद्दई इक्तदार) की गर्दन मार दो" अब्दुर्रहमान बिन अब्दुर्रबुलकाबा ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं (ये हदीस सुनकर) मैं उन (हदीस बयान करने वाले सहाबी सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ) के क़रीब हुआ और अर्ज़ किया "मैं आपको अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि आपने

क्या ये सारी बातें ख़ुद रसूलुल्लाहﷺ से सुनी हैं ? "(मेरे इस सवाल पर) उन्होंने अपने दोनों हाथ कानों और दिल पर ले जाकर कहा: "हां! मेरे कानों ने (ख़ुद रसूलुल्लाहﷺ से इस हदीस को) सुना और मेरे दिल ने इसे महफ़ूज़ कर लिया।" फिर मैंने अर्ज़ किया "(आप हमें अमीर की इताअत पर उभार रहे हैं जबकि हमारा हुक्मरान और) आपके चचा के बेटे हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ तो हमें हुक्म देते हैं कि हम आपस में एक दूसरे के अम्वाल हराम तरीक़े से खाएं और आपस में एक दूसरे को क़त्ल करें (यानी मुसलमान से लड़े) हालांकि अल्लाह तआला तो हमें हुक्म देता है "ऐ ईमान वालो! अपने अम्वाल आपस में हराम तौर पर मत खाओ, सिवाए इसके कि तुम्हारी बाहमी रज़ामंदी से तिजारत हो और अपनी जानों को क़त्ल ना करो, यक़ीनन अल्लाह तआला तुम पर बहुत मेहरबान है।" [अननिसा: 29] (मेरा ये सवाल सुनकर) वो (सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنہ) कुछ देर तक तो ख़ामौश रहे फिर फ़रमाया "अल्लाह तआला की इताअत (के कामों) में उन (हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ) की इताअत करो, और अल्लाह तआला की नाफ़रमानी (के कामों) में उनकी नाफ़रमानी करो।"

सहीह मुस्लिम 4776

29 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाहﷺ की हयात ए मुबारका में (रमज़ान के रोज़ों का) फ़ितराना, हर छोटे बड़े, आज़ाद और ग़ुलाम की तरफ़ से एक साअ (तक़रीबन अढाई किलो) अश्याए ख़ूर्दनी (यानी अनाज मसलन गन्दुम और जौ वग़ैरह) का निकाला करते, या फिर एक साअ पनीर, या एक साअ जौ, या एक साअ खजूर, या एक साअ मुनक़्क़ा निकाला करते थे। पस ये सुन्नत अमल इसी तरह जारी रहा यहां तक कि हमारे पास हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ (सरज़मीन शाम से) हज या उमरा के लिए आए और उन्होंने मिम्बर पर लोगों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया , मैं समझता हूँ कि शामी गंदुम के 2 मुद्द (निस्फ़ साअ) एक साअ खजूर के बराबर हैं। " चुनांचे लोगों ने भी उसी (राय व इज्तहाद) पर अमल शुरू कर दिया तो सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "जहां तक मेरा ताल्लुक़ है, मैं तो ज़िंदगी भर उसी तरह (सुन्नत के मुताबिक़ फ़ितराना एक साअ ही) निकालता रहूँगा जैसे मैं ज़िन्दगी भर निकालता रहा हूँ।" सहीह मुस्लिम 2284

30 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबुक़लाबा ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैं सरज़मीने शाम (सीरिया) में सय्यिदना मुस्लिम बिन यसार رحمہ اللہ के (इल्मी) हल्क़े में मौजूद था कि वहां सय्यिदना अबुअशअत ताबई رحمہ اللہ तशरीफ़ लाए, तो लोगों ने कहना शुरू कर दिया , अबुअशअत आ गए, अबुअशअत आ गए (यानी आने पर ख़ुशी का इज़हार किया)। चुनांचे जब वो तशरीफ़ फ़र्मा हो गए तो मैंने सय्यिदना अबुअशअत رحمہ اللہ से दर्ख़्वास्त की कि हमें सय्यिदना उबादा बिन सामित رضی اللہ عنہ वाली हदीस तो सुना दें। उन्होंने फ़रमाया ठीक है "(ग़ौर से सुनो) हमने बहुत सारी जंगी महमात सर कीं और बकसरत माले ग़नीमत हासिल किया और उन दिनों हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ हमारे हुक्मरान थे। हमारे माले ग़नीमत में चाँदी के बर्तन भी थे, हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि इन बर्तनों को लोगों की तंख़्वाहों के बदले फ़रोख़्त कर दे। लोगों ने उस सौदे में बहुत दिल चस्पी से हिस्सा लिया। जब ये बात सय्यिदना उबादा बिन सामित رضی اللہ عنہ तक पहुंची तो उन्होंने इस अमल की ऐलानिया मुख़ालफ़त करते हुए फ़रमाया "मैंने ख़ुद रसूलुल्लाहﷺ को फ़रमाते हुए सुना कि आपﷺ सोने को सोने, चाँदी को चांदी, गन्दुम को गन्दुम, जौ को जौ, खजूर को खजूर और नमक को नमक के बदले ख़रीदने और बेचने से मना फ़रमाते थे सिवाए इसके कि (इनमें से हर चीज़) वो आपस में बराबर वज़न और जिंसवाली हो, लिहाज़ा जिसने लेने या देने मे (वज़न की) कमी बेशी की उसने सूद का इरतिकाब किया। चुनांचे (ये सुनकर) लोगों ने ख़रीदे हुए वो चाँदी के बर्तन वापस लौटा दिये। जब ये ख़बर हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ तक पहुंची तो उन्होंने भी ख़ुत्बा दिया और कहा "इन लोगों को क्या हो गया कि रसूलुल्लाहﷺ से ऐसी अहादीस बयान करते हैं कि जो हमने नहीं सुनीं हालांकि हम भी तो आपﷺ की मज्लिस में हाज़िर हुआ करते थे"। (उस हदीस मुबारका पर ये ऐतराज़ सुनकर) सय्यिदना उबादा बिन सामित رضی اللہ عنہ ने फिर ऐलानिया वही हदीस दुहराई और फ़रमाया "हमने जो रसूलुल्लाहﷺ से सुना है उसे ज़रूर बयान करेंगे, ख़्वाह मुआविया رضی اللہ عنہ उसे नापसंद करें या कहें कि ख़्वाह हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ की नाक ख़ाक आलूदह हो जाए। और मुझे इस बात की भी परवाह नहीं कि मुझे (इस हक़गोई पे) तारीक रात में उनके लश्कर से अलग होना पड़ जाएगा।" सहीह मुस्लिम 4061

31 सुनन अबुदाऊद की हदीस में है: सय्यिदना खालिद ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ और अम्र बिन असवद और बनीअसद का एक शख्स, हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ के पास वफद बन कर गए, (इस मौक़े पर मुलाक़ात के दौरान) हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ से कहा: "क्या तुम्हें मालूम है कि सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ फौत हो गए हैं?" (नोट: सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ को एक साज़िश के तहत शहीद किया गया था जिसकी तफसील हदीस नम्बर 50 के तहत आ रही है) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने फ़ौरन पढ़ा إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ । एक शख्स (हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ जिनका नाम अगले तरीक़ में है) ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ से कहा: "तुम इसे (यानी सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ की मौत को) मुसीबत समझते हो?" (نعوذ بالله من ذلك) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया: "मैं इसे

मुसीबत क्योंकर नही समझूँ हालाँकि मैने खुद देखा था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ को अपनी गोद मुबारक में बैठाया हुआ था और इरशाद फ़रमाते थे: "ये (हसन رضی اللہ عنہ) मुझ (मुहम्मद ﷺ) से है और हुसैन رضی اللہ عنہ अली رضی اللہ عنہ से है।" बनू असद में से एक शख्स ने कहा: "वह (हसन رضی اللہ عنہ) तो एक अंगारा था जिसे अल्लाह ताआला ने बुझा दिया।" (نعوذ باللہ من ذلك) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने (ये बातें सुनने के बाद गुस्से में आकर इरशाद) फ़रमाया: "मैं उस वक़्त तक यहाँ से नही उठूँगा जब तक तुझ (हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ) को गुस्सा नही दिलाऊं और ऐसी बात नही सुनाऊं जो तुझे नही पसंद हो। ऐ मुआविया رضی اللہ عنہ ! अगर मैं सच बयान करूँ तो मेरी तसदीक़ कर देना और अगर मैं झूठ बोलूं तो मेरी तरदीद कर देना।" हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने कहा कि ठीक है। चुनांचे हज़रत मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने पूछा: "मैं तुझे अल्लाह तआला का वासता देकर पूछता हूँ कि तूने खुद रसूलुल्लाह ﷺ को सोना पहनने से मना फरमाते हुए सुना था?" हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने कहा: "हाँ!" फिर सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने पूछा: "मैं तुझे अल्लाह तआला का वासता देकर पूछता हूँ कि तूने खुद रसूलुल्लाह ﷺ को रेशम पहनने से मना फ़रमाते हुए सुना था?" हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने कहा: "हाँ!" फिर सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने पूछा: "मैं तुझे अल्लाह ताआला का वास्ता देकर पूछता हूँ तूने खुद रसूलुल्लाह ﷺ को दरिंदों की खालों (के लिबास) को पहनने से और उन पर (कालीन के तौर पर) बैठने से रोका था?" हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने कहा: "हाँ!" फिर सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला की क़सम! ऐ मुआविया رضی اللہ عنہ ये सब (हराम वस्तुए इस्तेमाल होती हुई) मैंने तेरे घर में देखी हैं।" ये सुनकर हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने कहा: "ऐ मिक्दाम बिन मअदीकरब ! मुझे पता है कि मैं तुम से जीत नहीं सकता।" सय्यिदना खालिद ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि फिर हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ के लिए उन के दोनों साथियों से बढ़कर इनआम व इकराम का हुक्म सादिर किया। और सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने सारा माल अपने साथियों में वहीं बाँट दिया और असदी ने किसी को कुछ भी न दिया। इस बात कि ख़बर जब हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ को हुई तो उन्होंने कहा: "सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ तो वाक़ई एक सखी शख्स हैं जिन्होंने दिल खोल के दे दिया और जो असदी शख्स है वो अपने माल को अच्छी तरह से सँभालने वाला है।" **मुसनद अहमद की एक हदीस में है:** सय्यिदना खालिद बिन मअदान ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ और अम्र बिन असवद हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ से मिलने आए तो हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ से कहा: "क्या तुमे मालूम है कि सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ फौत हो गए हैं?" सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने फ़ौरन पढ़ा: إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ इस पर हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ से कहा: "तुम इसे (यानी सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ की मौत को) मुसीबत समझते हो?" (نعوذ باللہ من ذلك) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया: "मैं इसे मुसीबत क्यों नही समझूँ हालाँकि मैंने खुद देखा था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ को अपनी गोद में बैठाया हुआ था और इरशाद फ़रमा रहे थे: "ये (हसन رضی اللہ عنہ) मुझ (मुहम्मद ﷺ) से है और हुसैन رضی اللہ عنہ अली رضی اللہ عنہ से है।" **मुसनद अहमद कि हदीस में है:** सय्यिदना अबुल्लाह बिन बरीरा ताबई رحمہ اللہ बयान फ़रमाते हैं कि मैं और मेरे वालिद सय्यिदना बरीरह رضی اللہ عنہ हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ के पास मिलने गए। हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने हमें फर्शी नशिस्त (यानी कालीन) पर बिठाया, फिर खाना लाया गया जो हमने तनावुल किया, फिर हमारे सामने एक मशरूब लाया गया जो हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने पीने के बाद (वह मशरूब वाला बर्तन) मेरे वालिद को पकड़ा दिया तो उन्होंने (सय्यिदना बरीरा رضی اللہ عنہ) ने फ़रमाया: "जब से इस मशरूब को रसूलुल्लाह ﷺ ने हराम क़रार दिया है, तब से मैने इसे कभी नोश नहीं किया।" फिर हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ फरमाने लगे: "मैं कुरैशी नौजवानों में सबसे हसीन तरीन और ख़ूबसूरत दांतों वाला नौजवान था और जवानी के उन दिनों मेरे लिए दूध और अच्छे किस्सा गो आदमी से बढ़कर कोई चीज़ लज़्ज़त आवर नहीं होती थी।"

सुनन अबु दाऊद 4131, मुसनद अहमद 17321 (जिल्द 7, पेज 141) इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है।
मुसनद अहमद 23329 (जिल्द 10, पेज 661) इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई, शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है

D चौथे ख़लीफ़ा राशिद सय्यिदना अली ﷺ के फ़ज़ाइल का बयान और उन पर मिंबरों से लाअनत करने की बिद्अत कब और किसने ईजाद की थी ?

32 **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु हमज़ा अन्सारी ताबई ﷺ बयान करते हैं कि मैंने सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ को सुना कि वो फ़रमाया करते, "पहला शख़्स जो इस्लाम लाया वो सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ थे।" **सुनन नसाई अल कुबरा की हदीस में है ,** "पहला शख़्स जिसने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ (हरम में बाजमाअत) नमाज़ अदा की वो सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ थे।" **सुनन नसाई अल कुबरा की एक हदीस में है:** " बेशक़ पहला शख़्स जिसने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इस्लाम क़ुबूल किया वो सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ थे।" **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है** "बेशक पहला शख़्स जो इस्लाम लाया वो सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ थे।" **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की एक और हदीस में है,** इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ फ़रमाते थे, "रसूलुल्लाह ﷺ के तमाम सहाबा किराम ﷺ में से किसी भी और शख़्सियत के लिए (अहादीस ए मुबारका में) इतने ज़्यादा फ़ज़ाइल नहीं आए हैं जितने कि सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ के लिए आए हैं।"

जामिया त्रिमिज़ी 3735 इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है
सुनन नसाई-अल-कुबरा 8391, 8392 इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने किताब खासाइस-ए-अली में सहीह कहा है
अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4663 इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने सहीह कहा है
अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4572 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने क़िताब फ़ज़ाइल ए सहाबा में सहीह कहा है

33 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना यज़ीद बिन हयान ताबई ﷺ बयान करते हैं कि मैं, हुसैन बिन सबरा ताबई ﷺ और अमर बिन मुस्लिम ताबई ﷺ सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से मिलने गए। जब हम उनके पास जा बैठे तो हुसैन ﷺ ने उन्हें मुख़ातिब करके अर्ज़ किया "ऐ ज़ैद ﷺ ! आपने तो बहुत ज़्यादा ख़ैर पाई है, रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ियारत की है, आप ﷺ के फ़रामीन सुने हैं, आप ﷺ के साथ ग़ज़्वात (जिहाद) में शिर्कत की और आप ﷺ की इक़्तदाअ में नमाज़ें भी पढ़ीं। ऐ ज़ैद ﷺ ! वाक़ई आप ﷺ ने बहुत भलाई हासिल की है तो अब हमें वो अहादीस भी तो सुनाइए जो आप ﷺ ने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से समाअत फ़रमाई थीं।" सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ ने फ़रमाया : "बेटा ! अल्लाह तआला की क़सम मेरी उमर बुहत ज़्यादा हो चुकी है और काफ़ी अर्सा बीत गया है और रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी हुई कुछ बातें तो मैं भूल चुका हूँ, लिहाज़ा जो बयान करूँ उसी पर इक्तफ़ा करना और जो ना बता सकूं तो उसके लिए मुझे मजबूर ना करना।" फिर सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ फरमाने लगे: "एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ मक्का और मदीना के दर्मियान ख़ुम नामी एक गाँव में पानी के तालाब के पास (हज्जतुलविदा से वापसी पर 18 ज़ुलहिज्जा 10 हिजरी में अपनी वफ़ात से तक़रीबन दो माह क़ब्ल) हमें ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाने के लिए खड़े हुए, चुनांचे आप ﷺ ने (अल्लाह तआला की) हम्द ओ सना और वज़ व नसीहत करने के बाद इरशाद फ़रमाया: "ऐ लोगो! मैं भी एक इंसान हूँ, क़रीब है कि जल्द ही मेरे रब का क़ासिद (यानी मौत का फ़रिश्ता) आए और मैं उसे लब्बैक कह दूँ (यानी इस दुनिया से रुख़्सत हो जाऊं)। मैं (अपने बाद) तुम में दो भारी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, (उनमें से) पहली तो अल्लाह तआला की किताब (कुरआने हकीम) है जिस में हिदायत का सामान और नूर है, लिहाज़ा तुम अल्लाह तआला की किताब को थाम लो और मज़बूती से पकड़ लो।" फिर आप ﷺ ने अल्लाह तआला की किताब को थामने की ख़ूब तर्ग़ीब दिलाई, फिर फ़रमाया: "और (दूसरी भारी चीज़) मेरे अहले बैअत हैं, मैं तुम्हें अपने अहले बैअत के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का ख़ौफ़ याद दिलाता हूँ, मैं तुम्हें अपने अहले बैअत के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का ख़ौफ़ याद दिलाता हूँ, मैं तुम्हें अपने अहले बैअत के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का ख़ौफ़ याद दिलाता हूँ, (यानी मेरे बाद उन के साथ मेरी निस्बत की वजह से हुस्ने सुलूक करना)। हुसैन ताबई ﷺ ने सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से अर्ज़ किया "आप ﷺ के अहले बैअत कौन हैं? क्या आप ﷺ की बीवियां ﷺ आपके अहले बैअत में शामिल नहीं हैं ?" (सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ ने) फ़रमाया: "आप ﷺ की बीवियां (भी) आपके अहले बैअत से हैं, लेकिन (उस हदीस में) आप ﷺ के अहले बैअत से मुराद (सिर्फ़) वो हैं जिन पर आप ﷺ के बाद (अल्लाह ताआला की तरफ़ से) सद्क़ा (खाना) हराम कर दिया गया है।" (हुसैन ताबई ﷺ ने) पूछा वो कौन से लोग मुराद हैं ? (सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ ने) फ़रमाया: "वो हैं: आलेअली ﷺ, आलेअक़ील ﷺ, आलेजाफ़र ﷺ, और आलेअब्बास ﷺ ।" (हुसैन ताबई ﷺ ने) पूछा: "क्या उन सब पर ही सद्क़ा हराम है?" (सय्यिदना ज़ैद ﷺ ने) फ़रमाया: "हां।" **सहीह मुस्लिम की एक और हदीस में है:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "ख़बरदार हो जाओ! मैं (अपने बाद) तुम में दो भारी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, (उनमें से) पहली तो अल्लाह तआला की किताब (कुरआन ए हकीम) है जो अल्लाह तआला की रस्सी है, जो उसकी पैरवी करेगा, हिदायत पर क़ाइम रहेगा, और जो उसे छोड़ देगा, वो गुमराही में जा पड़ेगा।" और उसी हदीस में है कि ताबईन ने जब पूछा कि आप ﷺ के अहले बैअत कौन हैं? क्या आप ﷺ की बीवियाँ ﷺ उनमें हैं ? (तो सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ ने) फ़रमाया: "नहीं अल्लाह तआला की क़सम! बीवी तो एक लम्बा वक्त मर्द के साथ

रहती है, फिर वो (ख़ाविन्द) उसे तलाक़ दे देता है, तो वो अपने मैके और ख़ानदान में लौट जाती है। (आपﷺ के) अहले बैअत तो आपﷺ का असल ख़ानदान और दधियाल वाले रिश्तेदार हैं जिन पर आपﷺ के बाद सद्क़ा हराम था।" **अस्सुन्नह इब्ने अबुआसिम की हदीस में है:** सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ मक़ाम ए ख़ुम में सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ का हाथ थामे हुए, ख़ुत्बे के लिए खड़े हुए और फिर इरशाद फ़रमाया: "ऐ लोगो ! क्या तुम गवाही नहीं देते कि अल्लाह तआला तुम्हारा रब है ? " सबने अर्ज़ किया: "क्यों नहीं! (हम गवाही देते हैं)" फिर आपﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम इस बात की भी गवाही नहीं देते हो कि अल्लाह तआला और उसका रसूलﷺ तुम्हारी अपनी जान से बढ़कर तुम पर हक़ रखते हैं?" तमाम सहाबा किराम ने अर्ज़ किया: "क्यों नहीं! (हम गवाही देते हैं)" आपﷺ ने फ़रमाया: "और ये कि अल्लाह तआला और उसका रसूलﷺ तुम्हें सबसे बढ़कर महबूब हैं ? तमाम सहाबा ने अर्ज़ किया: "क्यों नहीं! (बेशक ऐसा ही है)। फिर आपﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "तो फिर (सुन लो कि) जिसका मौला (दिली महबूब) मैं हूँ तो उसका मौला (दिली महबूब) ये (अली ﷺ) भी हैं।" **सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अबुतुफ़ैल आमिर बिन वासला ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ ने (जंगे सिफ़्फ़ीन के मौक़े पर) लोगों को एक खुली जगह में इकठ्ठा किया और फिर उनसे फ़रमाया: "मैं अल्लाह तआला का वास्ता देकर हर उस शख़्स से पूछता हूँ कि जिसने गद्हीर-ए-ख़ुम में रसूलुल्लाहﷺ को ये फ़रमाते सुना था? " उस मौक़े पर कई सहाबा किराम ﷺ उठ खड़े हुए, जिन्होंने गवाही दी कि रसूलुल्लाहﷺ ने गद्हीर-ए-ख़ुम के दिन फ़रमाया था कि तुम जानते हो कि मैं मौमिनीन पर उनकी ज़ान से बढ़कर हक़ रखता हूँ, ये फ़रमाते हुए आपﷺ सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ का हाथ थामे खड़े थे, फिर रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "जिसका मौला (दिली महबूब) मैं हूँ उसी का मौला (दिली महबूब) अली ﷺ है,ऐ अल्लाह तआला जो इस (सय्यिदना अली ﷺ) से मुहब्बत रखे तू भी उससे मुहब्बत फ़रमा और जो भी इस (सय्यिदना अली ﷺ) से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी फ़रमा।" सय्यिदना अबु तुफ़ैय्ल आमिर बिन वास्ला ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि मैं (ये गुफ़्तगू सुनकर) वहां से निकला तो मेरे दिल में इस (गुफ़्तगू) के बारे में कुछ (शक बाक़ी) था, चुनांचे मैं सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से (जो साबिक़ूनुलअव्वलून सहाबा ﷺ में से थे) मिला और उन्हें सारी बात और इश्काल सुनाया तो उन्होंने फ़रमाया: "तुम्हें किस बात पर शक है? ये सब कुछ तो ख़ुद मैंने भी रसूलुल्लाहﷺ से सुन रखा है।" **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ ने रसूलुल्लाहﷺ से बयान किया कि आपﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "जिसका मौला (दिली महबूब) मैं हूँ उसी का मौला (दिली महबूब) अली ﷺ है, इमाम तिरमिज़ी ﷺ फ़रमाते हैं ये हदीस हसन सहीह है। **मुस्नद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अबुतुफ़ैल आमिर बिन वासला ﷺ (जिन्होंने सहाबा किराम ﷺ में सबसे आख़िर में 110 हिजरी में वफ़ात पाई) बयान फ़रमाते हैं कि सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ ने लोगों को एक खुली जगह में इकठ्ठा किया और फिर उनसे फ़रमाया: "मैं अल्लाह तआला का वास्ता देकर हर उस शख़्स से पूछता हूँ कि जिसने गद्हीर-ए-ख़ुम में रसूल्ल्लाहﷺ का फ़रमान सुना, तो वो उठकर बताए। इस पर 30 अफ़राद खड़े हुए और उन्होंने गवाही दी (फिर आगे इस हदीस में भी आख़िर तक वही अल्फ़ाज़ हैं जो ऊपर सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में गुज़र चुके हैं) **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷺ ने रसूलुल्लाहﷺ से बयान किया कि आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मैं तुम में दो गिराकदर (कीमती) चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, अल्लाह तआला की किताब (कुरआन ए हकीम) और मेरे अहले बैअत। और ये दोनों हरगिज़ अलग नहीं होंगे (और हमेशा इकठ्ठे रहेंगे) हत्ता कि हौज़ (कौसर) पर मेरे पास आ जाएंगे।" **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की एक हदीस में है :** सय्यिदना अबुज़र ग़फ़ारी ﷺ के ग़ुलाम सय्यिदना अबुसाबित ताबई ﷺ बयान करते हैं: "मैं जंगे जमल में सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ के साथियों में था, और जब मैंने उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा ﷺ को (अपने मदे मुक़ाबिल) देखा तो मेरे दिल में वही बात आई जो लोगों को याद आया करती है (यानी वस्वसा और शक पैदा हुआ) फिर अल्लाह तआला ने ज़ुहर की नमाज़ के वक़्त वो (शक) मुझसे दूर फ़रमा दिया। चुनांचे मैं (शरह सदर के साथ) अमीरुल मोमिनीन (सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ) की तरफ़ से लड़ा, फिर फ़ारिग़ हुआ तो मैं मदीना मुनव्वरा में उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्मा ﷺ के पास हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मैंने खाने पीने (की ग़र्ज़ से) हाज़िर नहीं हुआ, बल्कि मेरा तार्रुफ़ ये है कि मैं सय्यिदना अबुज़र गफ्फारी ﷺ का ग़ुलाम हूँ। उन्होंने फ़रमाया: "ख़ुशआमदीद" फिर मैंने अपना सारा क़िस्सा उन्हें सुनाया तो सय्यिदा उम्मे सल्मा ﷺ ने फ़रमाया: "जब लोग अपनी अपनी राय की पैरवी कर रहे थे तो उस वक़्त तुम्हारा क्या मौक़िफ़ था ? "मैंने अर्ज़ किया: "सूरज ढलने के वक़्त अल्लाह तआला ने मुझ से शक व शुबाह ज़ाइल फ़रमा दिया तो मैंने वही (मौक़िफ़ इख़्तियार) किया (यानी सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ का साथ दिया)। सय्यिदा उम्मे सल्मा ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने बहुत ही अच्छा किया, मैंने रसूलुल्लाहﷺ का ये फ़रमान ख़ुद सुना है: "(सय्यिदना) अली ﷺ कुरआन के साथ और कुरआन (सय्यिदना) अली ﷺ के साथ है। ये दोनों हरगिज़ अलग नहीं होंगे (और हमेशा इकठ्ठे रहेंगे) हत्ताकि हौज़े (कौसर) पर मेरे पास आ जाएंगे।"

सहीह मुस्लिम 6225,6228, अल-सुन्नह इब्ने अबी आसिम 1158, सुनन नसाई-अल-कुबरा 8478, जामिया त्रिमिज़ी 3713, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है

सिलसिला-तुस-सहीह 1750, 2223 मुसनद अहमद 19517 (जिल्द 8 , पेज 411) इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है

अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4711, 4628 इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने सहीह कहा है

34 **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहाज़म ताबई बयान करते हैं कि मुझे सय्यिदना सहल बिन साद अस्साअदी ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह ने गज़वा खैबर के मौक़े पर सहाबा किराम से इरशाद फ़रमाया: "कल मैं (लश्कर की क़्यादत का) झंडा उस शख़्स को दूँगा, जिसके हाथों पर फ़तह होगी और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला और उसके रसूल भी उस से मुहब्बत फ़रमाते हैं।" चुनांचे सारी रात सहाबा किराम इसी पर तरद्दुद करते रहे कि उनमें से किस (ख़ुशनसीब) को वो झंडा मिलेगा, और सुबह के वक़्त सभी पुर उम्मीद थे (कि झंडा हमें मिलेगा) तो आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया: "अली कहां है ?" आप को अर्ज़ किया गया कि उन (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब) की आंखें दुखती हैं, आप ने (बुलवाकर) उन की दोनों आंखों में (अपना) लुआब ए दहन (मुबारक) डाला और उन के लिए दुआ फ़रमाई। पस वो यूं अच्छे भले हो गये गोया कभी बीमार ही नहीं थे। आप ने सय्यिदना अली को झंडा दिया। इस पर सय्यिदना अली ने पूछा: "क्या मैं उन (दुश्मन) से उस वक़्त तक लड़ाई करता रहूँ जब तक वो हमारी तरह (मुसलमान) हो जाएं ?" आप ने इरशाद फ़रमाया: "आराम से चलते रहो यहां तक कि तुम उनके क़रीब पहुंच जाओ, फिर तुम उनको इस्लाम की दावत देना और उन्हें बताना कि (मुसलमान होने से) उन पर क्या फ़र्ज़ होगा, अल्लाह तआला की क़सम! ऐ अली ! अगर तुम्हारी (दावत व मेंहनत की) वजह से अल्लाह तआला ने उनमें से एक शख़्स को भी हिदायत दे दी तो ये बात तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊंटों से भी बेहतर होगी।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा बयान करते हैं: रसूलुल्लाह ने गज़वा खैबर के दिन इरशाद फ़रमाया: "आज मैं ये झंडा उस शख़्स को दूँगा जो अल्लाह तआला और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला उसके हाथों पर फ़तह अता फ़रमाएगा।" सय्यिदना अबुहुरैरा बयान करते हैं कि इस पर सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब फ़रमाते थे कि (ज़िंदगी में) सिर्फ़ उसी दिन मुझे क़यादत की तमन्ना हुई (कि झंडा मुझे मिले और मैं उस बशारत का मिस्दाक़ बन जाऊं) सारी रात मैंने इसी उम्मीद में गुज़ारी कि मुझे (उस क़्यादत के लिए) बुलाया जाएगा, चुनांचे आप ने सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब को बुलवाया और उन्हें झंडा अता किया और इरशाद फ़रमाया: "सीधे रवाना हो जाओ और यक्सू रहना यहां तक के अल्लाह तआला तुम्हें फ़तह अता फ़रमा दे।" (सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ने) फ़रमाया कि सय्यिदना अली रवाना हुए, थोड़ी देर बाद रुके और वापस मुड़े बग़ैर बुलन्द आवाज़ से पूछा: "ऐ अल्लाह तआला के रसूल ! मैं किस मक़्सद की ख़ातिर लड़ाई करूं ?" आपने फ़रमाया: "उनसे जंग करो हत्ताकि वो गवाही दे दें कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और ये कि मुहम्मद अल्लाह तआला के रसूल हैं, (और जब वो ये गवाही दे दें) तो फिर तेरे हाथों से उनकी जानें और अम्वाल महफ़ूज़ हो गए, सिवाए क़ानूनी जवाज़ के और उनका (उख़रवी) हिसाब अल्लाह तआला के सुपुर्द है।"

सहीह बुख़ारी 3701, सहीह मुस्लिम 6222,6223

35 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना मसअब बिन साद ताबई अपने वालिद (सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास) से बयान करते हैं कि रसूल्लाह ग़ज़वा-ए-तबूक के लिए रवाना हुए तो आपने सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब को (अपने पीछे) क़ाइम मक़ाम के तौर पर छोड़ा। इस पर उन्होंने (सय्यिदना अली) ने (आप जुदाई पे इज़्हार ए अफ़्सोस करते हुए) पूछा: "आप मुझे बच्चों और औरतों में छोड़े जाते हैं? " तो आप ने इरशाद फ़रमाया: "(ऐ अली !) क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं कि तुम्हारा मुझ से वही रिश्ता है जो हारून का मूसा से था?" (यानी जैसा कि कोहे तूर पर जाते वक़्त सय्यिदना मूसा ने सय्यिदना हारून को बनी इस्राईल पर अपना कायम मक़ाम (प्रतिनिधि) बनाया था, वैसे ही मैं भी तबूक पे जाते वक़्त तुम्हें अपना क़ाइम मक़ाम बनाकर जा रहा हूँ) **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया: "ऐ अली ! तेरी मुझ से वही निस्बत है जो हारून को मूसा से थी, सिवाए इसके कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।" सय्यिदना सईद ताबई कहते हैं कि मेरा दिल चाहा कि मैं बराहेरास्त (ख़ुद) ये हदीस सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास से सुनूं, चुनांचे मैं सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास से मिला और उन्हें इसी तरह की हदीस सुनाई जो मैंने उनके बेटे सय्यिदना आमिर बिन साद ताबई से सुनी थी, (इस पर) सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ने फ़रमाया: (हां) मैंने (रसूलुल्लाह से) इसी तरह सुना था। (नोट: अब चूंकि हज़रत मुआविया बिन अबुसूफ़ियान का दौरे मलूकियत था और बनू उमय्या के मिम्बरो से सय्यिदना अली पर लानत करने की बिदअत का रिवाज आम था, जिसकी तफ़्सील आगे हदीस नम्बर: 37 से 48 तक आ रही है, तो ऐसे हालात में सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब की इतनी शान बयान करने वाली हदीस को हज़्म करना इन्तहाई मुश्किल काम था, चुनांचे) सय्यिदना सईद ताबई कहते हैं कि मैंने फिर (दोबारा ताकीदन) पूछा "क्या वाक़ई आपने ख़ुद (रसूलुल्लाह से) सुना था?" चुनांचे सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ने (गुस्से की हालत में) अपनी दोनों उंगलियां अपने कानों पर रखकर फ़रमाया: "हां! वर्ना (अगर मैं झूठ बोल रहा हूँ तो मेरे) ये दोनों कान ही बहरे हो जाएं।" सहीह बुख़ारी 4416, सहीह मुस्लिम 6217, 6218

37 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुसईद ख़ुदरी ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मेरे सहाबा को गाली मत दो, क्योंकि तुम में से कोई अगर उहद पहाड़ के बराबर सोना भी (अल्लाह तआला की राह में) ख़र्च कर दे तो भी वो उन (सहाबा किराम ﷺ के मुद्द (यानी तकरीबन 600 ग्राम वज़न की गंदुम को ख़ैरात करने के सवाब) को नहीं पा सकता बल्कि उसके आधे को भी नहीं पा सकता।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ बयान करते हैं कि सय्यिदना ख़ालिद बिन वलीद ﷺ और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ के दर्मियान कुछ (इख़्तिलाफ़ हुआ) था, तो (जज़्बात में आकर) सय्यिदना ख़ालिद बिन वलिद ﷺ ने उन (सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ) को गाली दी तो आप ﷺ ने (सय्यिदना ख़ालिद बिन वलीद ﷺ से) इरशाद फ़रमाया: "तुम मेरे सहाबा ﷺ में से किसी को गाली मत दो, क्योंकि अब तुम (बाद में इस्लाम लाने वालों) में से कोई अगर उहद पहाड़ के बराबर सोना भी (अल्लाह तआला की राह में) ख़र्च कर दे तो भी वो उन (पहले मुसलमान सहाबा किराम ﷺ) के एक मुद्द (यानी तक़रीबन 600 ग्राम वज़न की गंदुम को ख़ैरात करने के सवाब) को नहीं पा सकता बल्कि उसके आधे को भी नहीं पा सकता।"

सहीह बुखारी 3673, सहीह मुस्लिम 6488

38 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा ﷺ बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मुर्दा लोगों को गाली मत दो क्योंकि वो अपने किये हुए आमाल (के अन्जाम) तक पहुंच चुके हैं।" (यानी उन्होंने जो कुछ अच्छा या बुरा इस दुनिया में बोया था, अब आलम ए बरज़ख़ में उसी की जज़ा या सज़ा को काट रहे हैं) सहीह बुखारी 1393

नोट रसूलुल्लाह ﷺ का मन्दर्जा बाला (उपर आया) मुबारक फ़रमान पूरी उम्मत के लिए यक्सां है और इस हुक्म से कोई एक शख़्स भी बाहर नहीं है, चाहे वो शख़्स सहाबा किराम ﷺ में ही से क्यों ना हो। चुनांचे इसी ज़िमन में **सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा ﷺ ही बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माना मुबारक में मख़्ज़ुमिया औरत (जिसका नाम फ़ातमा बिन अस्वद था) ने चोरी की थी । इस वाक़्या ने कुरैश को ग़मज़दा कर दिया था। उन्होंने मशवरा किया कि (ऊंचे घराने की उस चोर औरत को सज़ा से बचाने की ख़ातिर) उससे मुताल्लिक़ रसूलुल्लाह ﷺ से कौन सिफ़ारिश करेगा? चुनांचे उन्होंने फ़ैसला किया कि ये काम तो सिर्फ़ रसूलुल्लाह ﷺ के महबूब सय्यिदना उसामा बिन ज़ैद बिन हारिसा ﷺ ही कर सकते हैं। जब उसामा बिन ज़ैद ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में उसकी सिफ़ारिश की तो आप ﷺ ने (इंतहाई ग़ुस्से की हालत में) इरशाद फ़रमाया: "क्या तुम अल्लाह तआला की हुदूद के मामले में मुझसे सिफ़ारिश करते हो ?" फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने (लोगों में) खड़े होकर ख़ुत्बा दिया और इरशाद फ़रमाया: "तुम से पहले लोग सिर्फ़ इसी (जुर्म की) वजह से हलाक कर दिये गए कि जब उनमें से कोई ऊंचे घराने वाला चोरी करता तो उसे छोड़ देते और जब कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पे हद जारी कर देते। अल्लाह तआला की क़सम! अगर (बिलफ़र्ज़) फ़ातमा बिंत मुहम्मद ﷺ भी चोरी करती तो मैं उसके हाथ भी कटवा देता। (यानी इस्लाम के क़वानीन व हुदूद का इत्लाक़ सभी पे एक जैसा होगा)" **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर ताबई ﷺ बयान करते हैं कि मैंने अहले शाम में से एक शख़्स को सुना कि वो उमरा को हज के साथ मिलाने के हवाले से (मेरे वालिद मुहतरम) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से सवाल कर रहा था (यानी हज तमअतुअ जाइज़ है कि नहीं?) तो सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ने फ़रमाया: "हाँ ऐसा करना बिलकुल हलाल है।" इस पर उस शामी ने अर्ज़ किया कि आप के वालिद अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷺ तो इस (हज तमअतुअ) से मना फ़रमाते थे। उसकी इस बात पर सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ने फ़रमाया: "अगर किसी बात से मेरे वालिद मुहतरम मना कर दें हालांकि रसूलुल्लाह ﷺ ने तो उस अमल को जारी फ़रमाया हो, तो मुझे बताओ कि फिर मेरे बाप की बात मानी जाएगी या कि रसूलुल्लाह ﷺ का हुक्म माना जाएगा?" उसने अर्ज़ किया कि बेशक रसूलुल्लाह ﷺ का हुक्म ही माना जाएगा। तो सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ने फ़रमाया: "(फिर ख़ूब समझ लो कि) बेशक रसूलुल्लाह ﷺ ने हज ए तमअतुअ का हुक्म दिया है।"

सहीह बुखारी 6788, सहीह मुस्लिम 6488, जामिया त्रिमिज़ी 824, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है

39 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु हाज़म ताबई ﷺ बयान करते हैं कि एक आदमी सय्यिदना सहल बिन साद ﷺ के पास आकर बताने लगा कि फ़लां (बनू उमय्या से ताल्लुक़ रखने वाला) शख़्स जो अमीरे मदीना है, अपने मिम्बर पर सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ का (बुरे अंदाज़ से) ज़िक्र करता है। (सय्यिदना सहल बिन साद ﷺ ने) पूछा: "वो क्या कहता है?" उसने बताया कि वो (हिक़ारत से) उन (सय्यिदना अली ﷺ) को अबुतुराब (यानी मिट्टी वाला) कहता है।" उसकी इस बात पर सय्यिदना सहल बिन साद ﷺ हंस पड़े और फ़रमाया: "अल्लाह तआला की क़सम! उन (सय्यिदना अली ﷺ का ये नाम (अबुतुराब) तो ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ ने रखा था और अल्लाह तआला की क़सम! उन (सय्यिदना अली ﷺ) को इस नाम से बढ़कर कोई और नाम महबूब ना था।" (सय्यिदना अबु हाज़म ताबई ﷺ कहते हैं कि उनकी ये बात सुनकर) मैंने सय्यिदना सहल बिन साद ﷺ को सारा क़िस्सा सुनाने की दर्ख़्वासत की। और कहा कि ऐ अबुअब्बास ﷺ! ये क़िस्सा कैसे पेश आया? तो उन्होंने वो क़िस्सा यूं बयान फ़रमाया: "एक रोज़ सय्यिदना अली ﷺ सय्यिदा

फ़ातमा رضی اللہ عنہا के पास आए फिर (किसी बात पे उन से नाराज़ होकर) घर से बाहर निकल गए और मस्जिद में जाकर लेट गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने (सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से) पूछा: "तुम्हारा चचाज़ाद (यानी सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ) कहां है?" उन्होंने अर्ज़ किया कि मस्जिद में हैं। चुनांचे आप ﷺ उनके पास मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो देखा कि सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की कमर से लिबास हटा हुआ है और उस पे मिट्टी लग गई है। चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ख़ुद अपने मुबारक हाथों से सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की कमर से मिट्टी झाड़ते जाते और फ़रमाते जाते: "ऐ अबुतुराब (मिट्टी वाले) ! उठ जाओ। ऐ अबु तुराब ! उठ जाओ।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना सहल बिन साद رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि (बनू उमय्या के दौरे मलूकियत में) आले मरवान में से एक शख़्स को मदीना का वली बनाकर भेजा गया। उस गवर्नर ने सय्यिदना सहल رضی اللہ عنہ को बुलवाया और हुक्म दिया कि वो सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ को गाली दें। (نعوذ باللہ من ذلک) सय्यिदना सहल رضی اللہ عنہ ने साफ़ इन्कार फ़रमा दिया। फिर इस इंकार पर उस (वाली ए मदीना) ने कहा कि चलो कम अज़ कम इतना ही कह दो कि: "अल्लाह तआला अबुतुराब (मिट्टीवाले) पर लानत करे।" (نعوذ باللہ من ذلک) उस की इस बात पर सय्यिदना सहल رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ को तो अबुतुराब (मिट्टीवाला) से बढ़कर कोई और नाम महबूब ही ना था। वो तो इस नाम से पुकारे जाने पर ख़ुश हुआ करते थे। इस पर उस (वाली ए मदीना) ने कहा के हमें सारी बात सुनाओ कि उनका ये नाम क्यों कर रखा गया था ? सय्यिदना सहल رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "(एक मरतबा) रसूलुल्लाह ﷺ सय्यिदा फ़ातमा رضی اللہ عنہا के घर तशरीफ़ लाए तो वहां सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ मौजूद ना थे , तो आप ﷺ ने (सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से) पूछा: "तुम्हारा चचाज़ाद (यानी सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ) कहां है ?" उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे और उनके दर्मियान कोई (झगड़े की) बात हुई तो वो मुझ से नाराज़ होकर चले गए और दोपहर बाहर गुज़ारी। रसुल्लाह ﷺ ने किसी को हुक्म दिया कि जाओ और देखो वो कहां है? किसी ने आकर अर्ज़ किया कि वो तो मस्जिद में सो रहे हैं। चुनांचे आप ﷺ उनके पास मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो देखा कि सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की कमर से लिबास हटा हुआ है और उस पे मिट्टी लग गई है। चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ख़ुद अपने मुबारक हाथों से सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की कमर से मिट्टी झाड़ते और साथ साथ फ़रमाते जाते: "ऐ अबुतुराब (मिट्टीवाले) उठ जाओ। ऐ अबुतुराब उठ जाओ।" सहीह बुखारी 3703, सहीह मुस्लिम 6229

40 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना आमिर बिन साद बिन अबीवक़ास ताबई رحمہ اللہ अपने वालिद सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास رضی اللہ عنہ से बयान करते हैं कि हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास رضی اللہ عنہ को हुक्म दिया (तो उन्होंने साफ़ इंकार फ़र्मा दिया) पस हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने उनसे पूछा कि आपको अबुतुराब (सय्यिदना अली बिन अबितालिब رضی اللہ عنہ) को गाली देने से किस बात ने रोक रखा है? सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास رضی اللہ عنہ ने जवाब में फ़रमाया: "मैं हरगिज़ उन्हें कभी भी गाली नहीं दूँगा, क्योंकि 3 बातें (बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत वाली ऐसी हैं) जो सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ के लिए रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़ुद इरशाद फ़रमाई थीं। और अगर उन 3 बातों में से मुझे एक भी मिल जाती तो (वो फ़ज़्ल) मुझे सुर्ख ऊंटों के मिल जाने से भी बेहतर होता। (पहली फ़ज़ीलत सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ के लिए ये है कि) मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को सुना कि आप ﷺ जब किसी ग़ज़वा (तबूक) में सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ को पीछे छोड़ा तो उन्होंने (बतौरे शिकवा) कहा कि आप ﷺ ने मुझे औरतों और बच्चों के साथ पीछे छोड़ दिया है? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम इस (इज़्जत अफ़ज़ाई) पर ख़ुश नहीं कि तुम्हारी मुझ से वही निस्बत है जो हारून علیہ السلام को मूसा علیہ السلام से थी, सिवाए इसके कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।" और (दूसरी फ़ज़ीलत सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ के लिए ये है कि) मैंने ग़ज़वह-ए-खैबर के दिन रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना: "कल मैं (लश्कर की क़्यादत का) झंडा उस शख़्स को दूँगा, जिस के हाथों पर फ़तह होगी और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ भी उससे मुहब्बत फ़रमाते हैं।" (ये सुनकर) हम सब इसी उम्मीद में रहे (कि शायद झंडा हमें मिल जाए) मगर (सुबह होने पर) आप ﷺ ने फ़रमाया: "अली رضی اللہ عنہ को मेरे पास बुलाकर लाओ।" उन्हें लाया गया तो उनकी आंखें दुखती थीं, पस आप ﷺ ने उन की आंखों में (अपना) लुआब ए दहन मुबारक लगाया और झंडा उन्हें दे दिया और (फिर) उनके हाथों पर फ़तह हासिल हुई।और (तीसरी फ़ज़ीलत सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ के लिये है कि) जब (ईसाई पादरियों को मुबाहले का चेलंज देने के लिए) कुरआन की ये आयत मुबारका नाज़िल हुई: "ऐ पैगम्बर ﷺ ! फ़रमा दें कि आओ हम अपने बेटों और तुम्हारे बेटों को बुलाते हैं, और अपनी औरतों को भी और तुम्हारी औरतों को भी, और अपने आपको भी और तुम्हें भी, और फिर बड़ी आजिज़ी से (अल्लाह तआला के हुज़ूर इल्तिजा करें फिर लानत भेजें अल्लाह तआला की झूठो पर।" [आले इमरान : 61] तो रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ , सय्यिदा फ़ातमा رضی اللہ عنہا सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ और सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ को बुलाया और फिर यूं अर्ज़ की: "ऐ अल्लाह तआला ! ये मेरे अहल हैं।" **सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास رضی اللہ عنہ से पूछा कि आप رضی اللہ عنہ को अबुतुराब (सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ) को गाली देने से किस बात ने रोक रखा है? सय्यिदना साद رضی اللہ عنہ ने जवाब में फ़रमाया: जब तक 3 बातें (बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत वाली) जो सय्यिदना अली बिन अबितालिब رضی اللہ عنہ के लिए रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़ुद इरशाद फ़रमाई थीं। मुझे याद रहेंगी उस वक़्त तक मैं सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ को गाली नहीं दूँगा "उन 3 बातों में से मुझे एक (बात) भी मिल जाती तो (वो) मुझे सुर्ख ऊंटों से ज़्यादह महबूब होती। (फिर आगे इस हदीस में भी

आख़िर तक वही अल्फ़ाज़ हैं जो **सहीह मुस्लिम** की हदीस में गुज़र चुके हैं, लेकिन इसके आख़िर में है कि) फिर सय्यिदना आमिर बिन साद ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला की क़सम! साद बिन अबीवक़ास ﷺ की ये गुफ़्तगू सुन लेने के बाद हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ जितना अर्सा मदीना शरीफ़ में मुक़ीम रहे इस मौज़ूअ पर एक हर्फ़ का भी कलाम ना किया।" **सुनन इब्नेमाजा की हदीस में है:** सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ का बयान है कि हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ किसी हज के मौक़े पर (मदीना शरीफ़) आए तो सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ के पास मिलने आए तो हज़रत मुआविया ﷺ ने (उनके सामने) सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ का तज़्किरह किया और उन (सय्यिदना अली ﷺ) की तौहीन की तो सय्यिदना साद ﷺ को गुस्सा आ गया और उन्होंने फ़रमाया तुम ऐसी बातें उस शख़्स के मुताल्लिक़ कहते हो जिसके बारे में मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था: "जिसका मौला (दिली महबूब) मैं हूँ उसका मौला (दिली महबूब) अली ﷺ है, और मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था: "ऐ अली ﷺ! तेरी मुझ से वही निस्बत है जो हारून ﷺ को मूसा ﷺ से थी, सिवाए इसके के मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।" और मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था "आज मैं (लश्कर की क़्यादत का) झंडा उस शख़्स को दूँगा, जो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला और उसके रसूल भी उससे मुहब्बत रखते हैं।"

सहीह मुस्लिम 6220, सुनन नसाई-अल-कुबरा 8439 इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने किताब खासाइस-ए-अली में सहीह कहा है
सुनन इब्ने माजा 121, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी ने सहीह कहा है

41 **सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अबुबकर बिन ख़ालिद ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैं सय्यिदना साद बिन मालिक (अबीवक़ास) ﷺ को मदीना मुनव्वरह में मिलने गया तो वो हमसे पूछने लगे कि: "मैंनें सुना है कि तुम लोग सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ को गाली देते हो?" मैंने अर्ज़ किया: क्या वाक़ई आप ﷺ ने हमारे मुताल्लिक़ ऐसी बात सुनी है? तो उन्होंने फ़रमाया: "हां ऐसा ही है, शायद तुमने भी उन्हें गाली दी होगी ?" मैंने अर्ज़ किया अल्लाह तआला की पनाह! (कि हमने कभी ऐसी हरकत नहीं की)। सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ ने फ़रमाया "सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ को कभी गाली ना देना। बेशक अगर मेरी मांग (यानी सर के दर्मियाने हिस्से) पर आरा भी रख दिया जाए (यानी मुझे इन्कार करने पे अपनी जान चले जाने का ख़ौफ़ हो और मुझे मजबूर किया जाए) कि मैं सय्यिदना अली ﷺ को गाली दूँ तो मैं फिर भी उन्हें गाली नहीं दूँगा क्योंकि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से (सय्यिदना अली ﷺ के फ़ज़ाइल में) बहुत कुछ सुन रखा है।" **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना कैस बिन अबुहाज़म ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैं मदीना मुनव्वरह के बाज़ार में घूम फिर रहा था। इसी दैरान जब मैं अह्जारज़ियत (नामी जगह पर) पहुंचा तो देखा कि लोग एक घुड़सवार के गिर्द जमा हैं और वो घुड़सवार सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ को गालियां बक रहा है और वो लोग (उस गुस्ताख़ घूड़सवार को मना करने की बजाए) उसके गिर्द मज्मा लगाए खड़े हैं। इसी दौरान इत्तफ़ाक़न सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ वहां तशरीफ़ ले आए और पूछा:"ये क्या हो रहा है?"लोगों ने अर्ज़ किया "ये शख़्स सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ को गालियां दे रहा है।" (نعوذ باللہ من ذلك) इस पर सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ आगे बढ़े तो लोगों ने (इहतराम में) उनके लिए रास्ता खुला कर दिया और वो शख़्स के सामने जाकर खड़े हुए और फ़रमाया: "ऐ शख़्स! तू किस बिना पर सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ को गालियां दे रहा है? (ऐ गुस्ताख़ मुझे बता) क्या वो (सय्यिदना अली ﷺ) सबसे पहले मुसलमान नहीं थे? क्या वो (सय्यिदना अली ﷺ) रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सबसे पहले नमाज़ पढ़ने वाली शख़्सियत नहीं थे? क्या वो (सय्यिदना अली ﷺ) सबसे ज़्यादा दुनिया से बेरग़बती रखने वाली शख़्सियत नहीं थे? क्या वो (सय्यिदना अली ﷺ) सबसे बढ़कर इल्म रखने वाली शख़्सियत नहीं थे? साद बिन अबीबक़ास ﷺ (सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ के) मज़ीद फ़ज़ाइल ज़िक्र करते रहे यहां तक कि फ़रमाया: "क्या वो (सय्यिदना अली ﷺ) रसूलुल्लाह ﷺ की साहबज़ादी के रिश्ते से आपके दामाद नहीं थे? क्या रसूलुल्लाह ﷺ के ग़ज़वात में वो (सय्यिदना अली ﷺ) आप ﷺ के अलमबर्दार (झंडा उठाने वाले) नहीं थे? फिर साद ﷺ ने अपना मुह (चेहरा) क़िब्ले की तरफ़ किया और दोनों हाथ उठा कर दुआ की: "ऐ अल्लाह तआला! ये शख़्स तेरे वलियों में से एक वली को गालियां बक रहा है, इस हज़ूम के मुंतशिर होने से पहले पहले इन्हें अपनी क़ुदरत का मुज़ाहिरा दिखा दे"। सय्यिदना क़ैस बिन अबुहाज़म ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं: "हम अभी मुन्तशिर भी नहीं हुए थे कि उस (गुस्ताख़ घुड़सवार) की सवारी (ज़मीन में) धंसने लगी और उसकी सवारी ने उसको खोपड़ी के बल पत्थरों पर पटख़ दिया, जिसकी वजह से उस (सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ के गुस्ताख़ घुड़सवार) का दिमाग़ फट गया और वो वहीँ मर गया।"

सुनन नसाई-अल-कुबरा 8477 इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने किताब खासाइस-ए-अली में सहीह कहा है
अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 6121 इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने सहीह कहा है

42 **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़लिम ताबई रहिमहुल्लाह बयान करते हैं कि जब फ़लां शख़्स (यानी हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान रज़ियल्लाहु अन्हु जिनका नाम इसी हदीस के अगले तरीक़ में आया है) कूफ़ा में आया तो उन्होंने फ़लां शख़्स (यानी हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा जिन का नाम इसी हदीस के अगले तरीक़ में आया है) को ख़तीब मुक़र्रर किया। (इस मौक़े पर हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा रज़ियल्लाहु अन्हु की तक़रीर सुनकर) सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया: "इस ज़ालिम (ख़तीब हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा रज़ियल्लाहु अन्हु) को देख रहे हो? (जो कि सय्यिदना अली बिन अबितालिब रज़ियल्लाहु अन्हु पर लानत कर रहा है, जिसकी ख़बर इसी हदीस के अगले तरीक़ में आ रही है) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़लिम ताबई रहिमहुल्लाह बयान करते हैं कि फिर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु (जो पहले 10 इस्लाम लाने वालों में शामिल थे और सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के बहनोई भी थे) ने 9 अफ़राद के बारे में जन्नती होने की गवाही दी (और फ़रमाया कि) मैं अगर दसवें शख़्स की गवाही भी दे दूँ तो कोई गुनाह नहीं होगा (यानी बिल्कुल दुरुस्त होगा)।" मैंने पूछा कि वो 9 अफ़राद कौन कौन से हैं? सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कोहे हिरा पर खड़े होकर इरशाद फ़रमाया था: "ऐ हिरा पहाड़! थम जा, तुझ पर (इस वक़्त सिर्फ़) नबी या सिद्दीक़ या शहीद ही तो (मौजूद) हैं।" मैंने (फिर) पूछा कि वो 9 अफ़राद कौन कौन से हैं?" सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया (वो 9 अफ़राद ये हैं): "रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अबुबकर , सय्यिदना उमर , सय्यिदना उस्मान , सय्यिदना अली , सय्यिदना तलहा , सय्यिदना ज़ुबैर , सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुम)।" मैंने फिर पूछा कि और दसवां शख़्स कौन है ? वो (सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु) थोड़ी देर (आजिज़ी के बाइस) ख़ामोश रहे फिर फ़रमाया: "(वो दसवां शख़्स) मैं हूँ।" (**नोट:** इसी हदीस से एक और मिलती जुलती रिवायत सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से **जामिया त्रिमिज़ी में हदीस नम्बर 3747 नक़ल हुई है,** लेकिन उस हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ की बजाए सय्यिदना अबु उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम आया है) **सुनन नसाई अलकुबरा और मुस्नद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़लिम ताबई रहिमहुल्लाह बयान करते हैं कि जब हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा में आए तो हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ ख़ुतबा देने वाले मुक़र्रर किये जो कि सय्यिदना अली बिन अबितालिब रज़ियल्लाहु अन्हु पर ज़बान दराज़ी कर रहे थे चुनाँचे सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया इस ज़ालिम शख्स (हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा रज़ियल्लाहु अन्हु) को देखते हो कि ये एक जन्नती शख़्स (सय्यिदना अली बिन अबितालिब रज़ियल्लाहु अन्हु) पर लानत करवाता है।" फिर उन्होंने 9 अफ़राद के बारे में गवाही दी कि वो जन्नती हैं। और (फ़रमाया:) "अगर मैं दसवें शख़्स के जन्नती होने की ख़बर दूँ (तो भी सच होगा)।" मैंने पूछा कि वो 9 अफ़राद कौन से हैं? सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कोहे हिरा पर खड़े होकर इरशाद फ़रमाया था: "ऐ हिरा पहाड़! थम जा, तुझ पर (इस वक़्त सिर्फ़) नबी या सिद्दीक़ या शहीद ही तो (मौजूद) हैं।" मैंने (फिर) पूछा कि वो 9 अफ़राद कौन कौन से हैं?" सय्यिदना सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया (वो 9 अफ़राद ये हैं): "रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अबुबकर , सय्यिदना उमर , सय्यिदना उस्मान , सय्यिदना अली , सय्यिदना तलहा , सय्यिदना ज़ुबैर , सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुम)।" मैंने (फिर) पूछा कि और दसवां शख़्स कौन है? वो (सय्यिदना सईद थोड़ी देर (आजिज़ी के बाइस) ख़ामोश रहे फिर फ़रमाया: "मैं हूँ।"

सुनन अबु दाऊद 4648, सुनन नसाई-अल-कुबरा 8208, 8190 इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई, ने सहीह कहा है और शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने क़िताब फ़ज़ाइल ए सहाबा में सहीह कहा है
सहीह इब्ने हिब्बान 6996, अल सुन्नह इब्ने अबी आसिम 1220, मुसनद अहमद 1644 (जिल्द 1, पेज 654) इस हदीस को शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है

43 **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** सय्यिदना रियाह बिन हारिस ताबई रहिमहुल्लाह बयान करते हैं कि मैं फ़लां शख़्स (यानी हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा रज़ियल्लाहु अन्हु जिनका नाम इसी हदीस के अगले तरीक़ में आया है) के पास कूफ़ा की मस्जिद में बैठा था और अहले कूफ़ा भी मौजूद थे कि सय्यिदना सईद बिन ज़ैद वहां तशरीफ़ लाए तो उस (फ़लां शख़्स) ने उन्हें ख़ुशआमदीद कहा और तख़्त पर अपने पांव वाली तरफ़ पास बैठा लिया। इसी दौरान वहां कोई शख़्स आया जिसका नाम कैस बिन अल्क़मा था। उस (फ़लां शख़्स) ने उसका इस्तक़बाल किया। फिर उस (कैस बिन अल्क़मा) ने मुसल्सल गाली गलोच शुरू कर दी। इस पर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरयाफ़्त फ़रमाया: "ये शख़्स किसे गालियां दिये जा रहा है?" उस (फ़लां शख़्स) ने कहा कि सय्यिदना अली बिन अबितालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को गालियां दे रहा है। सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अफ़्सोस से फ़रमाया: "मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे सामने असहाबे रसूल ﷺ को गालियां दी जाती हैं और तुम (फ़लां शख़्स) इस (जुर्म) को ना तो बुरा समझते हो और ना ही तो मना करते हो? (जबकि इसके विपरीत) मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये इरशाद फ़रमाते हुए सुना था, और मैं कोई मनघड़त बात आपकी तरफ़ मंसूब नहीं करूंगा कि कल (रोज़े क़यामत) आप ﷺ से मुलाक़ात होने पर मुझे जवाबदेही भुगतनी पड़ जाए, (आप ﷺ ने) फ़रमाया था "(रसूलुल्लाह ﷺ के साथ) सय्यिदना अबुबकर रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं, सय्यिदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं, सय्यिदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं, सय्यिदना तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं, सय्यिदना ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं, सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं।" और अगर मैं चाहूँ तो दसवें (ख़ुशनसीब) का नाम भी बता सकता हूँ। फिर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु (आजिज़ी के बाइस) ख़ामोश हो गए। तो लोगों ने बाइसरार पूछा कि वह दसवें कौन

हैं ? तो फ़रमाया: "वो (दसवां शख़्स) सईद बिन ज़ैद ﷺ है।" फिर फ़रमाया: "(तुम सब कान खोलकर सुन लो) रसूलुल्लाह ﷺ की मअयत में किसी सहाबी का चेहरा गुबार आलूद होना, तुममें से किसी के सारी उम्र के नेक अमाल करने से बेहतर है ख़्वाह उसे सय्यिदना नूह ﷺ जितनी उम्र (ही क्यों ना) दे दी जाए।" **मुस्नद अहमद की हदीस में है:** हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ बड़ी मस्जिद में थे और उनके पास दाएं बाएँ अहले कूफ़ा मौजूद थे, इसी दौरान उनके पास सय्यिदना सईद बिन ज़ैद सहाबी ﷺ तशरीफ़ लाए। हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ ने उन्हें ख़ुशआमदीद कहा और (शाही) तख़्त पर अपने पाऊं की जानिब अपने पास बैठा लिया। फिर एक कूफ़ी शख़्स आया और उसने हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ की तरफ़ मुतवज्जा होकर मुसलसल गालियां देना शुरु कर दीं। सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने पूछा: "ऐ मुग़ीरा ﷺ ! ये किसको गालियां दे रहा है ?" उन्होंने कहा: "ये सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ को गाली दे रहा है।" इस पर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने (गुस्से में आकर) फ़रमाया: ऐ मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ ,ऐ मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ ! ऐ मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ ! मैं ये क्या सुन रहा हूँ कि असहाबे रसूल ﷺ को तुम्हारे पास गालियां दी जाती हैं और तुम इस (जुर्म) को ना तो बुरा समझ रहे हो और ना (ही) मना करते हो ? (जबकि इस के बअ्क्स) मैं रसूलुल्लाह ﷺ के मुताल्लिक़ गवाही देता हूँ, वो जो कुछ मेरे कानों ने सुना और मेरे दिल ने महफ़ूज़ कर लिया, और मैं कोई मनघड़त बात आप ﷺ की तरफ़ मंसूब नहीं करूंगा कि कल (रोज़-ए-क़यामत) आप ﷺ से मुलाक़ात होने पर मुझे जवाब देही भुगतनी पड़ जाए, (आप ﷺ ने) फ़रमाया था सय्यिदना अबुबकर ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना उमर ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना अली ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना उस्मान ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना तलहा ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना ज़ुबैर ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ जन्नती हैं और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ जन्नती हैं।" और एक नवां मुसलमान भी जन्नती है, अगर मैं चाहूँ तो उसका नाम भी बता सकता हूँ"। इस पर अहले मस्जिद ने बा इसरार अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछा: "ऐ रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी ﷺ ! वो नवां शख़्स कौन है ?" सय्यिदना सईद ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने मुझे अल्लाह तआला का वास्ता दे डाला है, अल्लाह तआला की क़सम ! वो नवां मुसलमान मैं (सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ) हूँ और रसूलुल्लाह ﷺ दसवें हैं। अल्लाह तआला की क़सम! ऐसा शख़्स, जिसका चेहरा रसूलुल्लाह ﷺ की मअईयत (साथ में) में गर्द आलूद हुआ, उसका ये अमल तुमहारी तमाम उम्र की नेकियों से बेहतर है ख़्वाह तुम्हें सय्यिदना नूह ﷺ जितनी उम्र (ही क्यों ना) दे दी जाए।"

सुनन अबु दाऊद 4650 , मुसनद अहमद 1629 (जिल्द 1, पेज 649) इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई शेख़, शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है

44 **सुनन नसाई अल कुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ालिम ताबई ﷺ बयान करते हैं कि हज़रत मुग़ीरा ﷺ ने ख़ुतबा दिया और उस में सय्यिदना अली ﷺ को सब व शतम का निशाना बनाया तो इस पर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने फ़रमाया कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ख़ुद ये बात सुनी कि आप ﷺ फरमा रहे थे: "ऐ हिरा पहाड़! थम जा, तुझ पर (इस वक़्त सिर्फ) नबी ﷺ या सिद्दीक़ या शहीद ही तो मौजूद हैं।" और उस वक़्त उस (पहाड़) पर रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अबुबकर , सय्यिदना उमर , सय्यिदना उस्मान ,सय्यिदना अली ,सय्यिदना तलहा ,सय्यिदना ज़ुबैर ,सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास और सय्यिदना अब्दुर्रहमान और सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہم اجمعین थे। **सुनन नसाई अल कुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ालिम ﷺ बयान करते हैं कि मैं सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ के सामने बैठा हुआ था, तो वह फ़रमाने लगे: "हमारे ये हुक्मरान हमें हुक्म देते हैं कि हम अपने भाइयों पर लानत करें, और बेशक हम तो लानत नहीं करेंगे बल्कि हम तो उनके लिए अल्लाह तआला कि बारगाह में आफ़ियत की दुआ करेंगे, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से खुद ये बात सुनी कि आप ﷺ फरमा रहे थे: "अनकरीब मेरे बाद बहुत से फ़ितने रुनुमा (प्रकट) होंगे और ऐसे ऐसे होगा।" इसी दौरान एक शख़्स वहा आया और सय्यिदना सईद ﷺ से अर्ज़ किया कि मुझे तो सय्यिदना अली ﷺ से हर चीज़ से बढ़कर मुहब्बत है ! इस पर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने उस से फ़रमाया: "(तुम्हें बशारत हो कि) तुम तो एक जन्नती इन्सान से मुहब्बत करते हो।" फिर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने हदीस बयान की कि रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अबुबकर , सय्यिदना उमर , सय्यिदना उस्मान , सय्यिदना अली , सय्यिदना तलहा , सय्यिदना ज़ुबैर , सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सय्यिदना साद बिन अबी वक़ास رضی اللہ عنہم اجمعین थे, अगर मैं चाहूँ तो दसवें (जन्नती) आदमी का नाम भी बता सकता हूँ, यानी वह (सय्यिदना सईद ﷺ) खुद थे, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ हिरा पहाड़! थम जा, तुझ पर नबी ﷺ या सिद्दीक़ या शहीद (मौजूद) हैं। **सुनन नसाई अल कुबरा और सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन अखनस ताबई ﷺ बयान करते हैं कि सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ हज़रत मुगीरा बिन शैबा ﷺ के पास बैठे हुए थे तो हज़रत मुगीरा बिन शैबा ने सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ से मुताल्लिक़ कुछ (नाज़ेबा अल्फ़ाज़ में) कहा तो सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ वहीं पर खड़े हुए और फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से खुद ये बात सुनी कि आप ﷺ फरमा रहे थे: "अहले कुरैश में से 10 आदमी जन्नत में हैं, (रसूलुल्लाह ﷺ जन्नत में हैं), सय्यिदना अबुबकर जन्नत में हैं, सय्यिदना उमर जन्नत में हैं, सय्यिदना उस्मान जन्नत में हैं, सय्यिदना अली जन्नत में हैं, सय्यिदना तलहा जन्नत में हैं, सय्यिदना ज़ुबैर जन्नत में हैं, सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जन्नत में हैं, सय्यिदना

साद बिन अबीवक़ास ﷺ जन्नत में हैं और सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہم اجمعین जन्नत में हैं)।"

सुनन नसाई-अल-कुबरा 8205,8206,8210 , सुनन अबु दाऊद 4649 इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने किताब फ़ज़ाइल ए सहाबा में सहीह कहा है

45 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना बरा बिन आज़िब ﷺ बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने माहे ज़िलकादा में उमरा का क़सद फ़रमाया तो अहले मक्का ने आप ﷺ को मक्का मुकर्रमा में दाख़िले की इजाज़त से इंकार कर दिया। बिल आख़िर फ़ैसला ये हुआ कि आप ﷺ (आइन्दा साल) 3 दिन इस (मक्का मुकर्रमा) में ठहर सकेंगे और मुआहिदे की तहरीर में लिखा गया: "ये वो फ़ैसला है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के साथ तय पाया है।" इस पर कुरैश मक्का बिगड़ गए और कहा कि हम तो आपको (रसूलुल्लाह ﷺ) नहीं मानते क्योंकि अगर हमें (यक़ीनी) इल्म हो कि आप नबी हैं तो आपको (मक्का मुकर्रमा में) दाख़िले से क्यों रोकते ? लिहाज़ा यहां मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ﷺ लिखें। आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मैं अल्लाह तआला का रसूल ﷺ भी हूँ और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह भी हूँ।" फिर आप ﷺ ने सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ से इरशाद फ़रमाया: "लफ़्ज़ रसूलुल्लाह ﷺ मिटा दो।" सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ ने (जज़्बात मुहब्बत में) अर्ज़ की: नहीं अल्लाह तआला की क़सम! मैं आप ﷺ (के नाम मुबारक के साथ लिखे रसूलुल्लाह) को नहीं मिटा सकता।" चुनांचे आप ﷺ ने (मुआहिदे की) तहरीर ख़ुद पकड़ी, हालांकि आप अच्छी तरह लिखना नहीं जानते थे, फिर लिखा (गया): "ये (वो मुआहिदा) है जो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ﷺ ने तय कर लिया है कि मक्का मुकर्रमा में कोई हथियार लेकर नहीं आएंगे, सिवाए एक तलवार के जो नयाम में बंद होगी और ये कि अहले मक्का में से कोई भी आप ﷺ के पीछे (मदीन मुनव्वरा) जाना चाहे तो आप ﷺ उसे नहीं ले जाएंगे और अपने साथियों में से किसी को नहीं रोकेंगे अगर वो उस (मक्का मुकर्रमा) में मुक़ीम होना चाहे।" ..... चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ से (बतौर दिलजोई के) इरशाद फ़रमाया: "(ऐ अली!) तुम मुझ से हो और मैं तुम से हूँ।" **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना इमरान बिन हुसैन ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "अली मुझसे है और मैं अली से हूँ और वह मेरे बाद हर एक मुसलमान के वली (दिली दोस्त) होंगे।" **जामिया त्रिमिज़ी की एक हदीस में है:** सय्यिदना अनस बिन मालिक ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक भुना हुआ परिंदा था, आप ﷺ ने दुआ की: "ऐ अल्लाह ताआला! अपनी मखलूक में से सबसे महबूब तरीन शख़्स को मेरे पास भेज जो मेरे साथ इस परिंदे को खाए।" पस (दुआ कुबूल हुई और उसी वक़्त ही) सय्यिदना मौला अली ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और रसूलुल्लाह ﷺ के साथ परिंदा तानावुल फ़रमाया। **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ से पूछा गया कि रसूलुल्लाह ﷺ को लोगों में से सबसे बढ़कर महबूब कौन था? फ़रमाया: सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ पूछा गया: मर्दों में कौन था? फ़रमाया: उनके शौहर (सय्यिदना अली इब्ने तालिब ﷺ) जो बहुत ही रोज़े रखने वाले और शब ज़िन्दादार (रात को जाग कर इबादत करने वाले) थे। **मुसनद अबुयाला, मौज़ुमल सगीर-लिल-तबरानी और सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अबु अब्दुल्लाह जद्ली ताबई ﷺ बयान करते हैं कि उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्मा ﷺ (दुखी होकर) मुझसे फ़रमाने लगीं: "क्या रसूलुल्लाह ﷺ को मिम्बरो पर गालियां दी जाती हैं ? (نعوذ باللہ من ذلك) मैंने अर्ज़ किया कि ये (इन्तिहाई गुस्ताख़ाना और क़बीह फ़ैल) क्यों कर हो सकता है ? तो सय्यिदा उम्मे सल्मा ﷺ ने फ़रमाया: "क्या सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ और उनसे मुहब्बत करने वालों को गालियां नहीं दी जातीं ? (نعوذ باللہ من ذلك) (जबकि) मैं गवाही देती हूँ कि रसूलुल्लाह ﷺ उन (सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ) से मुहब्बत फ़रमाया करते थे।" (यानी सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ को मिम्बरो पर गालियां देना गोया कि रसूलुल्लाह ﷺ को मिम्बरो पर गालियां बकने के ही मुतारादिफ़ है। (نعوذ باللہ من ذلك)

सहीह बुखारी 4251, जामिया त्रिमिज़ी 3712, 3721 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने मिश्कात उल मसाबीह हदीस न 6094 के तहत सहीह कहा है।
अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4744, इस हदीस को इमाम हाकिम ने सहीह कहा है, मुसनद अबी-याला 6977, इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई न मिश्कात उल मसाबीह हदीस न 6101 के तहत सहीह कहा है।
मौज़ुमल सगीर लिल तबरानी 889, सुनन नसाई-अल-कुबरा 8476, इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने किताब खासाइस-ए-अली हदीस न 8476 के तहत सहीह कहा है।

नोट अल्लामा जलालुद्दीन अलसयूती (अल मुतवफ़्फ़ा-911 हिजरी) लिखते हैं: "बनू उमय्या (अपने) ख़ुतबात में सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ को गाली दिया करते थे, फिर जब सय्यिदना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ताबई ﷺ ख़लीफ़ा बने तो उन्होंने इस (ग़लीज़, इंतहाई गुस्ताख़ाना और क़बीह रसम) को बंद करवा दिया, और हकुमती कारिंदों के नाम हुक्मनामा जारी फ़रमाया कि इस (ग़लीज़ रसम) को बंद कर दिया जाए। फिर उसकी जगह इस (आयत) को जारी फ़रमा दिया: "बेशक (ऐ ईमान वालों!) अल्लाह तआला तुम्हें (इन 3 कामों का) हुक्म देता है कि हर मामले में इंसाफ़ से काम लो और एहसान करो, और अच्छा सुलूक करो रिश्तेदारों के साथ, और (तुम्हें इन 3 कामों से) मना फ़रमाता है बेहयाई से और बुरे कामों से और सरकशी से । वो (अल्लाह तआला) तुम्हें वाज़ करता है ताकि तुम नसीहत हासिल कर सको।" [अननहल: 90], चुनांचे उस वक़्त से अब तक ख़ुतबात में इस (आयत मुबारका) की क़िराअत मुसलसल जारीहै।"

तारीखुल खलीफ़ा-लिल-सयूती "बाब उमर बिन अब्दुल अज़ीज़"

46 **सुनन नसाई की हदीस में है:** सय्यिदना सईद बिन ज़ुबैर ताबई बयान करते हैं कि मैं सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास के हमराह मैदाने अरफ़ात में था, तो आप ने मुझसे दरयाफ़्त फ़रमाया: क्या वजह है कि लोगों से तल्बिया (لبیک اللھم لبیک، لبیک اللھم لبیک) की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही?" मैंने अर्ज़ किया कि लोग हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान (के मना करने की वजह) से डरते हैं। (इसलिए बुलन्द आवाज़ से तल्बिया कहने की बजाए आहिस्ता आवाज़ में ही कह लेते हैं)।चुनांचे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (गुस्से की हालत में) अपने खेमे से बाहर तशरीफ़ लाए और बुलंद आवाज़ से पुकारना शुरू कर दिया: (لبیک اللھم) ، (لبیک اللھم لبیک، لبیک اللھم لبیک) ، (لبیک، لبیک اللھم لبیک)(और साथ ही फ़रमाया) बेशक उन लोगों ने सय्यिदना अली बिन अबितालिब से बुग़्ज़ रखने की वजह से (बुलन्द आवाज़ से तल्बिया कहने की) सुन्नत मुबारका को (ही) छोड़ दिया है। **सुनन अल कुबरा लिल बैहक़ी की हदीस में है:** सय्यिदना सईद बिन ज़ुबैर ताबई का बयान है कि हम अरफ़ात के मैदान में सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास के पास थे, तो उन्होंने सवाल फ़रमाया: "क्या वजह है कि मुझे लोगों की तल्बिया की आवाज़ नहीं सुनाई दे रही ?" मैंने अर्ज़ किया कि लोग हज़रत मुआविया से डरते हैं।" सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (गुस्से की हालत में) अपने खेमे से बाहर तशरीफ़ लाए और पुकारा: (لبیک اللھم لبیک، لبیک اللھم لبیک)، ख़्वाह हज़रत मुआविया बिन अबु सुफ़्यान की नाक ख़ाक आलूद हो जाए (यानी वो मेरे इस सुन्नत पर अमल करने को ख़्वाह बुरा ही मान जाएं), (और साथ ही फ़रमाया) ऐ अल्लाह तआला ! इन लोगों पर लानत फ़रमा बेशक इन लोगों ने सय्यिदना अली के बुग़्ज़ की वजह से (बुलंद आवाज़ से तल्बिया कहने की) सुन्नत मुबारका को (ही) छोड़ दिया है। (यानी सय्यिदना अली का बुलंद आवाज़ से तल्बिया कहना तो रसूलुल्लाह की सुन्नत पर अमल करने की वजह से था ना कि उनका कोई ज़ाती इज्तिहाद था)

सुनन नसाई 3009, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , और शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है ।
सुनन अल कुबरा लिल बय्हकी 9447, इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है ।

47 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अली बिन अबितालिब बयान फ़रमाते हैं: "क़सम है उस ज़ात की जिसने दाने को फाड़ा (नबातात निकाले) और मख़्लूक़ात को पैदा फ़रमाया, बेशक नबी ए उम्मी ने मुझसे ये अहद किया था कि मुझ (सय्यिदना अली बिन अबितालिब) से सिर्फ़ मोमिन ही मुहब्बत रखेगा और मुनाफ़िक़ ही मुझ (सय्यिदना अली बिन अबितालिब से बुग़्ज़ रखेगा।

सहीह मुस्लिम 240

48 **फ़ज़ाएले सहाबा अहमद बिन हम्बल की हदीस में है:** सय्यिदना अबुमर्यम ताबई बयान करते हैं कि मैंने सय्यिदना अली बिन अबितालिब को ये फ़रमाते हुए सुना: "मेरी (ज़ात की) वजह से दो (किस्म के) लोग हलाक (यानी गुमराह) हो जाएंगे, (पहली क़िस्म) हद से ज़्यादा मुहब्बत में गुलू करने वाले और (दूसरी क़िस्म मुझसे) बुग़्ज़ रखने वाले।" **फ़ज़ाइले सहाबा और अस्सुन्नह की हदीस में है:** सय्यिदना अबु असवार ताबई बयान करते हैं कि सय्यिदना अली बिन अबितालिब ने (रसूलुल्लाह की तरफ़ से बताई हुई ग़ैबी ख़बर की बुनियाद पर) इरशाद फ़रमाया: कुछ लोग मुझसे मुहब्बत करेंगे यहां तक कि मुहब्बत (में गुलू करना) उन (राफ़िज़ियों) को आग में दाख़िल कर देगा और कुछ लोग मुझसे बुग़्ज़ रखेंगे यहां तक कि ये बुग़्ज़ रखना उन (नास्बियों) को आग में ले जाएगा|

फ़ज़ाइले सहाबा लिल अहमद बिन हंबल 952, 964, अल सुन्नह इब्ने अबी आसिम 819, इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ने सहीह कहा है

E हज़रत मुआविया ﷺ को हुकूमत मिल जाने के बाद से बतदरीज उम्मत पर कैसी मलुकियत मुसल्लत हुई और फिर उसका क्या भयानक नतीजा निकला?

49 सहीह बुखारी की हदीस में है: सय्यिदना हसन बसरी ताबई ﷺ का बयान है कि जब (सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ की शहादत के बाद जब सहाबा-ए-किराम ﷺ ने मश्वरे के बाद सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ को मुत्ताफ़िक़ा (सर्वसम्मति) तौर पर ख़लीफ़ा चुन लिया तो अल्लाह तआला की क़सम ! सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ पहाड़ों जैसे लश्कर लेकर हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ के मुक़ाबले में आए थे, (जिनको देखकर) हज़रत अम्र बिन आस ﷺ ने कहा: "मुझे ऐसे लश्कर नज़र आ रहे हैं जो मुकाबले में आई फ़ौज को फ़ना किए बग़ैर वापस नहीं लौटेंगे।" ये सुनकर हज़रत मुआविया ﷺ ने कहा: "ऐ अम्र! अगर दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को मार डाला तो उनके (पीछे जो बच जाये) का ज़िम्मेदार कौन होगा ? उनकी (बेवा) औरतों का ज़िम्मेदार कौन होगा ? उनके यतीम बच्चों का ज़िम्मेदार कौन होगा ? चुनांचे हज़रत मुआविया ﷺ ने बनी अब्द शम्स के दो कुरैशी अफ़राद, अब्दुर्रहमान बिन समरा और अब्दुल्लाह बिन आमिर को भेजा कि जाओ और उस शख़्स (सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ) को (सुलह की) पेशकश करो और उनसे मुसालहत का मुतालबा करो। वो दोनों उन (सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ) के पास आए और सुलह व अमन की बात चलाई। सय्यिदना हसन ﷺ ने फ़रमाया: "हम बनू अब्दुलमुत्तलिब (इन जंगों में) बहुत माल ख़र्च कर चुके हैं (यानी सुलह की सूरत में उनकी किफ़ालत की ज़िम्मेदारी कौन लेगा ?) और ये उम्मत (इन जंगों की वजह से) अपने ख़ून में लतपत हो चुकी है।" उन दोनों ने अर्ज़ किया कि "हज़रत मुआविया ﷺ आपको फ़लां फ़लां पेशकश करते हैं और कुछ मुतालबात के तलबगार हैं (यानी आप ﷺ ख़िलाफ़त से दस्तबरदार हो जाएं)।" सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ ने फ़रमाया: इस (समझोते) की तक्मील का ज़िम्मेदार कौन होगा? उन दोनों ने जवाब दिया कि हम दोनों ज़िम्मेदार हैं। चुनांचे सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ जो भी मुतालबा करते गए वो दोनों अपने ज़िम्मा लेते गए। (जब सुलह हो गई तो) सय्यिदना हसन बसरी ताबई ﷺ फ़रमाने लगे कि मैंने सय्यिदना अबुबकर ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना कि रसुलुल्लाह ﷺ ने ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाने के दौरान सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ को अपने पहलू में लिए हुए कभी उन की तरफ़ देखते और कभी लोगों की तरफ़ और साथ साथ ये इरशाद फ़रमाते जाते: "मेरा ये बेटा सरदार है (यानी अपनी हकूमत से दस्तबरदार होकर कुरबानी करके बड़ेपन का मुज़ाहिरा करेगा) और मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला इसके ज़रिये मुसलमानों की दो बड़ी जमाअतों में सुलह करवा देगा (यानी ख़लीफ़ा राशिद सय्यिदना अली ﷺ की हक़ वाली जमाअत और दूसरी हज़रत मुआविया ﷺ की जमाअत जिसने ख़लीफ़ा ए राशिद के ख़िलाफ़ बग़ावत की)।" सहीह बुखारी 2704,7109

नोट सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ ने जिन शर्तो की बुनियाद पर हज़रत मुआविया ﷺ को हुकुमत सुपुर्द की थी, उनकी पूरी तफ़्सीलात शरोहे अहादीस और कुतुब ए तारीख़ में दर्ज हैं, मसलन:

1. हज़रत मुआविया ﷺ अल्लाह तआला की किताब, रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत और ख़ुल्फ़ा ए राशिदीन ﷺ के तरीक़े के मुताबिक़ निज़ाम ए हकूमत चलाएंगे।
2. हज़रत मुआविया ﷺ अपने बाद किसी को जानशीन मुक़र्रर नहीं करेंगे बल्कि उम्मत को ख़लीफ़ा के चुनाव के लिए शूरा (मुसलमानों की सलाहकार समिति) पर छोड़ेंगे।
3. सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ की जमाअत के लोग, जो सुलह के बाद हथियार डाल चुके हैं, उनके ख़िलाफ़ किसी क़िस्म की इन्तक़ामी कार्रवाई नहीं की जाएगी।
4. आले मुहम्मद ﷺ के लिए ख़ुम्स (माले ग़नीमत का पांचवां हिस्सा) जो अल्लाह तआला ने कुरआन में मुक़र्रर किया, बदस्तूर अब्दुलमुत्तलिब की संतान को मिलेगा जैसा कि ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन ﷺ के अद्वार से मिलता आ रहा है।
5. सय्यिदना अली इब्ने तालिब पर बनु उमय्या की मिम्बरों से होने वाला सब व सितम का सिलसला हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया जायेगा | वग़ैरा वग़ैरा। मगर अफ़सोस इन शर्तो की वैसी पाबंदी नही की गई जैसा की इसका हक़ था।

अल इस्तियाब इब्ने अब्दुलबर, अल साबह इब्ने हजर, अल बदाया वल नहायह इब्ने कसीर, फ़तहुल बारी इब्ने हजर बुखारी की हदीस 7109 के तहत

50 मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा की हदीस में है: सय्यिदना उमैर बिन इस्हाक ताबई ﷺ का बयान है कि मैं और एक दूसरा शख़्स, सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ की अयादत के लिए हाज़िर हुए। सय्यिदना हसन बिन अली ﷺ उस शख़्स से बार बार फ़रमाते जाते थे: "मुझसे (जो भी इल्मी बात पूछनी है) पूछ लो उस वक़्त से पहले कि तुम न पूछ सको।" उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि मैं आपसे कुछ पूछना नहीं चाहता (हम तो सिर्फ़ आपकी अयादत करने के लिए हाज़िर हुए हैं), अल्लाह तआला आपको सेहत अता फ़रमाए। फिर आप ﷺ उठे और बैअतुलख़ला में दाख़िल हुए, फिर वापस आए और फ़रमाया: "अभी अभी मैंने अपने जिगर का टुकड़ा थूका है, जिसे

मैं इस लकड़ी से उलट पलट रहा था, मुझे कई बार ज़हर पिलाया गया है, और इस बार तो वो (ज़हर) बहुत ही सख़्त था।" सय्यिदना उमैर बिन इस्हाक ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि फिर अगले दिन हम दोबारा सुबह सुबह सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ की अयादत के लिए हाज़िर हुए, तो वो (घर से बाहर) बाज़ार में (किसी जगह लेटे हुए) थे, और इसी दौरान (आपके छोटे भाई) सय्यिदना हुसैन बिन अली رضی اللہ عنہ आए और आप आए और आपके सिर मुबारक के पास बैठ गए और पूछा "ऐ मेरे भाईजान ! आपको ज़हर देने वाला कौन है ?" सय्यिदना हसन बिन अली ने पूछा: "क्या तुम उसे क़त्ल करना चाहते हो ?" (सय्यिदना हुसैन बिन अली رضی اللہ عنہ) ने अर्ज़ की: "जी हां! सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "अगर मैंने मुजरिम को सहीह शनाख़्त किया है, तो अल्लाह तआला ख़ुद सख़्त इंत्क़ाम लेने वाला है, और अगर वो बेगुनाह है, तो मैं नहीं चाहता कि कोई बेगुनाह (मेरी वजह से) मार दिया जाए।"

मुसन्निफ़ अबि-इब्ने-शैबा38514, अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम4816 , इस हदीस को शेख़ गुलाम मुस्तफ़ा ज़हीर अमनपुरी ने किताब अल-सुन्नह पेज /हदीस 26 में दर्ज़ किया है।

नोट सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ कि शहादत और उस के बाद पैदा होने वाली भयानक सूरते हाल का बिलकुल सहीह सहीह इदराक करने के लिए यहाँ दर्ज ज़ेल अहम् तरीन हदीस दोबारा मुलाहिज़ा फरमाएं:

51 **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** सय्यिदना ख़ालिद ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ और अम्र बिन अस्वद और बनी असद का एक शख़्स, हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ के पास वफ़द बन कर गए, (इस मौक़े पर मुलाक़ात के दौरान) हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ से कहा: क्या तुम्हें मालूम है कि सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ फ़ौत हो गए हैं? सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने फ़ौरन पढ़ा: إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ एक शख़्स (यानी हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ जिनका नाम इसी हदीस के अगले तरीक़ में आया है) ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ से कहा: "तुम इसे (यानी सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ की मौत को) मुसीबत समझते हो ?"(نعوذ باللہ من ذلك) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया: "मैं इसे (यानी सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ की मौत को) मुसीबत क्यों नही समझूं हालांकि मैंने ख़ुद देखा था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ को अपनी गोद मुबारक में बैठाया हुआ था और इरशाद फ़रमा रहे थे: "ये (हसन رضی اللہ عنہ) मुझ (मुहम्मद ﷺ) से है और हुसैन رضی اللہ عنہ अली رضی اللہ عنہ से है।" बनू असद के एक शख़्स ने कहा: "वो (हसन رضی اللہ عنہ तो एक अंगारा था जिसे अल्लाह तआला ने बुझा दिया।"(نعوذ باللہ من ذلك)सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने (ये बातें सुनने के बाद ग़ुस्से में आकर इरशाद) फ़रमाया: "मैं उस वक़्त तक यहां से नहीं उठूंगा जब तक तुझ (हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ) को ग़ुस्सा ना दिलाऊं और ऐसी बात ना सुनाऊं जो तुझे नापसंद हो। ऐ मुआविया رضی اللہ عنہ !अगर मैं सच बयान करूं तो मेरी तस्दीक़ कर देना और अगर झूठ बोलूं तो मेरी तर्दीद कर देना।" हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने कहा ठीक है। चुनांचे सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने पूछा:" मैं तुझे अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि तूने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को सोना पहनने से मना फ़रमाते हुए सुना था?" हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने कहा: "हां! फिर सय्यिदना मिक्दाम رضی اللہ عنہ ने पूछा:"मैं तुझे अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि तूने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को रेशम पहनने से मना फ़रमाते सुना था?" हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने कहा: "हां! फिर सय्यिदना मिक्दाम ने पूछा: "मैं तुझे अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि तूने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को दरिंदों की खालों (के लिबास) को पहनने से और उन पर (क़ालीन के तौर पर) बैठने से रोका था ?" हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने कहा: "हां! फिर सय्यिदना मिक्दाम رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की क़सम! ऐ मुआविया رضی اللہ عنہ ये सब (हराम वस्तु इस्तेमाल होती हुई) मैंने तेरे घर में देखी हैं।" ये सुनकर हज़रत मुआविय رضی اللہ عنہ ने कहा: "ऐ मिक्दाम رضی اللہ عنہ ! मुझे पता है कि मैं तुम से जीत नहीं सकता।" सय्यिदना ख़ालिद ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि फिर हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना मिक्दाम رضی اللہ عنہ के लिए उन के दोनों साथियों से बढ़कर इनाम व इकिराम का हुक्म सादिर किया। और सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने सारा माल अपने साथियों में ही वहीं बांट दिया और असदी ने किसी को कुछ भी ना दिया। इस बात की ख़बर जब हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ को हुई तो उन्होंने कहा: "सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ तो वाक़ई एक सख़ी शख़्स हैं जिन्होंने दिल खोल कर दे दिया और जो असदी शख़्स है वो अपने माल को अच्छी तरह से संभालने वाला है।" **मुस्नद अहमद की हदीस में है कि** सय्यिदना ख़ालिद बिन मादान ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ और अम्र बिन अस्वद رضی اللہ عنہ हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ से मिलने आए तो हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ बिन अबुसुफ़्यान رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ से कहा: "क्या तुम्हें मालूम है कि सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ फ़ौत हो गए हैं? सय्यिदना मिक्दाम رضی اللہ عنہ ने फ़ौरन पढ़ा:إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ इस पर हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना मिक्दाम رضی اللہ عنہ से कहा: "तुम इसे (यानी सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ की मौत को) मुसीबत समझते हो?"(نعوذ باللہ من ذلك) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضی اللہ عنہ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया: "मैं इसे (यानी सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ की मौत को) मुसीबत क्यों नही समझूं हालांकि मैंने ख़ुद देखा था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ को अपनी गोद मुबारक में बैठाया हुआ था और इरशाद फ़रमा रहे थे: ये (हसन رضی اللہ عنہ) मुझ (मुहम्मद ﷺ) से है और हुसैन رضی اللہ عنہ अली رضی اللہ عنہ से है।

सुनन अबु दाऊद 4131, मुसनद अहमद 17321 (जिल्द 7, पेज 141) इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है।

52 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुराफ़ेअ ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि रसूल्ल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने मुझसे पहले जिस भी नबी علیہ السلام को मबऊस फ़रमाया तो उन सब ही की उम्मत में उनके कुछ हवारी (क़रीबी और ख़ास साथी) और अस्हाब हुआ करते जो उस नबी علیہ السلام की सुन्नत पर चलते और उसके अहकाम की पैरवी किया करते। फिर उन हवारियों के बाद ऐसे नालायक लोग उनके जानशीन होते जो ज़बान से वो कहते जो वो नहीं करते और वो कुछ करते जिसका हुक्म नहीं दिया गया था। (ऐसी बुरी सूरते हाल में) जो कोई उन (नालायक जानशीनों) से अपने हाथों से जिहाद करेगा तो वो (अल्लाह तआला के नज़दीक) मोमिन है। और जो कोई भी उन से अपनी ज़बान से जिहाद करेगा तो वो (अल्लाह तआला के नज़दीक) मोमिन है। और जो कोई भी उनसे अपने दिल से (बुरा समझते हुए) जिहाद करेगा तो वो (भी अल्लाह तआला के नज़दीक) मोमिन है। और इसके बाद तो राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं है। सय्यिदना अबुराफ़ेअ ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैंने जब यही हदीस सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से बयान की तो उन्होंने इस (के हदीस होने) का इंकार कर दिया। इत्तफ़ाक़न मुझ से मिलने के लिए सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ वहां तशरीफ़ लाए और (मदीना शरीफ़ की एक वादी) क़नातह में क़याम किया, तो सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ मुझे साथ लेकर उनकी अयादत के लिए हाज़िर हुए। जब हम उनके पास बैठ गए तो मैंने उसी हदीस के मुताल्लिक़ सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ से सवाल किया तो उन्होंने बिल्कुल वही हदीस बयान की जो मैं सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से बयान कर चुका था। **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना तारिक़ बिन शहाब ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि सबसे पहले मरवान बिन हकम ने ईद के दिन नमाज़ से पहले ख़ुत्बे की बिदअत शुरू की (नोट: नमाज़ के बाद ख़ुत्बे में बनू उमय्या के गवर्नर सय्यिदना अली बिन अबितालिब رضی اللہ عنہ पर अपने मिम्बरो से लानत करवाते थे और लोग ख़ुत्बा सुने बग़ैर ही अपने अपने घरों को चले जाया करते थे) तो इस पर एक शख़्स ने उठकर (मरवान से) कहा: "नमाज़े ईद ख़ुत्बे से पहले होने चाहिए (क्योंके यही सुन्नत है)।" इस पर मरवान ने कहा: "बेशक वो (दौरे नबवी के) तरीक़े तो अब मतरूक हो चुके हैं।" (نعوذ باللہ من ذلك) (उस मौक़े पर) सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि बेशक उस शख़्स ने (वक़्त के हुक्मरान को कल्मा ए हक़ के ज़रिये तम्बीह करके) अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया है। क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़ुद फ़रमाते हुए सुना था: "तुममें से जो कोई नापसंदीदा चीज़ देखे तो उसे हाथ से (बज़ोरे बाज़ू) बदल डाले, अगर इस की ताक़त ना हो तो ज़बान से (मना करदे) और अगर इसकी भी इस्ताअत ना रखता हो तो दिल से (इस चीज़ को बुरा जाने) और ये (तीसरा दर्जा) सबसे कमज़ोर ईमान का है।" **सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के मौक़े पर ईदगाह की तरफ तशरीफ़ ले जाते तो सब से पहले नमाज़ (ईद) अदा फ़रमाते , फिर लोगों के सामने खड़े होते जबकि लोग अपनी सफों में बैठे होते। चुनांचे आप ﷺ उन्हें नसीहत फ़रमाते और (नेकी का) हुक्म देते, और अगर कोई लश्कर तशकील देना होता तो उसे तशकील देते और कोई और खास हुक्म होता तो इरशाद फ़रमाते। फिर आप ﷺ वापस तशरीफ़ ले जाते। सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ का बयान है कि लोग इस (सुन्नत) पर क़ायम थे हत्ता कि एक बार (हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ का मुक़र्रिर करदा गवर्नर) अमीर ए मदीना मरवान बिन हक्म के हमराह ईदुल फ़ित्र या ईदुल अज़हा (की नमाज़ के लिए) निकला और जब हम ईदगाह में पहुंचे तो नागहाँ देखा कि कसीर बिन सलत ने वहां एक मिम्बर तैयार किया हुआ था, और मरवान बिन हक्म ने नमाज़ से पहले ही उस मिम्बर पर (बागर्ज़ ख़ुतबा) चढ़ना चाहा तो मैने उस के लिबास को पकड़ कर खींचा (यानी सुन्नत कि मुखालिफत से रोकना चाहा) मगर वह दामन छुड़ा कर चढ़ गया और नमाज़ से पहले (ही) ख़ुतबा दे डाला। मैंने कहा: "अल्लाह तआला की क़सम! तुम ने (सुन्नत नबवी ﷺ को) बदल डाला।" उस (मरवान बिन हक्म) ने कहा: "ऐ अबुसईद! जिस (सुन्नत) को तुम जानते हो वह रुखसत हो चुकी।" मैंने जवाबन कहा: "अल्लाह तआला की क़सम! मैं जिस (सुन्नत) को जानता हूँ वह इस (बिदअत) से बेहतर है जिसे मैं नहीं जानता।" उस ने कहा कि असल बात ये है कि लोग नमाज़ के बाद हमारे (ख़ुतबे) के लिए बैठते नही थे इसलिए इस (ख़ुतबे) को नमाज़ से पहले मुक़र्रर कर लिया है।"

सहीह मुस्लिम 177, 179 , सहीह बुखारी 956 , सहीह मुस्लिम 2053

53 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना यूसुफ़ ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मरवान बिन हक्म को हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ ने हिजाज़ के लिए अपना गवर्नर मुक़र्रर किया तो उसने (मस्जिदे नबवी में) ख़ुत्बा देने के दौरान (हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ की ज़िंदगी में ही) यज़ीद बिन मुआविया رضی اللہ عنہ का ज़िक्र करना शुरू किया ताकि लोगों से उसके बाप के बाद (ख़लीफ़ा बनने के लिए पेशगी हो) बैअत ले सके। (उसकी तक़रीर सुनकर) सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन अबुबकर رضی اللہ عنہ ने उस (मरवान) से कुछ कह दिया

(सय्यिदना अब्दुर्रहमान ﷺ के उन खरे खरे जवाबी अल्फ़ाज़ का ज़िक्र इसी हदीस के अगले तरीक़ में मौजूद है) मरवान ने (गुस्से में) हुक्म दिया कि उन्हें गिरफ़्तार कर लिया जाए। चुनांचे सय्यिदना अब्दुर्रहमान ﷺ (जान बचाने की ख़ातिर अपनी बहन) उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ के घर (जो मस्जिदे नबवी ﷺ के साथ जुड़ा हुआ था) में दाख़िल हो गए। जब वो (हकूमती कारिंदे) उन्हें ना पकड़ सके तो मरवान बिन हक्म ने (गुस्से में आकर गुस्ताख़ी करते हुए) कहा कि बेशक ये वही शख़्स है कि जिसके मुताल्लिक अल्लाह तआला ने फ़रमाया था: "और वो शख़्स की जिसने कहा अपने वालिदैन से कि अफ़्सोस है तुम्हारे हाल पर, क्या तुम मुझे इस बात की धमकी देते हो कि मैं (क़ब्र से) निकाला जाऊंगा हालांकि मुझसे पहले भी कई क़ौमें गुज़र चुकी हैं..... ये धमकियां तो सिर्फ़ अगले लोगों की कहानियां हैं।" [अल अह्क़ाफ़: 17] (मरवान की तरफ़ से अबुबकर ﷺ की औलाद पर लगाए गए इस गुस्ताख़ाना और झूठे इल्ज़ाम पर) उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ ने पर्दे में से ही जवाब देते हुए इरशाद फ़रमाँया: "हम (अबुबकर ﷺ की औलाद) से मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने कुछ भी नाज़िल नहीं फ़रमाया सिवाए उसके जो (सूरह नूर में) मेरी बराअत से मुताल्लिक़ नाज़िल हुआ था।" **सुनन नसाई अल कुबरा और अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की अहादीस में है:** सय्यिदना मुहम्मद बिन ज़ियाद ताबई ﷺ बयान करते हैं कि जब (मरवान के ज़रिये) हज़रत मुआविया ﷺ ने अपने बेटे (यज़ीद बिन मुआविया) के लिए बैअत ली तो मरवान बिन हक्म ने कहा: "सय्यिदना अबुबकर ﷺ और सय्यिदना उमर ﷺ की सुन्नत है (कि उन्होंने अपने बाद ख़लीफ़ा को नामज़द किया था)।" सय्यिदना अब्दुर्रहमान ﷺ ने जवाबन फ़रमाया: "ये तो हरकल और कैसर (जैसे बादशाहों) की सुन्नत है (के बाप के बाद उस का बेटा हुक्मरान बने)।" तो मरवान ने कहा: "बेशक ये वो शख़्स है कि जिसके मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने ये आयत उतारी थी: [अल अह्क़ाफ़: 17] जब ये बात सय्यिदा आयशा ﷺ तक पहुंची तो उन्होंने फ़रमाया: "अल्लाह तआला की क़सम! उस (मरवान) ने झूठ कहा, अल्लाह तआला ने वो आयत हमारे मुताल्लिक़ नाज़िल नहीं फरमाई, और अगर मैं चाहूँ तो उसका नाम भी बता सकती हूँ जिसके मुताल्लिक़ वो नाज़िल हुई (हक़ीक़त तो ये है कि) बेशक मैंने ख़ुद सुना कि रसूल्लल्लाह ﷺ ने मरवान और उसके बाप पर लानत की थी जब कि मरवान उस वक़्त अपने बाप की पुश्त में था, पस मरवान अल्लाह तआला की तरफ़ से उसी लानत का एक टुकड़ा है।

सहीह बुखारी 4827, सुनन नसाई-अल-कुबरा 11491, अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 8483, इस हदीस को इमाम हाकिम ने इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम की शर्त पे सहीह कहा है

54 **अल अवाइल इब्ने अबु आसिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुज़र गफ्फारी ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "पहला शख़्स जो मेरी सुन्नत को बदल देगा उसका ताल्लुक़ बनूउमय्या से होगा।" इसी के तहत अपने मज्मूए में ख़ुद **मुहद्दिसे आज़म सऊदी अरब शैख़ मुहम्मद नासिरुद्दिन अल्बानी** ﷺ **(अलमुतवफ़्फ़ा-1420 हिजरी) लिखते हैं:** "इस हदीस में सुन्नत को तबदील कर देने से मुराद ख़लीफ़ा से इंत्ख़ाब के तरीक़े को बदलकर उसे विरासत बना देना है।" **मुस्नद अबुयाला और मज्म-उज्ज-ज़वाइद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन सबा ताबई ﷺ बयान करते हैं कि सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ ने हमें ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया: "क़सम है उस ज़ात की जिसने दाने को फाड़ा (फिर उससे नबातात निकाले) और मख़्लूख़ात को पैदा फ़रमाया, एक वक़्त आएगा कि मेरी दाढ़ी को मेरी सर के ख़ून से रंग दिया जाएगा।" एक शख़्स खड़ा हुआ और अर्ज़ किया अल्लाह तआला की क़सम! जो कोई भी ऐसी हरकत करेगा हम उसको उसके अह्लो अयाल समेत तबाह बर्बाद कर देंगे। सय्यिदना अली ﷺ ने फ़रमाया: "मैं तुम्हें अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिलाता हूँ कि ऐसी हरकत मत करना, मेरे क़त्ल के बदले में सिर्फ़ मेरे क़ातिल को ही क़त्ल करना।" उस शख़्स ने अर्ज़ किया: ऐ अमीरुल मोमिनीन ﷺ ! आप ﷺ के बाद हमारे लिए अपना कोई ख़लीफ़ा मुकरर फ़रमा दें। सय्यिदना अली ﷺ ने फ़रमाया: "नहीं बल्कि मैं तुम्हें उसी तरह छोड़ कर जाऊंगा जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें (बग़ैर ख़लीफ़ा के) छोड़ा था।" लोगों ने अर्ज़ किया अगर आप ﷺ हमे बग़ैर ख़लीफ़ा के छोड़े जा रहे हैं तो जब अल्लाह तआला से मुलाक़ात होगी तो क्या जवाब देंगे ? सय्यिदना अली ﷺ ने फ़रमाया: "मैं अर्ज़ करूंगा कि ऐ अल्लाह तआला मैं उनमें रहा जब तक तूने मुझे उन में रखा और जब तूने मुझे मौत दे दी तो मैंने तुझे उन पर निगरान छोड़ दिया, अब तेरी मर्ज़ी है, चाहे तो उनकी इस्लाह फ़रमा दे और चाहे तो उनको तबाह बरबाद फ़रमा दे।"

इब्ने अबी आसिम 63, सिलसिला-तुस-सहीह 1749, मुसनद अबी याला 586, मज्म-उज्ज-ज़वाइद14782, इस हदीस को इमाम हैशमी और हुसैन सलीम ने सहीह कहा है |

55 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना जरीर बिन अब्दुल्लाह बिजली ﷺ बयान करते हैं कि मैं यमन में था और वहां मेरी मुलाक़ात दो यमनी बाशिंदों, ज़ूकलाअ और ज़ूअम्र से हुई, मैं उन्हें रसूलुल्लाह ﷺ कि अहादीस सुनाने लग गया, (ये सुन कर) ज़ूउम्र कहने लगे "अगर आप कि बातें अपने नबी ﷺ के बारे में दुरुस्त हैं तो फिर (सुन लो) उन (नबी ﷺ) कि वफात को तो तीन दिन गुज़र चुके हैं।" फिर वह मेरे साथ ही सफ़र करते रहे हत्ता कि हम रास्ते में ही थे कि हमारे सामने मदीना मुनव्वरा से आने वाला एक क़ाफ़िला नमूदार हुआ, और हमने उन से (नबी ﷺ के मुताल्लिक़) पुछा तो उन्होंने बताया रसूलुल्लाह ﷺ वफात पा गए और

सय्यिदना अबुबकर ﷺ को खलीफा बना लिया गया है और सब लोग अमन व अमान से हैं। उन दोनों ने कहा: "अपने खलीफा को बताना कि हम आ रहे थे (मगर अब वापिस हो रहे हैं) और शायद दोबारा वापस आएँगे इन शा अल्लाह। फिर वह यमन को लौट गए। चुनांचे मैंने (मदीना पहुँच कर) सय्यिदना अबुबकर ﷺ से उन का सारा वाकिया बयान किया तो उन्होंने फ़रमाया: "तुम उन्हें (मेरे पास) ले कर क्यों नहीं आए?" फिर कुछ वक्त बाद (मुलाक़ात होने पर) ज़ूअम्र ने मुझसे कहा: "ऐ जरीर! मेरे दिल में तुम्हारी बड़ी इज्ज़त है और मैं तुम्हें एक (खास) बात बताता हूँ कि तुम अरब उस वक़्त तक खैर व इस्लाह में रहोगे जब तक तुम अपने हाकिम के इन्तेक़ाल पर दूसरा हाकिम बना लोगे मगर फिर जब (हुसूले इक्तिदार के लिए) तलवार (इस्तेमाल) होगी तो (तुम्हारे हाकिम) बादशाह बन जाएँगे जो बादशाह की तरह गज़बनाक हुआ करेंगे और बादशाहों की तरह खुश होंगे।" (यानी उनके मिजाज़ शाहाना और अतवार जाहराना होंगे) **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान करते हैं कि एक दिन मैं मिना में सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ के घर में था और वो अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷺ के आख़री हज में उनके साथ थे। सय्यिदना अब्दुर्रहमान ﷺ लौट आए और मुझसे कहने लगे: "काश तुम उस शख़्स को देखते जो आज अमीरुल मोमिनीन ﷺ के पास आया और कहने लगा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन ﷺ ! क्या आप उस फ़लां शख़्स से पूछताज नहीं करेंगे कि जो ये कहता है कि अगर सय्यिदना उमर ﷺ फ़ौत हो गए तो मैं फ़लां शख़्स की बैअत कर लूंगा क्योंकि सय्यिदना अबुबकर ﷺ की बैअत भी तो अचानक (बग़ैर किसी मंसूबे के) हुई थी और कामयाब रही थी? " उसकी ये ख़बर सुनकर सय्यिदना उमर गुस्से में आ गए और फ़रमाया: "इन्शा अल्लाह तआला आज शाम में ज़रूर लोगों को ख़ुत्बा दूँगा और उन्हें इन (साज़िशी) लोगों से ख़बरदार करूंगा जो लोगों से मामलात (यानी इक़्तदार) छीन लेना चाहते हैं।" इस पर सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ ने अर्ज़ किया: "ऐ अमीरुल मोमिनीन ﷺ ! अभी ऐसा ना कीजिएगा क्योंकि हज के मौक़े पर हर क़िस्म के आम्मी और बाज़ारी लोग भी जमा हुए होते हैं और यही लोग ख़ुत्बे के वक़्त आप ﷺ के क़रीब व जवार में इकठ्ठे होंगे और मुझे ख़ौफ़ है कि आप ﷺ कोई बात ऐसी कह दें कि जो ग़लत मतलब व मफ़्हूम के साथ हर तरफ़ फैल जाए और लोग उसे दुरुस्त स्याक़ व सबाक़ के साथ ना समझ पाएं, लिहाज़ा आप ﷺ थोड़ा सा इंतज़ार कर लें, हत्ता कि आप ﷺ मदीना मुनव्वरह पहुंच जाएं जो कि हिजरत और सुन्नत का गढ़ है, वहां आप ﷺ समझदार लोगों और मुअज़्ज़िज़ीन के साथ मख़्सूस मजलिस में बात करें ताकि आप ﷺ की गुफ़्तगू को सहीह और मौज़ूंव मफ़्हूम में लिया जा सके। सय्यिदना उमर ﷺ ने फ़रमाया: "ठीक है लेकिन अल्लाह तआला की क़सम! इन्शा अल्लाह तआला मैं मदीना मुनव्वरह पहुंचते ही पहला काम यही करूंगा।" सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान करते हैं कि हम लोग ज़ुलहिज्जा के आख़िर में मदीना मुनव्वरह वापस आए, और जुमा के दिन मैं सूरज ढलते ही जल्दी (मस्जिद में) चला गया। मैंने देखा कि सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ मिंबर के पास पहले से तशरीफ़ फ़रमा हैं, मैं भी उनके क़रीब ही बैठ गया और मेरा घुटना उनके घुटने को छू रहा था। अभी ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी कि सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷺ तशरीफ़ ले आए। उन्हें आता देखकर मैंने सय्यिदना सईद ﷺ से कहा कि आज वो ऐसा ख़ुत्बा देंगे कि ख़लीफ़ा बनाए जाने के बाद से आज तक वैसा ख़ुत्बा नहीं दिया होगा। सय्यिदना सईद ﷺ ने मेरी बात से इत्तफ़ाक़ ना किया और कहने लगे कि नहीं, कोई बात नहीं कहेंगे। सय्यिदना उमर ﷺ आकर मिम्बर पर बैठ गए, और जब मौअज़्ज़िन (अज़ान से) फ़ारिग़ हो गया तो आप ﷺ ने अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद इरशद फ़रमाया: "आज मैं ऐसी बात कहने वाला हूँ जो अल्लाह तआला की तरफ़ से ही सुझाई गई है, शायद ये मेरी ज़िंदगी की आख़री गुफ़्तगू हो, जो शख़्स भी इसे सुन ले और समझ ले तो उस का फ़र्ज़ है कि जहां तक वो उसे पहुंचा सके, पहुंचा दे, और जो इसे ना समझ सके, तो मैं उसे इजाज़त नहीं देता कि इसे आगे बयान करे और (कम फ़हमी की वजह से) ग़लत बयानी का मुर्तकिब हो ..... मुझे पता चला है कि तुम में से किसी ने ये कहा है कि अगर सय्यिदना उमर ﷺ फ़ौत हो गए तो हम फ़लां शख़्स की बैअत कर लेंगे। ऐ लोगों! देखना तुम में से किसी शख़्स को इस बात से ये ग़लतफ़हमी ना हो कि सय्यिदना अबुबकर ﷺ की बैअत भी तो अचानक हुई थी और इसके बावजूद मुन्अक़िद हो गई थी और कामयाब ठहरी थी। ख़बरदार ! वो बैअत वाक़ई हुई तो इसी तरह अचानक थी लेकिन अल्लाह तआला ने (महज़ अपने फ़ज़्लोकरम से ख़ास) उस मौक़े पर शरारत और फ़ित्ना से महफ़ूज़ रखा (और सब मुसलमानों ने उस बैअत को तस्लीम कर लिया था)। लेकिन अब तुम में (क़यामत तक) सय्यिदना अबुबकर ﷺ जैसा कौन हो सकता है कि सबके सब उस एक पर मुत्तफ़िक़ भी हो जाएं (यानी अब ऐसा दोबारा होना मुम्किन नहीं लिहाज़ा अब ख़लीफ़ा के इंतख़ाब के मामले में मशावरत के बग़ैर कोई चारह नहीं) अब जिस ने भी मुसलमानों के मश्वरे के बग़ैर किसी भी शख़्स की (ज़बर्दस्ती ख़िलाफ़त के लिए) बैअत मुन्अक़िद की (तो याद रखना) वो बैअत करने वाला और जिसकी बैअत की गई होगी, (फ़साद के) नतीजे में दोनों ही क़त्ल कर दिए जाएंगे।" **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ का बयान है.....अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "अब जिस ने भी मुसलमानों के मशवरे के बगैर किसी भी शख्स कि (ज़बरदस्ती ख़िलाफ़त के लिए) बैअत मुनाक़द की (तो याद रखना) न तो बैअत करने वाले कि बैअत सहीह होगी और न जिस (ख़लीफ़ा) की बैअत की गई उसकी बैअत मुनाक़द होगी।" सहीह बुखारी 4359, 6830, मुसनद अहमद 391 (जिल्द 1, पेज 242)

इस हदीस को शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने इमाम मुस्लिम की शर्त पे सहीह कहा है

56 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से दो क़िस्म के (उलूम के) प्याले महफ़ूज़ किये हैं, एक (इल्म ए शरीअत) को मैंने लोगों में नशर कर दिया है, और दूसरे (मुस्तक़्बिल में होने वाले फ़ित्नों से मुताल्लिक़ रसूलुल्लाह ﷺ की बताई हुई ख़बरों) को अगर बयान करूं तो (इन मौजूदह हुक्मरानों के करतूतों की अस्लियत खुलने के बाईस उनकी तरफ़ से) मेरी शह रग ही काट दी जाएगी।" **सहीह बुखारी की एक और हदीस में है:** सय्यिदना सईद बिन उमर ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि मैं मस्जिदे नबवी शरीफ़ में सय्यिदना अबु हुरैरा ﷺ के हमराह बैठा हुआ था, और हमारे साथ मरवान (बिन हक्म) भी था।सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने सादिक़ व मस्दूक़ (रसूलुल्लाह ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना था: "मेरी उम्मत की हलाकत ख़ानदाने कुरैश (में से बनू उमय्या) के नौजवान लड़कों के हाथों से होगी।" (و العیاذ باللہ تعالی) ये सुनकर मरवान (ख़ुद ही) कहने लगा: "उन छोकरों पर अल्लाह तआला की लानत हो!" सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ ने फ़रमाया: "अगर मैं चाहूँ तो फ़लां और बनूफलां कह (कर उन छोकरों के नाम भी बता) सकता हूँ।" (रावी ए हदीस कहते हैं कि) जब वो लोग शाम के हुक्मरान बन गए तो मैं अपने दादा (सईद ताबई رحمہ اللہ) के साथ बनी मरवान के पास जाया करता था, तो मेरे दादा जान जब उन कम उमर लड़कों को देखते तो फ़रमाते: "ऐन मुम्किन है कि ये वही लड़के हों।" हमने उन से जवाबन अर्ज़ किया: "आप (सय्यिदना सईद बिन उमर ताबई رحمہ اللہ) ही बेहतर जानते हैं।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ख़ुद सुना था: "कुरैश का ये क़बीला (मुराद बनू उमय्या, और इसके सबूत में इसी मुक़ाबले की हदीस नम्बर 2 पहले ही गुज़र चुकी है) मेरी उम्मत को बर्बाद करेगा।" हमने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ! फिर आप हमें (ऐसी हालत में) क्या हुक्म देते हैं?" आपने जवाबन इरशद फ़रमाया: "काश कि लोग उनसे अलग ही रहें (यानी उम्मत की बर्बादी का सबब बनने वाले हुक्मरानों के साथ किसी भी बुरे अमल में हरगिज़ शरीक ना हों)।"

सहीह बुखारी 120, 7058 और सहीह मुस्लिम 7325

57 **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से ख़ुद सुना था: "70 की दहाई के आग़ाज़ (61 हिजरी) और छोकरों की हुक्मरानी से अल्लाह तआला की पनाह मांगा करो।" **दलाइल-लुन-नबुवा लिल बय्हकी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ मदीना मुनव्वरह के बाज़ार में चलते फिरते ये दुआ मांगा करते थे: "ऐ अल्लाह तआला! मुझे 60 (के सन) तक बाक़ी ना रखना (ऐ लोगों) तुम्हारी बरबादी हो! हज़रत मुआविया ﷺ की कन्पटियों को मज़बूती से पकड़ (कर उन्हें रोक) लो। ऐ अल्लाह तआला! मुझे छोकरों के इक़्तिदार के दौर तक बाक़ी ना रखना।"

मुसनद अबि याला की हदीस में है: सय्यिदना अबुहुरैरा رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़्वाब में देखा कि गोया हकम के बेटे (मरवान बिन हकम और उसकी औलाद) आप ﷺ के मिम्बर शरीफ़ पर उछल कर चढ़ते हैं और उतरते हैं। (ये ख़्वाब देखने के बाद) आप सख़्त तैश (ग़ुस्से की हालत) में आ गए और इरशाद फ़रमाया: "मैं क्या देख रहा हूँ कि हकम के बेटे (मरवान बिन हकम और उसकी औलाद) मेरे मिंबर पर बंदरों की तरह उछल कूद कर रहे हैं !" सय्यिदना अबुहुरैरा رضی اللہ عنہ का बयान है: "इस (ग़ैबी ख़बर मिलने) के बाद वफ़ात तक आपको कभी मुतमईन और मुस्कराता हुआ नहीं देखा गया।"

मुसनद अहमद 8302, (जिल्द 4, पेज 313), मिश्कात-उल-मसाबिह 3716, दलाइल-लुन-नबुवा लिल बय्हकी 2801, इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने मकालात जुज़ 6 में सहीह कहा है
मुसनद अबी याला 6430, इस हदीस को शेख हुसैन सलीम असद और शेख इर्शादुल हक़ अल अशरी और शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने मकालात जुज़ 6 में सहीह कहा है

58 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना आइद बिन अम्र ﷺ, उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद (जो यज़ीद बिन मुआविया की तरफ़ से कूफ़ा के लिए गवर्नर मुक़र्रर था) के पास आए और (बतौर नसीहत) फ़रमाया: "ऐ बेटा! मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़ुद फ़रमाते हुए सुना है: "बदतरीन हुक्मरान वो हैं, जो ज़ालिम हों, इसलिए तुम उनमें शामिल होने से बच जाओ।" ये सुनकर वो (उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद गुस्ताख़ी करते हुए) बोला: "बैठ जाओ, तुम तो सहाबा رضی اللہ عنہم में से महज़ भूसा (एक गिरे पड़े ग़ैर अहम शख़्स) हो।" (نعوذ باللہ من ذلك) सय्यिदना आइद बिन अम्र رضی اللہ عنہ ने जवाबन फ़रमाया: "क्या सहाबा رضی اللہ عنہم में से भी कोई शख़्स भूसा था ? भूसा तो उनके बाद में आने वाले (तुम जैसे) लोगों में है।" **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** सय्यिदना अबुतालूत ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैंने सय्यिदना अबुबर्ज़ह ﷺ को (गवर्नर यज़ीद बिन मुआविया) उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के पास आते देखा जबकि वो दस्तख़्वान पर था। उसने सय्यिदना अबुबर्ज़ह ﷺ को आते हुए देख कर कहा:"ये है तुम्हारा ठिगना मुहम्मदी ﷺ !" (نعوذ باللہ من ذلك) सय्यिदना अबु-बर्ज़ह ﷺ उसकी (तंज़या) बात को समझ गए और जवाबन फ़रमाया: "मुझे गुमान नहीं था कि मैं ऐसे लोगों (के दौरे हकूमत) तक ज़िंदा रहूँगा जो मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की सोहबत पर आर दिलाएंगे।" उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद बोला: "मुहम्मद ﷺ की सहाबियत तुम्हारे लिए बाइसे ज़ीनत है, आर का सबब नहीं।" फिर कहने लगे: मैंने तुम्हें इसलिए बुलवाया है कि तुमसे हौज़ (कौसर) के मुताल्लिक़ पूछूं, क्या तुमने रसूलुल्लाह ﷺ से उसके बारे

में कुछ सुना था ?" सय्यिदना अबु-बर्ज़ह ﷺ ने फ़रमाया: "हां! ना एक बार, ना दो बार, ना तीन बार, ना चार बार और ना पाँच बार (यानी मुताअदिद बार सुना था) और जो शख़्स उस (हौज़ ए कौसर) के वजूद का इंकार करे तो अल्लाह तआला उसको उस से पीना नसीब ना फ़रमाए।" सय्यिदना अबुतालूत ताबई ﷺ का बयान है: "फिर सय्यिदना अबुबर्ज़ह ﷺ गुस्से की हालत में वहां से तशरीफ़ ले गए। "

सहीह मुस्लिम 4733, सुनन अबु दाऊद 4749, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , और शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है |

59 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना बराअ बिन आज़ब ﷺ बयान फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से खुद सुना था: "अन्सार से सिर्फ मोमिन ही मुहब्बत करेगा, और अन्सार से सिर्फ मुनाफ़िक़ ही बुग्ज़ रखेगा। चुनांचे जिस ने अन्सार से मुहब्बत की तो अल्लाह तआला उस से मुहब्बत फ़रमायेगा, और जिसने अन्सार से दुश्मनी रखी तो अल्लाह तआला उस से दुश्मनी रखेगा।" **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अनस ﷺ बयान फरमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ सिर मुबारक पर पट्टी बांधे (मर्ज़े वफ़ात में) बाहर तशरीफ़ लाए और मिम्बर पर जलवा अफरोज़ हुए और उसके बाद आप ﷺ कभी मिम्बर पर तशरीफ़ न ला सके। आप ﷺ ने अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद इरशाद फ़रमाया: " मैं अन्सार के बारे में तुम्हें नसीहत करता हूँ कि वह मेरे जिस्म व जान हैं। वह अपनी जिम्मेदारियां निभा चुके, उनके हुक़ूक़ बाक़ी हैं। तुम (मेरे बाद) उनके नेकोकारों की तरफ़ से उज़्र क़बूल करना और उनके ख़ताकारों से दरगुज़र करना।" **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ बयान फरमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "अगर हिजरत न होती तो मैं भी अन्सार में से एक आदमी होता। अगर सारे लोग एक वादी में चलें और अन्सार दूसरी घाटी में तो मैं अन्सार की घाटी में चलूँगा। अन्सार अस्तर (अंदरूनी लिबास) हैं जबकि बाक़ी लोग ऊपर का कपड़ा हैं। (ऐ अन्सार !) बेशक तुम लोग मेरे बाद तरजीह देखोगे तो तुम सब्र करना यहाँ तक कि मुझ से हौज़ ए कौसर पर मुलाक़ात करना।" **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ का बयान है कि सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ जो रसूलुल्लाह ﷺ के मेज़बान बने थे, जब रोम के युद्ध में शरीक हुए तो (अमीरे लश्कर) हज़रत मुआविया ﷺ ने उसने कहा: "क्या तुम उस्मान ﷺ के कातिलो में शामिल नहीं ?" और उनके साथ बदसुलूकी का ममला किया, फ़िर गजवा से वापसी पर भी ऐसा ही सुलूक किया और उनकी तरफ़ कोई तवज्जो न दी तो सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ ने हज़रत मुआविया ﷺ से फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने हम (अंसारियों) से पहले ही फरमा दिया था कि तुम लोग किन किन आज़माइशों में मुब्तिला होगे ! हज़रत मुआविया ﷺ ने कहा तो फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने तुम्हें क्या हुक्म दिया था ? सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ ने कहा कि आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम सब्र करना यहाँ तक कि मुझ से कौसर की हौज़ पर मुलाक़ात करना।" हज़रत मुआविया ﷺ ने कहा तो फिर तुम सब्र ही करो। इस (गुस्ताखी) पर सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ गुस्से में आ गए और क़सम खाई कि पूरी ज़िन्दगी हज़रत मुआविया ﷺ से कलाम नहीं करूँगा। जब सय्यिदना अली इब्ने अबितालिब ﷺ ने सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ को बसरा का गवर्नर बनाकर भेजा तो वहां सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ उनको मिलने के लिए आए। सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ ने फ़रमाया: मैं आप ﷺ के लिए आज वैसे ही घर ख़ाली कर दूंगा जैसे आप ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ के मेहमान नवाज़ी के लिए किया था। फिर उन्होंने अपने घर वालों को वहां से निकल जाने का हुक्म दिया और सारा घर साज़ो सामान समेत सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ को तोहफ़े में दे दिया, फिर पूछा क्या कोई और ज़रुरत है ? सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ ने फ़रमाया: मुझ पर चार हज़ार दरहम का क़र्ज़ है और मुझे अपनी ज़मीन पर काम करने के लिए आठ गुलामों की ज़रूरत है। इस पर सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ ने सय्यिदना अबू अय्यूब अंसारी ﷺ को बीस हज़ार दरहम और चालीस गुलाम तोहफ़े में दे दिए।

सहीह बुखारी 3783,3799,4330, अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 5935, 5941 इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने सहीह कहा है

60 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** अब्दुर रहमान बिन शुमासह का बयान है मैं उम्मुल मौमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ के पास कुछ पूछने के लिए हाजिर हुआ उन्होंने मुझसे पूछा कि तू किस जगह के लोगों में से हैं मैंने अर्ज़ किया मिस्र वालों में से हूँ | इस पर उन्होंने फरमाया तुम्हारे मौजूदा हाकिम (जिसने हजरत मुआविया ﷺ की जमात में सय्यिदना अली ﷺ की तरफ से मुकर्रर कर्दा मिस्र के हाकिम मेरे भाई मोहम्मद बिन अबी बकर ﷺ पर छुपकर हमला करके उन्हें शहीद कर के मिस्र पर कब्जा कर लिया) का क्या हाल था उस लड़ाई में ? मैंने अर्ज किया मैंने तो उस नए हाकिम में कोई बात बुरी नहीं देखी हममें से किसी का ऊँट मर जाता तो वह उसे नया ऊँट देता है, और अगर हमारा गुलाम मर जाये तो नया गुलाम दे देता है और अगर खर्चे की जरूरत पड़ जाए तो खर्चा भी दे देता है | सय्यिदा आयशा ﷺ ने फरमाया: तुम्हारे उस हाकिम ने मेरे भाई मोहम्मद बिन अबी बकर ﷺ के साथ जो सलूक किया (यानी मोहम्मद बिन अबी बकर ﷺ को शहीद कर के उनकी लाश मुर्दा गधे की खाल में डाल कर जलाई गई) ये हरकत मुझे उस हदीस को बयान करने से नहीं रोक सकती के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, मेरे इसी हुजरे में फ़रमाया था :ऐ अल्लाह तआला ! मेरी उम्मत का जो हाकिम लोगों पर सख्ती करें, तू भी उस पर सख्ती फरमा और जो हाकिम उन लोगो पर नरमी करे. तू भी उस पर नरमी फरमा |

अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है: मरवान बिन हकम का बयान है कि मैं हजरत मुआविया ﷺ के हमराह उम्मुल मौमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ की खिदमत में हाजिर हुआ तो उन्होंने फरमाया: "ए मुआविया ! तुमने हुजर बिन आदि और उनके साथियों को शहीद कर दिया और तुमने क्या कुछ नहीं किया | तुझे इस बात से ज़रा खौफ़ नहीं आता कि मैं तेरे लिए एक आदमी छुपा कर रखू और वह तुझे (खुफिया हमला कर के) क़त्ल कर दे ? हजरत मुआविया ﷺ ने अर्ज किया (आप ऐसा ना करें क्योंकि) मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना है "ईमान अचानक हमला कर के कत्ल करने से रोकता है, मोमिन अचानक हमला नहीं करता" | **नोट** सय्यिदना अली ﷺ के हामी मशहूर सहाबी सय्यिदना हुजर इब्ने आदि ﷺ और उनके साथियों की मज्लूमाना शहादत की मुकम्मल तफ्सीलात अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस नंबर 5972 से लेकर 5984 में मौजूद है) **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना सईद बिन मुसैय्यब ﷺ फरमाते है कि हज़रत मुआविया ﷺ , उम्मुल मौमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने फरमाया क्या तुम्हें इस बात का खतरा नहीं है कि मैं एक आदमी को खुफिया तौर पर बैठाऊ और वह तुम्हें कत्ल कर दे ? हजरत मुआविया ﷺ ने अर्ज़ किया: आप ऐसा नहीं कर सकती क्योंकि मैं तो अमन वाले घर में हूं और मैंने रसूलल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना है "ईमान बहादुरी को बेडी डाल देता है" | अच्छा आप यह बताएं कि मेरा आपके साथ और आपकी ज़रूरियात के हवाले से रवैय्या कैसा है ? सय्यिदा आयशा ﷺ ने फरमाया सही है | हज़रत मुआविया ﷺ ने अर्ज़ किया: तो फिर आप हमें और बाकी लोगों को अपने हाल पर छोड़ दीजिए यहां तक कि हम अपने परवरदिगार से जा मिले" |

सहीह मुस्लिम 4722, अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 8038, मुसनद अहमद16957, (जिल्द 7, पेज 21), इस हदीस को शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है

नोट सय्यिदना इमाम मोहम्मद बिन सीरीन ताबई ﷺ का कौल है" "रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करदा अहादीस के मामले में हज़रत मुआविया ﷺ कि ज़ात पर कोई तोहमत नहीं है" | (यानी हजरत मुआविया ﷺ के बअज़ आमाल की वजह से उनकी अहादीस पर असर नहीं पड़ता क्योंकि किसी सहाबा ﷺ से रसूलुल्लाह ﷺ पर झूट बांधना साबित नहीं | इसलिए अहले सुन्नत वल जमाअत के यहां ये मुसल्लमा उसूल है "अल सहाबता कुल्लहुम अदूल" "الصحابة كلهم عدول" "तमाम सहाबा ﷺ आदिल है")

सुनन अबु दाऊद 4129, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है |

नोट इमाम अहमद बिन हंबल और इमाम बुखारी के उस्ताद इमाम अली बिन जाद ﷺ (अल मुतावफ्फा230 हिजरी) फरमाते हैं "मुझे यह बुरा नहीं लगेगा कि अल्लाह तआला हजरत मुआविया ﷺ को (कयामत के दिन) अज़ाब दे" |

तहज़ीब-उत-तहज़ीब लिल इमाम इब्ने हजर अस्कलानी जिल्द 7 पेज 257 इस कौल को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने किताब क़याम-ए-रमज़ान में पेज 77 में सहीह कहा है |

नोट इमाम मुल्ला अली कारी हनफी ﷺ (अल मुतावफ्फा1014 हिजरी) लिखते हैं: मैं कहता हूं जब हज़रत मुआविया ﷺ पर वाजिब था कि वह अपनी बगावत से रुजू करके ख़लीफा-ए-बरहक़ सय्यिदना अली ﷺ की इताअत कि तरफ आ जाते, उनकी मुखाल्फत छोड़ देते और ख़िलाफ़त-ए-मंफिया की तलब तर्क कर देते, जो उन्होंने नहीं किया, तो इससे यह जाहिर होता है कि हजरत मुआविया ﷺ बातिन में बाग़ी थे और ज़ाहिर में सिर्फ लोगों को दिखाने के लिए खुनी-ए-उस्मान ﷺ को ढाल बनाए हुए थे चुनांचे ये हदीस (जो सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम दोनों में मौजूद है) सय्यिदना अम्मार को बागी जमात क़त्ल करेगी") उनकी पोशीदा चीज़ को जाहिर करने वाली है और उनकी बगावत को रोकने वाली है ताहम किताबी तकदीर में इसी तरह लिखा हुआ था जैसा कि हो गया , हजरत मुआविया ﷺ के अमल और रवैय्ये की वजह से कुरआन व हदीस दोनों महजूर व मतरूक (जिस अमल को छोड़ दिया गया हो) हो गए |

इस कौल को मिर्कात अल मफातिह शरह मिश्कात-उल-मसाबिह लिल इमाम मुल्ला अली क़ारी ने हदीस न 5878 में सहीह कहा है |

नोट इमाम मोहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब ﷺ (अल मुतवफ्फा 1206 हिजरी) के बेटे इमाम अब्दुल्ला ﷺ लिखते हैं "हजरत मुआविया ﷺ ने अहले शाम समेत सय्यिदना अली ﷺ की बैअत नहीं की, फिर उनकी सिर्फ मुखाल्फत ही नहीं की बल्कि उन पर कत्ल-ए-उस्मान ﷺ में इआनत और उसी पर रजामंदी का इल्जाम भी धरा| मगर अल्लाह तआला ने सय्यिदना अली ﷺ को उसी इल्ज़ाम से बचा लिया.....| सय्यिदना अम्मार ﷺ की शहादत के बाद हजरत अमर बिन आस ﷺ ने लड़ाई तर्क कर दी और बहुत से लोगो ने भी उनकी पैरवी की | हसरत मुआविया ﷺ ने उनसे पूछा "तुमने लड़ाई क्यों तर्क की है" ? उन्होंने कहा "हमने अम्मार ﷺ को कत्ल कर दिया है और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है आप ﷺ ने फरमाया अम्मार ﷺ को बाग़ी जमाअत कत्ल करेगी" ! मालूम हुआ कि हम बागी हैं" मुआविया ﷺ बोले "खामोश रहो ! वल्लाह ! तुम ऊंट की तरह हमेशा अपने ही पेशाब से फिसलते हो | क्या हमने उनको कत्ल किया है ? उनको अली ﷺ और उनके साथियों ने कत्ल किया है जिन्होंने उनको हमारे दरमियान ला फेंका | हम तो अपने बचाव के लिए लड़ रहे थे, जिसमें वह कत्ल हो गए" | सय्यिदना अली ﷺ को इसकी खबर हुई तो (तो इल्जामी जवाब के तौर पर) फरमाया: अगर हमने उनको कत्ल किया है तो फिर अपने चाचा सय्यिदना हमज़ा ﷺ को रसूलुल्लाह ﷺ ने क़त्ल किया है जिन्होंने उनको कुफ्फार के मुकाबले में भेजा था !..... बनु उमय्या सय्यिदना अली ﷺ की तन्कीस और उनके बारे में नाज़ेबा अल्फाज इस्तेमाल करते रहे, मगर इस अमल से उलेमा के दिल में सय्यिदना अली ﷺ की मोहब्बत बढ़ गई और कर्म और और क़द्र-ओं-मंज़िलत (मक़ाम और मर्तबा) इजाफा हो गया | उमर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ कहते हैं बनु उमय्या 60 साल तक उनको गालियाँ देते रहे मगर वह उनका कुछ ना बिगाड़ सके बल्कि उनकी शान पहले से भी बुलंद हो गई |

F सय्यिदना हुसैन ﷺ के फ़ज़ाइल का बयान और यज़ीद बिन मुआविया की मलूकियत में उसके गवर्नर उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के हाथों मज़लूमाना शहादत !

61 **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा ने मुझ से पूछा कि तुमने रसूलुल्लाह ﷺ से (आख़िरी बार) कब मुलाक़ात की है? मैंने कहा कि मुझे आप ﷺ से मिले हुए इतना (लम्बा) अर्सा बीत गया है। इस पर मेरी वालिदा ने मुझे सख़्त सुस्त कहा। मैंने (मअज़रत करते हुए) कहा कि बस अब जाने दीजिए, मैं आप ﷺ के साथ मग़रिब की नमाज़ अदा करता हूँ और आप ﷺ से दर्ख़्वास्त करूंगा कि आप ﷺ मेरे और आप (वालिदा) के लिए मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाएं। चुनांचे मैं आप ﷺ की ख़िदमत ए अक़्दस में हाज़िर हुआ और मग़रिब की नमाज़ अदा की तो आप ﷺ (नफ़्ली) नमाज़ में मशगूल रहे यहां तक कि मैंने इशा कि नमाज़ भी आपके साथ अदा की। फिर आप ﷺ वापस (घर को) चले तो मैं भी (अंधेरे में) आपके पीछे पीछे चल दिया। आप ﷺ ने मेरी (क़दमों की) आवाज़ सुनी तो दरयाफ़्त फ़रमाया: "कौन ? हुज़ैफ़ा हो ?" मैंने अर्ज़ किया: "जी हां!" आप ﷺ ने पूछा: "कोई काम है ? फिर आप ﷺ ने (ख़ुद ही) दुआ दी: "अल्लाह तआला तेरी और तेरी मां की बख़्शिश फ़रमाए।" (राज़दार-ए-रसूल ﷺ सय्यिदना हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ का मज़ीद बयान है कि) फिर आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "आज रात एक ऐसा फ़रिश्ता ज़मीन पर उतरा है जो पहले कभी नहीं आया और उसने अल्लाह तआला के हुक्म से मुझे सलाम कहा और ख़ुशख़बरी दी कि (मेरी बेटी सय्यिदा) फ़ातिमा ﷺ अहले जन्नत की औरतों की सरदार होंगी और (मेरे नवासे) हसन और हुसैन ﷺ जन्नती जवानों के सरदार होंगे।" **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "हसन और हुसैन ﷺ जन्नती जवानों के सरदार होंगे और उनके वालिद (सय्यिदना अली ﷺ) उन दोनों से बेहतर (जन्नती मक़ाम पर) होंगे।"

जामिया त्रिमिज़ी 3781, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , और शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है |
अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4779, सिलसिला-तुस-सहीह 796, इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी, शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , और शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने फ़ज़ाइले सहाबा में सहीह कहा है |

62 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ सय्यिदना हसन ﷺ और सय्यिदना हुसैन ﷺ को (अल्लाह तआला की) पनाह में दिया करते और फ़रमाते: "तुम्हारे बाप सय्यिदना इबराहीम ﷺ (अपने दो बेटों) सय्यिदना इस्माईल ﷺ और सय्यिदना इस्हाक ﷺ को भी इन्ही अलफ़ाज़ के साथ पनाह में दिया करते थे और मैं तुम दोनों को अल्लाह तआला के कलिमात ए तआमह की पनाह में देता हूँ हर शैतान से (बचाव), और ज़हरीले जानवर से, और हर नुकसान पहुँचाने वाली नज़रे बद से (बचाव के लिए)।" **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना उसामा बिन ज़ैद ﷺ बयान करते हैं कि मैं किसी काम से रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत ए अक़्दस में रात के वक़्त हाज़िर हुआ, तो आप ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए इस हाल में कि आप ﷺ ने अपनी चादर में कोई चीज़ लपेट कर उठा रखी थी, मालूम नहीं क्या चीज़ थी. जब मैंने अपने काम की बात आप ﷺ से अर्ज़ कर ली तो पूछा: "आप ﷺ ने चादर में क्या उठा रखा है?" ये सुनकर आप ﷺ ने चादर खोल कर दिखाई तो (उसमें) सय्यिदना हसन ﷺ और सय्यिदना हुसैन ﷺ थे, (नोट: सय्यिदना हसन और सय्यिदना हुसैन के नामों के साथ ﷺ ख़ुद इमाम तिरमिज़ी ﷺ ने लिखा है) जिन्हें आपने अपनी गोद मुबारक में उठाया हुआ था। फिर आप ﷺ ने यूं दुआ फ़रमाई: "ये दोनों मेरी औलाद हैं और मेरी बेटी के बेटे हैं, ऐ अल्लाह तआला! मैं इन दोनों से मुहब्बत रखता हूँ, इसलिए तू भी इन से मुहब्बत फ़रमा और उस शख़्स से भी मुहब्बत फ़रमा जो इन दोनों से मुहब्बत रखे।" **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना याला बिन मरह ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "हुसैन ﷺ मुझ से है और मैं हुसैन ﷺ से हूँ, अल्लाह तआला उस शख़्स से मुहब्बत फ़रमाए जो हुसैन ﷺ से मुहब्बत करता है, हुसैन ﷺ मेरे नवासों में से एक (अज़ीमुश्शान) नवासा है।"

सहीह बुख़ारी 3371, जामिया त्रिमिज़ी 3769, 3775, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है |

63 **जामिया त्रिमिज़ी, सुनन अबूदाऊद और सुनन नसाई की हदीस में है:** सय्यिदना बरीरा ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें ख़ुतबा इरशाद फरमा रहे थे कि अचानक सय्यिदना हसन ﷺ और सय्यिदना हुसैन ﷺ आ गए। (नोट: सय्यिदना हसन और सय्यिदना हुसैन के नामों के साथ ﷺ ख़ुद इमाम तिरमिज़ी ﷺ और इमाम नसाई ﷺ ने लिखा है) उन्होंने सुर्ख़ क़मीसें पहन रखी थीं, वो चलते चलते गिर पड़ते थे। रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर से नीचे उतरे, और उन दोनों को उठाया और अपने सामने बिठा लिया और फिर फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने सच फ़रमाया: "तुम्हारे अमवाल और औलाद में तुम्हारे लिए आज़माइश है।" [अत्तग़ाबुन: 15] मैने जब इन बच्चों को चलते और गिरते हुए देखा तो मैं सब्र न कर सका हत्ता कि मैंने अपना ख़ुतबा काट कर उन्हें उठा लिया।" **सुनन नसाई की हदीस में है:** सय्यिदना शद्दाद ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास नमाज़ ए इशा की इमामत के लिए बाहर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त आप ﷺ ने सय्यिदना हसन ﷺ या सय्यिदना हुसैन ﷺ को उठाया हुआ था। रसूलुल्लाह ﷺ इमामत के लिए आगे हो गये और नवासे को

वही ज़मीन पर बैठा लिया । फिर तकबीर कह कर नमाज़ शुरू फरमाई । आप ने नमाज़ के दौरान सजदे में ताखीर फरमा दी तो मैंने नमाज़ में ही सिर उठा कर देखा कि आप ﷺ के नवासे पुश्त मुबारक पर चढ़े हुए हैं और उस वक़्त आप ﷺ सजदा की हालत में हैं। फिर जब आप ﷺ नमाज़ से फारिग़ हुए तो लोगों ने अर्ज़ किया कि आप ﷺ ने दौरान ए नमाज़ जब सजदा में ताखीर फरमाई तो हम लोगों ने गुमान किया कि शायद आप ﷺ के साथ कोई हादसा पेश आ गया है या फिर आप ﷺ पर (हालते सजदा में) वही नाज़िल हो रही है। आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐसी कोई बात नहीं थी। दरअसल मेरा बेटा मुझ पर सवार हुआ तो मुझे ये बुरा महसूस हुआ कि मैं सजदे से जल्दी सिर उठा लूँ और उस बच्चे की ख्वाहिश मुकम्मल न हो सके।" (नोट: मुसनद अहमद की हदीस में सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ ने सय्यिदना हसन ﷺ और सय्यिदना हुसैन ﷺ दोनों से मुताल्लिक बिलकुल ऐसा ही वाकिया बयान किया है।)

जामिया त्रिमिज़ी 3774, सुनन अबु दाऊद 1109, सुनन नसाई 1414, 1142, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है ।
मुसनद अहमद 10669 (जिल्द 4, पेज 877) इस हदीस को शेख़ शोएब अल-अर्नौत ने सहीह कहा है

64 **मुसनद ए अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अबु अब्दुल्लाह ताबई ﷺ के बेटे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन नजी ﷺ अपने वालिद से बयान करते हैं जो सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ के लिए (सफ़र में) सामान ए तहारत का बंदोबस्त करते थे कि वो सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ के साथ सफ़र में थे, जब आप सिफ़्फ़ीन को जाते हुए (मक़ाम) नैनवा के बराबर पहुंचे तो आप ﷺ ने बुलंद आवाज़ से कहा: "ऐ अबु अब्दुल्लाह ! (ये सय्यिदना हुसैन बिन अली ﷺ की कुनियत थी) फ़रात के किनारे सब्र करना, ऐ अबु अब्दुल्लाह! फ़रात के किनारे सब्र करना, मैंने पूछा: "क्या (ख़ास) बात हो गई (ऐ अमीरुल मोमिनीन ﷺ)?" सय्यिदना अली बिन अबितालिब ﷺ ने फ़रमाया: "एक दिन मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पास हाज़िर हुआ, तो (क्या देखता हूँ कि) आप ﷺ की मुबारक आंखों से आंसू रवां थे, मैंने (बेचैन होकर) अर्ज़ किया: "क्या आप ﷺ को किसी ने नाराज़ किया है? आप ﷺ की मुबारक आंखों से आंसू क्यों बह रहे हैं ?" रसुलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "नहीं! बल्कि अभी अभी सय्यिदना जिब्राईल ﷺ मेरे पास से उठ कर गए हैं और उन्होंने मुझे (अल्लाह तआला की तरफ़ से) ये ख़बर दी है कि बेशक हुसैन ﷺ को फ़रात के किनारे क़त्ल कर दिया जाएगा। फिर उन्होंने पूछा कि क्या में आप ﷺ को हुसैन ﷺ के मक़तल की मिट्टी लाकर दिखाऊं ? मैंने कहा हां दिखाओ ! चुनांचे उन्होंने मिट्टी की एक मुठ्ठी भर कर मुझे दी, तो इस पर मैं अपने आंसू ना रोक सका।" **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम और सिलसिला-तुस-सहीह की हदीस में है:** सय्यिदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ बयान करते हैं कि रसूललुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "सय्यदुशशोहदा (यानी शहीदों के सरदार) सय्यिदना हमज़ा बिन अब्दुलमुत्तलिब ﷺ हैं और वह शख्स (भी सय्यदुशशोहदा है) जिसने किसी ज़ालिम हाकिम को (नेकी का) हुक्म दिया और (बुराई से) रोका तो उस (हाकिम) ने (इस हक़गोई के पादाश में) उसे क़त्ल कर दिया।" (नोट: ये सहीह हदीस मुबारक सय्यिदना हुसैन बिन अली ﷺ के सय्यादुश शोहदा होने पर एक बहुत मज़बूत दलील है। (والحمدلله)

मुसनद अहमद 648, (जिल्द 1, पेज 336) इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने फ़ज़ाइले सहाबा में सहीह कहा है ।
सिलसिला-तुस-सहीह 822, अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4884, सिलसिला-तुस-सहीह 374, इस हदीस को इमाम हाकिम और शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी ने सहीह कहा है ।

65 **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान करते हैं कि एक दिन मैंने दोपहर के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ को (ख्वाब में) देखा, (इस हाल में) कि आप ﷺ के बाल मुबारक बिखरे हुए, और आप ﷺ पर गर्द लगी हुई है, और आप ﷺ के पास एक शीशी है, जिसमें ख़ून है। मैंने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ ! ये क्या (माजरा) है ?" रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "ये हुसैन ﷺ और उसके साथियों का ख़ून है जिसे मैं आज सुबह से इकठ्ठा कर रहा हूँ।" सय्यिदना अम्मार ताबई ﷺ का बयान है: "हमने वो (ख्वाब वाला) दिन याद रखा, और फिर (बाद में) हमने तस्दीक़ कर ली कि उसी (61 हिजरी में 10 मुहर्रमुलहराम के) दिन वो (सय्यिदना हुसैन ﷺ मैदान ए करबला में) क़त्ल किये गये थे।"

मुसनद अहमद 2165, (जिल्द 2, पेज 93) इस हदीस को शेख़ शोएब अल-अर्नौत, शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने फ़ज़ाइले सहाबा में सहीह कहा है ।

66 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु नईम ताबई ﷺ बयान करते हैं कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से किसी ने मुहरिम (एहराम बांधे हुए शख्स) के मुताल्लिक़ पूछा, जो मक्खी को मार डाले (तो उसका कफ्फारा क्या है ?) (ये सवाल सुनकर) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ने फ़रमाया: "ये इराक़ के रहने वाले मक्खी के (मारने से) मुताल्लिक़ पूछते हैं, हालांकि इन लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ कि बेटी के लख़ते जिगर को क़त्ल कर डाला है, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया करते थे: "ये दोनों (सय्यिदना हसन ﷺ और सय्यिदना हुसैन ﷺ) दुनिया में मेरे दो फूल हैं।" **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना शहर बिन हौशब ताबई ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ौजा उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्मा ﷺ को फ़रमाते हुए सुना, जब सय्यिदना हुसैन बिन अली ﷺ की शहादत की ख़बर आई, तो सय्यिदा उम्मे सल्मा ﷺ ने अहले इराक़ पर लानत की और कहा: "उन्होंने उन

(सय्यिदना हुसैन बिन अली رضی اللہ عنہ) को मार डाला है, अल्लाह तआला उन (इराक़ियों) को ग़ारत करे, पहले उन्हें धोखा दिया और (फिर) ज़लील किया, अल्लाह तआला उन पर लानत करे, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़ुद देखा कि सय्यिदा फ़तिमा رضی اللہ عنہا आप ﷺ के पास सुबह सुबह एक हँड़िया लेकर आईं जिसमें असीदह (एक क़िस्म का हलवा) था, जो उन्होंने आप ﷺ के लिए तैयार किया था, वो एक थाली में लेकर आईं और आप ﷺ के सामने रख दिया। आप ﷺ ने पूछा: "तुम्हारा चचाज़ाद (सय्यिदना अली बिन अबितालिब رضی اللہ عنہ) कहां है?" उन्होंने अर्ज़ किया: "वो घर मे हैं" आप ﷺ ने हुक्म फ़रमाया: "जाओ उसे बुलाओ और दोनों बच्चों को भी लाना।" उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्मा رضی اللہ عنہا बयान फ़रमाती हैं कि वो (सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا) उन दोनों (सय्यिदना हसन और सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہما) को एक एक हाथ से थामे हुए लेकर आईं और पीछे सय्यिदना अली बिन अबितालिब رضی اللہ عنہ तशरीफ़ ला रहे थे। जब सब रसूलुल्लाह ﷺ के पास आ गए तो आप ﷺ ने उन दोनों को गोद में बिठाया, सय्यिदना अली बिन अबितालिब رضی اللہ عنہ आपके दाएं जानिब और सय्यिदा फ़ातमा رضی اللہ عنہا बाएं तरफ़ तशरीफ़ फ़रमा हुईं। उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्मा رضی اللہ عنہا बयान फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे नीचे से ख़ैबरी चादर खींच निकाली जिसे हम बतौर बिस्तर इस्तेमाल करते थे। वो चादर आप ﷺ ने उन सब पर औढ़ा दी और बाएं दस्ते मुबारक से चादर के दोनों किनारे पकड़े रखे और दाएं हाथ को रब عزوجل की जानिब फैरा और दुआ फ़रमाई: "ऐ अल्लाह तआला! ये मेरे अहले बैअत हैं, इन से नापाकी दूर फ़रमा और इन्हें ख़ूब पाक फ़रमा दे।" आप ﷺ ने 3 मरतबा इन्हीं अल्फ़ाज़ में दुआ फ़रमाई। सय्यिदा उम्मे सल्मा رضی اللہ عنہا बयान फ़रमाती हैं कि मैंने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ ! क्या मैं आपके अहले बैअत में से नहीं हूँ ?" आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "क्यों नहीं! तुम भी चादर में आ जाओ।" सय्यिदा उम्मे सल्मा رضی اللہ عنہا बयान फ़रमाती हैं: मैं भी चादर में दाख़िल हो गई लेकिन आप ﷺ अपने चचाज़ाद सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ , अपने नवासों رضی اللہ عنہما और अपनी बेटी सय्यिदा फ़ातमा رضی اللہ عنہا के लिए दुआ फ़रमा चुके थे।" **मौज़ुमल कबीर लिल तबरानी की रिवायत में है:** सय्यिदना अम्मार ताबई رحمہ اللہ फरमाते हैं कि सय्यिदा उम्मे सल्मा رضی اللہ عنہا ने मुझसे फ़रमाया: "मैंने खुद जिन्नात को सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ पर नौहा करते (रोते) हुए सुना है।"

सहीह बुखारी 3753, मुसनद अहमद 27085 (जिल्द 12, पेज 53) इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने फ़ज़ाइले सहाबा में सहीह कहा है।
मौज़ुमल कबीर लिल तबरानी 2793, इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने फ़ज़ाइले सहाबा में सहीह कहा है।

67 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि सय्यिदना हुसैन बिन अली علیہ السلام (नोट: सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ के नाम के साथ علیہ السلام खुद इमाम बुखारी رحمہ اللہ ने लिखा है) का सिर मुबारक एक थाल में रखकर (कूफ़ा में यज़ीद बिन मुआविया के इराक़ी गवर्नर) उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के पास लाया गया तो वो उसे (छड़ी से) हल्की ज़रब लगाने लगा और उन رضی اللہ عنہ के हुस्न के मुताल्लिक़ (गुस्ताख़ाना अन्दाज़ में) कुछ कहा। (نعوذ باللہ من ذلك) उस मौक़े पर सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "ये (सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ) रसूलुल्लाह ﷺ से (शकल व सूरत में) बहुत मुशाबहत रखते थे।" और उस वक़्त उनके बाल वस्मा (बूटी के काले रंग) से रंगे हुए थे। **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि मैं उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के पास बैठा हुआ था कि सय्यिदना हुसैन बिन अली رضی اللہ عنہ का सिर मुबारक लाया गया तो उसने छड़ी उनकी नाक पर मारी और कहा मैंने इन जैसा हुस्न रखने वाला कभी नहीं देखा, मैं (सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ) ने कहा कि सय्यिदना हुसैन बिन अली رضی اللہ عنہ तो रसूलुल्लाह ﷺ से (शक्ल व सूरत में) बहुत मुशाबेहत रखते थे।"

सहीह बुखारी 3748, जामिया त्रिमिज़ी 3778, इस हदीस को शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी , शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है।

"कुस्तुन्तुनिया" वाली बशारत "यजीद बिन मुआविया" पर चस्पाँ करना "इल्मी गलती" है

इस मोज़ूअ (विषय) पर चंद सहीह अहादीस मुलाहिज़ा फरमाएं:

I **तर्जुमा सहीह हदीस:** "मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो कैसर के शहर (कुस्तुन्तुनिया की फ़तह) के लिए जंग करेगा उन की मग़फ़िरत कर दी गई है।" [सहीह बुखारी: 2924]

II **तर्जुमा सहीह हदीस:** "अबु इमरान ताबई رحمہ اللہ का बयान है: "हम कुस्तुन्तुनिया पर हमले के लिए रोम पहुंचे और हमारे अमीर ए लश्कर "अब्दुर्रहमान बिन खालिद बिन वलीद رحمہ اللہ" थे। वहां सय्यिदना अबु अय्यूब अंसारी رضی اللہ عنہ ने हमें एक आयत की तफ़सीर समझाई फिर आप अल्लाह की राह में जिहाद में शरीक होते रहे और बिल आख़िर कुस्तुन्तुनिया में दफ़न हुए। [सुनन अबुदाऊद: 2512]

III **तर्जुमा सहीह हदीस:** "सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी رضی اللہ عنہ रोम में उस लश्कर में फौत हुए जिस में अमीर ए लश्कर "यज़ीद बिन मुआविया" था।" [सहीह बुखारी: 1186]

नोट कुस्तुन्तुनिया पर एक से ज़्यादा हमले हुए थे और सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ ख़ुद इन तमाम लश्करों में शरीक रहे। अब आप ﷺ अब्दुर्रहमान बिन खालिद बिन वलीद ﷺ वाले लश्कर में तो ज़िन्दा थे, जबकि यज़ीद वाले लश्कर में आप ﷺ (54 हिजरी में) फौत हुए, इस तहक़ीक़ से बिलकुल आसान सा नतीजा निकलाता है: "यज़ीद वाला लशकर क़तअन पहला लश्कर नहीं था, बल्कि वह तो आखिरी लश्कर था।"

यज़ीद के 3 स्याह कारनामे

❶ जलीलुल कद्र सहाबी अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ के ख़िलाफ़ मक्का मुकर्रमा पर हमला करके "बैतुल्लाह के गिलाफ़" को आग लगाकर शहीद कर दिया: [सहीह मुस्लिम: 3245]

❷ "वाक़िया हर्रा" में यज़ीदी फ़ौज ने "क़त्ले आम" करके "मदीना मुनव्वरा" की हुरमत को पामाल किया, और यूं सहीह मुस्लिम की अहादीस की रू से अल्लाह की, फ़रिश्तों की और तमाम इंसानों की "लानत" कमाई: [सहीह बुखारी: 2604, 2959, 4024 और 4906, सहीह मुस्लिम: 3339, 3319, 3323 से 3333]

नोट इमामे अहले सुन्नत सय्यिदना इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ (अलमुतवफ्फ़ा-241 हिजरी) ने अपने शागिर्द महना बिन यह्या को "यज़ीद बिन मुआविया" से मुताल्लिक़ पूछने पर फ़रमाया: "वह (यज़ीद) वही है जिसने मदीने वालो के साथ वह करतूत किये जो उस ने किए।" उसने पूछा यज़ीद ने क्या किया था? फ़रमाया: "उसने मदीने को लूटा था।" उसने पूछा क्या हम यज़ीद से हदीस बयान कर सकते हैं? फ़रमाया: "यज़ीद से हदीस मत बयान करो, और किसी के लिए जायज़ नहीं कि वह यज़ीद से एक हदीस भी बयान करे।" उस ने पूछा जब यज़ीद ने ये हरकतें की थीं तो किस ने उसका साथ दिया था? फ़रमाया: "अहले शाम ने।"

इमाम इब्ने जौज़ी की किताब " यज़ीद के हिमायती के रद्द में " पेज नं 40, इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने रिसाला अल हदीस 68 में सहीह कहा है

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** जब सय्यिदना हुसैन ﷺ को शहीद किया गया तो आप ﷺ का सिर मुबारक (यज़ीद बिन मुआविया के गवर्नर) उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद इराक़ी (कूफी नजदी) के सामने लाकर रखा गया तो वह (बदबख्त) आप ﷺ के सिर मुबारक को हाथ की छड़ी से कुरेदने लगा। ये देख कर सय्यिदना अनस बिन मालिक ﷺ ने (उस ख़बीस को तम्बीह करते हुए) फ़रमाया:"अल्लाह तआला की क़सम! (सय्यिदना) हुसैन ﷺ (अपनी सूरत के ऐतबार से) रसूलुल्लाह ﷺ के सबसे ज़्यादा मुशाबेह थे।" [सहीह बुखारी: 3748, जामेअ तिरमिज़ी: 3778]

नोट यज़ीद बिन मुआविया के दौरे मलूकियत में इस दिलसोज़ सानयह ए करबला के बाद भी यज़ीद बिन मुआविया ने अपने कूफ़ी नजदी गवर्नर उबैदुलाल्ह बिन ज़ियाद को कोई सज़ा नही दी और उसे माज़ूल भी नहीं किया, जो इस हकीकत का मुंह बोलता और नाक़ाबिले तरदीद सुबूत है कि यज़ीद इब्ने मुआविया ख़ुद भी इस जुर्म में बराबर का शरीक था, चुनांचे इसी ज़िमन में **सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अली इब्ने हुसैन इब्ने अली ताबई ﷺ अलमारूफ इमाम सज्जाद जैनुल आबेदीन (अलमुतवफ्फ़ा-95 हिजरी) का अपना बयान है: "जब मैं (अपने वालिद) सय्यिदना हुसैन इब्ने अली ﷺ की शहादत के बाद यज़ीद इब्ने मुआविया के दरबार से वापिस मदीना शरीफ आया तो सय्यिदना मसवर इब्ने मखरमा सहाबी ﷺ मेरे पास आए और कहा कि आप ﷺ के पास रसूलुल्लाह ﷺ की वो तलवार (जो रसूलुल्लाह ﷺ के बाद सय्यिदना अली ﷺ फिर सय्यिदना हसन ﷺ फिर सय्यिदना हुसैन ﷺ की शहादत के बाद आप तक पहुंची) है, वह तलवार मुझे इनायत फरमा दें क्योंकि मुझे डर है कि कोई कौम (यानी बनू उमय्या वाले) इस तलवार को आप ﷺ से छीन न लें। जब तक मेरी जान में जान है अल्लाह तआला की क़सम मैं इसकी हिफ़ाज़त करूँगा.." [सहीह बुखारी: 3110, सहीह मुस्लिम: 6309]

68 **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अमारा बिन उमैर ताबई ﷺ बयान करते हैं कि जब (मुख्तार सक़फ़ी की फ़ौज जानिब से जंग के बाद यज़ीद बिन मुआविया के इराक़ी गवर्नर) उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद और उसके साथियों के सिर काट कर लाई गई तो उन सिरों को एक क़तार में मस्जिद में (लोगों की इबरत के लिए) रख दिया गया। मैं भी वहां पहुंचा तो लोग (किसी ख़ौफ़नाक शै को देखकर) कह रहे थे: "वो आया! वो आया!" अचानक मैंने एक सांप देखा जो सिरों के दर्मियान से गुज़रता हुआ उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के नथनो में घुस गया और थोड़ी देर उस के सिर में रुका फिर निकल कर ग़ायब हो गया। कुछ देर बाद फिर शोर मचा: "वो आया! वो आया!" सय्यिदना अमारा ताबई ﷺ का बयान है कि इस तरह उस (सांप) ने दो या तीन बार ये अमल दोहराया।"

जामिया त्रिमिज़ी 3780, इस हदीस को इमाम त्रिमिज़ी और शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी ने सहीह कहा है

69 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना अबुबकर सिद्दीक़ ﷺ ने फ़रमाया: "मुहम्मद ﷺ के कुर्ब को आप ﷺ के अहले बैअत (की मुहब्बत और कुर्बत) में तलाश करो।" **जामेअ तिरमिज़ी और अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "अल्लाह तआला से मुहब्बत रखो कि वो तुम्हे नेमतें अता फ़रमाता है, और अल्लाह तआला की मुहब्बत की वजह से मुझ से मुहब्बत रखो और मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे अहले बैअत से मुहब्बत रखो।"

सहीह बुखारी 3751, जामिया त्रिमिज़ी 3789 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने सहीह कहा है अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4716, इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने सहीह कहा है

70 **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए इस हाल में आप ﷺ ने एक कंधे पर सय्यिदना हसन ﷺ और दूसरे पर सय्यिदना हुसैन ﷺ को सवार कर रखा था, और बारी बारी दोनों को चूम रहे थे, इसी हालत में आप ﷺ हमारे पास आ पहुंचे तो एक शख़्स ने अर्ज़ किया: "ऐ रसूलुल्लाह ﷺ! क्या आप ﷺ इन दोनों से मुहब्बत रखते हैं ?" आप ﷺ ने फ़रमाया: "हां ! जो इन दोनों से मुहब्बत रखे, तो गोया कि उसने मुझ से मुहब्बत रखी, और जिसने इन दोनों से (सय्यिदना हसन ﷺ और सय्यिदना हुसैन ﷺ) बुग़्ज़ रखा तो गोया उसने मुझ से बुग़्ज़ रखा।" (نعوذ بالله من ذلك)

अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4716, इस हदीस को इमाम हाकिम, इमाम ज़हबी और शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने क़िताब फ़ज़ाइल ए सहाबा में सहीह कहा है

71 **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, हम अहले बैअत से जो कोई भी बुग़्ज़ रखेगा, अल्लाह तआला ज़रूर उसे आग में दाख़िल करेगा।" **अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम की एक और हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ अब्दुलमुत्तलिब की औलाद ! मैंने तुम्हारे लिए अल्लाह तआला से 3 दुआऐं मांगी हैं कि तुम्हें साबित क़दम रखे, और तुममें से भटकते हुए को हिदायत बख़्शे, और तुम में से जाहिलों को इल्म अता फ़रमाये और मैंने अल्लाह तआला से ये दुआ भी मांगी है कि वो तुम्हें सख़ावत वाला बहादुर और रहमदिल बनाए। (और याद रखो) अगर कोई शख़्स हजरे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम के दर्मियान जमकर नमाज़ पढ़ता और रोज़े रखता रहे, मगर (इसके साथ वो शख़्स) मुहम्मद ﷺ के अहले बैअत से बुग़्ज़ रखने की हालत में अल्लाह तआला से (मरने के बाद) मुलाक़ात करे तो ज़रूर आग में जाएगा।"

अल-मुस्तद्रक-लिल हाकिम 4717, 4712, सिलसिला-तुस-सहीह 2488 इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी, शेख़ नासीरुद्दीन-अल-अल्बानी और शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने क़िताब फ़ज़ाइल ए सहाबा में सहीह कहा है

72 **जामिया त्रिमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदा आएशा ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया। " 6- किस्म के लोगों पर अल्लाह तआला और उसके हर नबी ﷺ ने लआनत की है, (पहला) अल्लाह तआला की किताब में इज़ाफ़ा करने वाला, और (दूसरा) अल्लाह ताआला की तक़दीर को झुठलाने वाला, और (तीसरा) ताक़त के बलबूते पर मुसल्लत होने वाला ताकि वह किसी ऐसे शख़्स को मुआज़्ज़िज़ बनाए जिसको अल्लाह तआला ने ज़लील किया हो, और किसी ऐसे शख़्स को ज़लील करे जिसको अल्लाह तआला ने मुअज़्ज़ज़ बनाया हो, और (चौथा) अल्लाह तआला के हरम की बेहुरमती करने वाला, और (पांचवा) मेरे अहले बैअत की बेहुरमती करने वाला, और (छठा) मेरी सुन्नत को (हक़ीर समझ कर) तर्क कर देने वाला।" **मौज़ुमल कबीर लिल तबरानी की रिवायत है:** (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम के बुनियादी रावी) सय्यिदना इब्राहीम नख़ई ताबई ﷺ बयान करते थे: "अगर (बिल्फ़र्ज़) मैं क़ातिलाने सय्यिदना हुसैन ﷺ में शामिल होता, और (बिलफ़र्ज़) मेरी बख़्शिश भी हो जाती, और (बिलफ़र्ज़) मुझे जन्नत में भी दाख़िला नसीब हो जाता, तो फिर भी मुझे इस बात से शर्म आती कि मैं रसुलुल्लाह ﷺ के पास से गुज़रूं और आपकी नज़र मुझ पर पड़े (कि सय्यिदना हुसैन ﷺ के क़ातिलों में शामिल था)।"

जामिया त्रिमिज़ी 2154, मौज़ुमल कबीर लिल तबरानी 2760 इस हदीस को शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई ने मिश्कात-उल-मसाबिह क़िताब में बाब फ़ज़ाइल ए सहाबा में सहीह कहा है

xxxxxxxxxxxxx

नोट अहले सुन्नत के सहीह मनहज को जानने के लिए हमारी वेबसाइट **www.AhleSunnatPak.com** पर मौजूद इसी मौज़ूअ से मुताल्लिक़ 17 वीडियो लेक्चर ज़रूर देखें:

1. मसअला नम्बर 48: फ़िक्र ए हुसैन तहरीक ए ख़िलाफ़त की रूह है
2. मसअला नम्बर 55-A: इल्म लद्दुन्नी से मुताल्लिक़ राफ़िज़यों और सूफ़िया के अक़ाइद का तहक़ीक़ी जाइज़ा
3. मसअला नम्बर 55-B: वसी ए रसूल ﷺ कौन है? और हदीस ए क़िरतास का तहक़ीक़ी जाइज़ा
4. मसअला नम्बर 61: हुसैनियत और यज़ीदियत का तहक़ीक़ी जाइज़ा
5. मसअला नम्बर 65: सय्यिदना उमर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ के सहीह फ़ज़ाइल
6. मसअला नम्बर 66-A: मुहर्रमुलहराम और वाक़िया करबला से मुताल्लिक़ 5-इल्मी निकात
7. मसअला नम्बर 66-B: सय्यिदना हुसैन बिन अली رضی اللہ عنہ के सहीह फ़ज़ाइल
8. मसअला नम्बर 94: ग़ज़वा-ए-तबूक में मोमिनीन सहाबा किराम رضی اللہ عنہم और मुनाफ़िक़ीन के किरदार का फ़र्क़!
9. मसअला नम्बर 96: अज़मत ए सहाबा ए किराम رضی اللہ عنہم और सुन्नी-शिया के इख़्तिलाफ़ का तहक़ीक़ी जाइज़ा
10. मसअला नम्बर 101: ख़िलाफ़तोमलूकियत, और फ़िक्र ए सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ हक़ परस्ती की अलामत है !
11. मसअला नम्बर 102: फ़ज़ाइल सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ और यज़ीद के करतूतों के दिफ़ा का तहक़ीक़ी जाइज़ा
12. मसअला नम्बर 116-A: जंगे सिफ़्फ़ीन और मुशाजरात ए सहाबा رضی اللہ عنہم पर डाक्टर इसरार رحمہ اللہ के बयान का तहक़ीक़ी जाइज़ा
13. मसअला नम्बर 116-b: सय्यिदना उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ की शहादत की हक़ीक़ी वजह क्या थी?
14. मसअला नम्बर 116-c: क्या हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ कातिबे वही थे? और हिफ़ाज़त ए कुरआन का मोजज़ा
15. मसअला नम्बर 124-a, 124-b, 124-c और 124-d: इंजीनियर मुहम्मद अली मिर्ज़ा पर बाज़ फ़िर्क़ापरस्त उल्मा की जानिब से लगाए गए 10 झूठे इल्ज़ामात के इल्मी जवाबात!
16. मसअला नम्बर 127-बी: इमाम मेहदी علیہ السلام की पूरी दुनिया पे ख़िलाफ़त और सुन्नी व शिया का इजमा
17. मसअला नम्बर 157-a और 157-b: सुन्नी और शिया इख़्तिलाफ़ात पे 100 सवालात और उनके जवाबात

आख़री नसीहत इमाम अहले सुन्नत सय्यिदना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई رحمہ اللہ (अलमुतवफ़्फ़ा 204 हिजरी) पर जब नासबी और यज़ीदी उल्मा ने आले मुहम्मद ﷺ से मुहब्बत के मुक़द्दस जुर्म में राफ़ज़ी (यानी शिया) होने का झूठा इल्ज़ाम लगाया तो उन्होंने वो शोअरा आफ़ाक़ (क्या ख़ूब) शेर कहा जो उनके अपने दीवान में है: إِنْ كَانَ رَفْضًا حُبُّ آلِ مُحَمَّدٍ ..... فَلْيَشْهَدِ الثَّقَلَانِ أَنِّي رَافِضِيٌّ

तर्जुमा: अगर आले मुहम्मद ﷺ से मुहब्बत रखने का नाम (बिल फ़र्ज़) राफ़िज़यत है, तो तमाम जिन्न और इंसान इस बात पर गवाह हो जाएं कि मैं राफ़ज़ी हूँ।" [दीवान ए शाफ़ई] [ديوانُ الشافعي]